अजायब बानी

परमात्मा के रंग

गुरु नानकदेव जी व गुरु अंगददेव जी
की बानी आसा जी दी वार
के सतसंगों का संग्रह

सन्त बानी आश्रम

16 पी.एस, रायसिंहनगर – 335 039
जिला–श्रीगंगानगर (राजस्थान)

सितम्बर - 2005

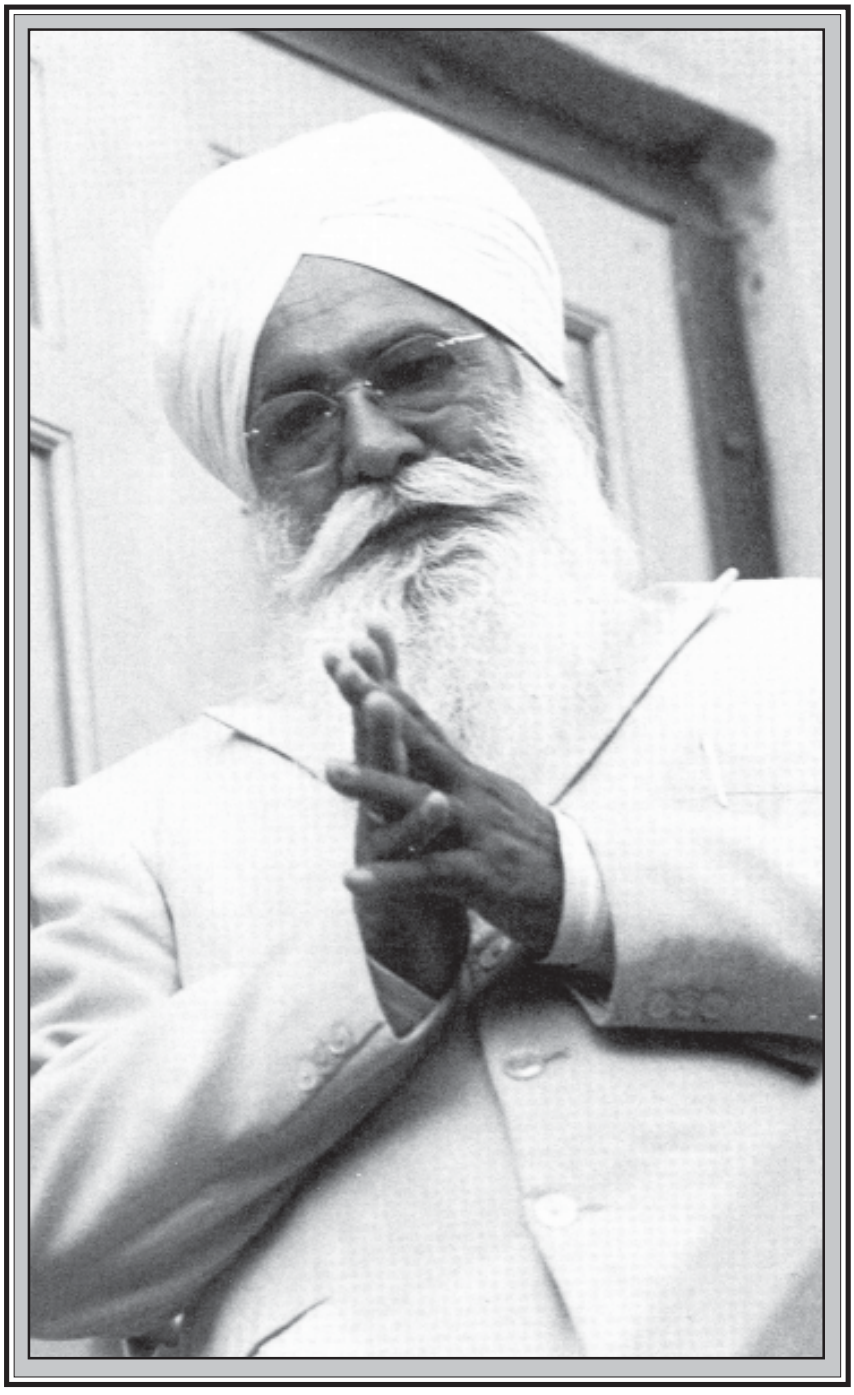

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक

प्रेम प्रकाश छाबड़ा

ने 1027-अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर- 335 001 (राजस्थान)
से प्रकाशित किया। फोन - 0154-246 4601, 94144-80303

सह सम्पादिका

नंदिनी

विशेष सलाहकार

गुरमेल सिंह नौरिया

सहयोग

राजेश व जयप्रकाश तपाड़िया

मुख्य पृष्ठ डिजाइन

प्रेम सिनकर

आर. एन. आई – राजहिन /2003/9899
डाक पंजीयन संख्या – आर. जे./डब्ल्यू. आर./27/105/2003–2005

दो शब्द

*हमारे प्यारे बाबाजी-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज ने सन् 1986-87 में अपना बहुमूल्य समय निकालकर 16 पी.एस. आश्रम में गुरु नानकदेव जी व गुरु अंगददेव जी की बानी **आसा जी दी वार** पर सतसंग दिए थे।*

*इन बहुमूल्य सतसंगों को इकट्ठा करके यह पुस्तक - **परमात्मा के रंग** प्रकाशित की गई है। सन्त-महात्मा, परमात्मा का संदेश देने के लिए ही इस संसार में आते हैं। सभी पूर्ण सन्त चाहते हैं कि उनके बच्चे इस भवसागर को पार करके अपने घर सच्चखंड अपने पिता की गोद में पहुँच जाएं।*

*यह पुस्तक **परमात्मा के रंग** हमारे प्यारे बाबा जी के 80 वें शुभ जन्मदिवस-11 सितम्बर, 2005 पर संगत को भेंट की जा रही है।*

यह पुस्तक बाबा जी की दया-मेहर से प्रकाशित हो सकी है, संगत से अनुरोध है कि गुरु प्यार में तैयार की गई इस पुस्तक की त्रुटियों की तरफ ध्यान न देते हुए गुरु वचनों से लाभ उठाएं।

धन्यवाद

(बाबा जी का जन्मदिन) *प्रेम प्रकाश छाबड़ा*
11 सितम्बर 2005 *सम्पादक*

अध्याय	*सतसंग का नाम*	*पृष्ठ संख्या*
1	मालिक का भाणां.....	7
2	किसका नाम रहता है?.....	17
3	आओ! करो और देखो!.....	27
4	डर.....	37
5	धर्म-कर्म.....	49
6	आत्मा की खुराक.....	59
7	अहंकार	67
8	परवरिश.....	77
9	हम कैसे जागें.....	87
10	सच और झूठ.....	97
11	नाम का रंग.....	109
12	सुख और दुःख	119
13	अपनी इज्जत.....	129
14	जनेऊ.....	141
15	भ्रम.....	151
16	सूतक और पातक.....	163
17	सोहबत-संगत.....	175
18	धरती पर स्वर्ग.....	185
19	सच्चे आशिक.....	197
20	गुरुमत की समझ	203
21	परमात्मा के रंग.....	215

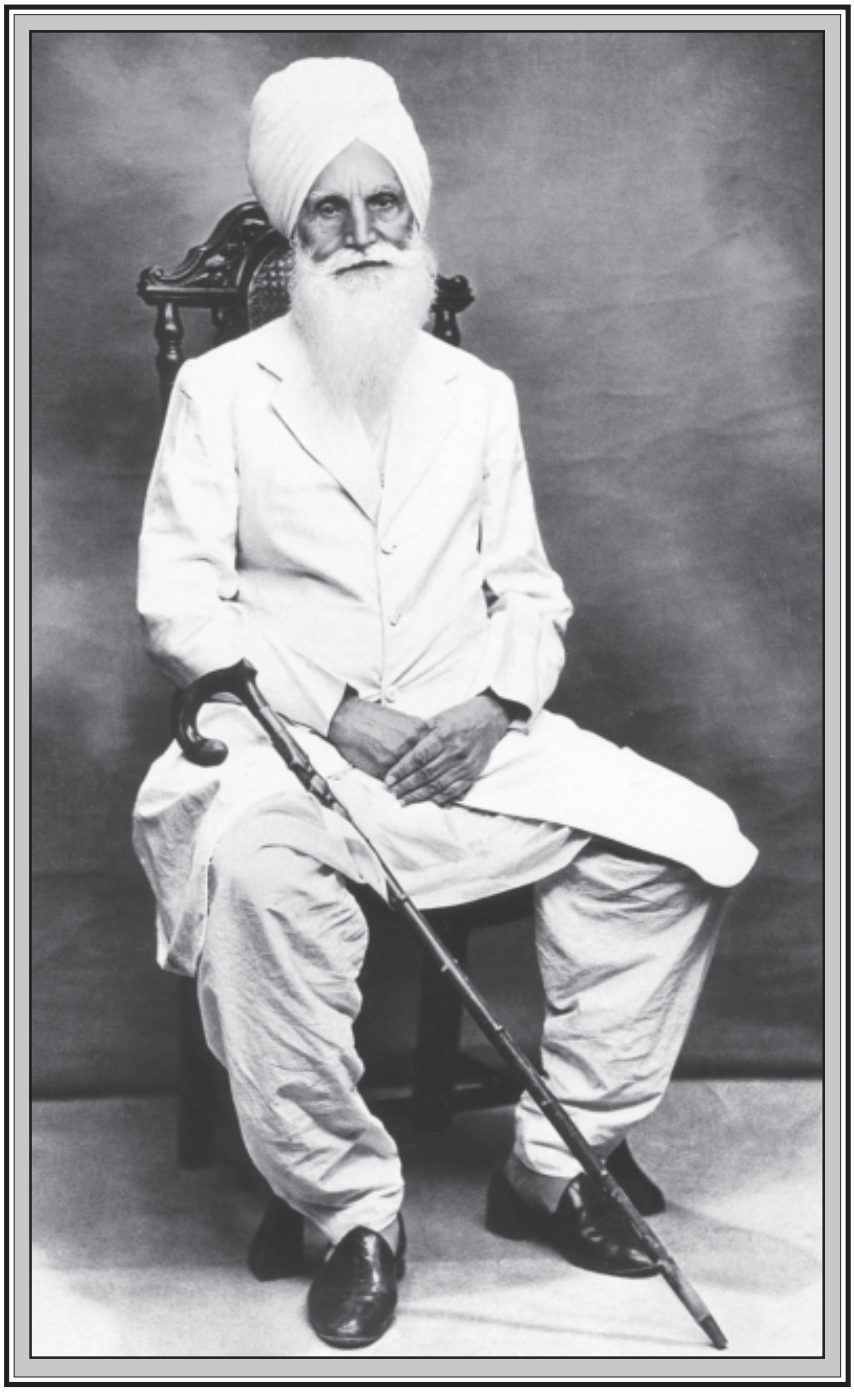

एक

मालिक का भाणां

इससे पहले मैं गुरुग्रन्थ साहब की बानी **राग गऊड़ी** और **सुखमनी साहब**[1] पर सतसंग कर चुका हूँ। सन्त-सतगुरुओं ने हम जीवों के भले के लिए जो लिखा है, उसे सन्तमत के उसूलों के मुताबिक ही बयान किया है, जिससे प्रेमी फायदा उठा रहे हैं। सन्तों की बानी की एक-एक तुक इज्ज़त के काबिल होती है।

मैंने रसल पर्किन्स से वायदा किया था कि मैं गुरुग्रन्थ साहब की बानी **आसा जी दी वार**[2] पर भी सतसंग करूँगा। आप सब जानते हैं कि पिछले कुछ महीने मेरी सेहत ठीक नहीं थी, इसलिए मैं यह सेवा नहीं कर सका। मुझे खुशी है कि मैं आज अपना वायदा पूरा करने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं यह उद्यम अपने गुरुदेव की दया से शुरू कर रहा हूँ। आशा करता हूँ मेरे गुरुदेव दया करेंगे, हिम्मत बख्शेंगे और अपने कार्य को खुद ही कर लेंगे।

हमें उस परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए जिसने हमें यह अमोलक रोगहीन देह और बहुत से सुखों के साधन बख्शे हैं। उसने हमें इस संसार में भेजकर कहा, ''मैं आपको अपने से बिछोड़ रहा हूँ, मिलने का मौका भी दूँगा। अगर आप हिम्मत करके मुझसे मिल सको तो मैं आपको इनाम के रूप में आपका वही घर फिर वापिस दूँगा।'' सन्त-महात्मा हमें परमात्मा से मिलने का साधन और तरीका बताते हैं, वे हमें हाथ पर हाथ रखकर बैठना नहीं सिखाते। अगर कोई बीमारी है तो उसका उपाय भी है।

आप जानते हैं कि सरकार ने भी यहाँ के प्रबन्ध के लिए कुछ कानून बनाए हैं। उन कानूनों को छपवा दिया, जिनमें

लिखा है कि चोर को, कत्ल करने वाले को इस दफा के मुताबिक यह सजा मिलेगी। कोई भी उन कानूनों की जानकारी ले सकता है। अगर कोई चोरी या कत्ल करके अदालत में जाकर यह कहे कि मेरे साथ बेइन्साफी हुई है। मैं नहीं जानता था कि आपके ऐसे कानून हैं। वे कहते हैं, ''कानूनों को समझना तेरा फर्ज था।''

जब निचली अदालत सजा दे देती है तो वह ऊपर की अदालत में जाकर रहम की अपील करता है। कई बार रहम की अपील मंजूर हो जाती है; वह छूट जाता है। लेकिन हर एक के नसीब में ऐसा नहीं कि रहम की अपील मंजूर हो जाए।

इसी तरह परमात्मा ने ज्ञान करवाने के लिए अपने प्यारे सन्त-महात्मा इस संसार में भेजे। उन्होंने आत्मा पर लागू होने वाले कानूनों को छुपाकर नहीं रखा। अपनी लेखनियों में खोलकर समझाया कि हर व्यक्ति का हिसाब-किताब रखने के लिए एक खास देवता धर्मराज मुकर्रर किया गया है। वह आपके किए हुए कर्मों को अच्छी तरह जानता है।

अगर कोई यह कहे कि मुझे इस बात की जानकारी नहीं थी तो धर्मराज उससे पूछता है, ''क्या तूने कभी किसी महात्मा की बानी नहीं पढ़ी थी कि किस कर्म की क्या सजा मिलती है?'' इसी तरह सन्त-महात्माओं के ग्रन्थ भी कानून हैं। जिन पर चलकर हम परमात्मा से मिल सकते हैं, वापिस अपने घर पहुँच सकते हैं।

राजा सारंग की दो रानियाँ थीं। पहली रानी से अस का जन्म हुआ। अस सन्तों की सेवा करने वाला, अच्छी कमाई करने वाला एक सुंदर इन्सान था। दूसरी रानी से शार्दूल और खान सुल्तान पैदा हुए।

अस बहुत सुंदर था। उसकी सौतेली माता ने उसके सुंदर रूप पर मोहित होकर अपने मन की नीच भावना उसके आगे

जाहिर की। लेकिन अस व्याभिचार के लिए नहीं माना।

रानी ने बदले की भावना दिल में रखकर राजा को बहका दिया कि तेरे लाडले ने मेरा सत भंग किया है। राजा हुकूमत के नशे और औरत के प्यार मे बंधा हुआ था। राजा ने कोई जांच पड़ताल नहीं की। फौरन वजीर को बुलवाकर हुक्म दे दिया, ''अस को बाहर ले जाकर जल्लादों से कत्ल करवा दो और इसका कोई एक अंग काटकर ले आओ ताकि मुझे तसल्ली हो जाए कि अस का कत्ल कर दिया गया है।''

वजीर अस को जंगल में ले गया। वजीर ने सोचा, यह सन्तों की बहुत सेवा करता है। इसका कत्ल करना ठीक नहीं। उन्होंने अस का एक हाथ काटकर उसे कुएं में फेंक दिया और कटा हुआ हाथ लाकर राजा के आगे रखकर कहा, ''हमने अस का कत्ल करके उसे कुएं में फेंक दिया है।''

बंजारे, जो चलते-फिरते व्यापार करते हैं, उन्होंने पानी के लिए बाल्टी कुएं में डाली। अस ने कटे हुए हाथ को उस बाल्टी में फँसा दिया। बंजारो ने देखा कि कुएं में कोई आदमी गिरा हुआ है, उन्हें दया आई और उन्होंने अस को बाहर निकाल लिया। उन बंजारों ने अस को एक धोबी के पास बेच दिया। अस हर रोज बैल पर कपड़े लादकर धोबीघाट ले जाता और वहाँ से वापिस धोबी के घर ले आता। परमात्मा का भजन भी करता रहता।

अस जिस नगर में रह रहा था, वहाँ का राजा गुजर गया। उस राजा की कोई औलाद नहीं थी जिसे गद्दी का वारिस बनाया जाता। मंत्री मंडल ने एक गुप्त फैसला किया कि जो आदमी सुबह सबसे पहले नगर का दरवाजा खोलेगा उसे राजगद्दी पर बिठा दिया जाएगा। अस हर रोज सुबह बैल पर कपड़े लादकर धोबीघाट ले जाया करता था; जब उसने नगर का दरवाजा बंद देखा तो उसने दरवाजा खोल दिया।

संतरी अस को पकड़कर मंत्री मंडल के पास ले आए कि इसने सबसे पहले नगर का दरवाजा खोला है। मंत्री मंडल के फैसले के मुताबिक अस को वहाँ का राजा बना दिया गया। वह राजा का बेटा था, धर्मात्मा आदमी था। उसने प्रजा का बहुत ख्याल रखा। अच्छा राज्य किया। उसने प्रजा के फायदे के लिए बहुत अन्न-भंडार इकट्ठा कर लिया।

राजा सारंग के राज्य में बहुत भयानक अकाल पड़ा। राजा सारंग और उसके लड़के ऐशपरस्त थे। ऐशपरस्तों को प्रजा की चिन्ता नहीं होती। राजा सारंग ने अपने वजीरों से कहा, ''कहीं से भी अन्न ले आओ।'' वजीर खोज करते करते अस के राज्य में पहुँचे। अस अब असराज बन चुका था, लोग उसे टुन्डा राजा भी कहते थे। अस ने वजीर को पहचान लिया, उसका आदर किया और उसे पैसों के बिना बहुत अन्न दिया।

वजीर ने आकर राजा सारंग को सारी कहानी बताई कि आपका बेटा असराज उस राज्य का मालिक है। वह बहुत अच्छा धर्मात्मा इन्सान है। उसने पैसे लिए बिना बहुत सा अन्न दिया है। जब राजा सारंग ने अपने बेटे की यह गाथा सुनी तो उसने असराज को न्यौता दिया कि वह उससे आकर जरूर मिले। वह अपना राज्य उसे देना चाहता है। असराज फौज़ें लेकर शान-शौकत से अपने पिता से मिलने आया। यह जानकर उसके सौतेले भाई शार्दूल और खान सुल्तान के दिल में आग भड़की और उन्होंने असराज के साथ जंग की। वहाँ भी टुन्डे असराज की जीत हुई। असराज ने वहाँ भी धर्मी-राज्य किया।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने धर्मी असराज की कहानी को बहुत प्यार से गुरुग्रन्थ साहब में अंकित किया है। इस कहानी का तात्पर्य यह है कि हमें हमेशा पवित्र जीवन बिताना चाहिए। सुख-दुःख में परमात्मा को ध्याना चाहिए। पवित्र जीवन और गुरु पर भरोसा रखने वाले इन्सान की सदा ही जय होती

है। परमात्मा ने गुरु को इतनी शक्तियाँ दी हैं जो बयान नहीं की जा सकती।

गुरु नानकदेव जी जीवों को सतनाम का उपदेश देते हुए रावी नदी के किनारे आकर बैठ गए। बाद में वहाँ करतारपुर बेदियाँ गांव बसा। वहाँ का एक दुकानदार रोज सुबह तीन बजे नदी पार करके गुरु नानक जी के दर्शन करने आता था। वह गुरु नानक जी के पवित्र दर्शन करके अपनी आत्मा की मैल दूर करता। नदी में स्नान करके अभ्यास में बैठ जाता।

एक बार ऐसी मौज हुई उस दुकानदार ने जब नदी में डुबकी लगाई, वह मगरमच्छ के मुँह में चला गया। एक मछेरे ने अपनी किस्मत आज़माने के लिए नदी में जाल फेंका। उसके जाल में छोटी-छोटी मछलियों के साथ एक मगरमच्छ भी फँस गया। मछेरा बहुत खुश हुआ कि आज मेरी सोई हुई किस्मत जागी है मुझे बहुत पैसे मिलेंगे।

घर जाकर मछेरे ने मगरमच्छ का पेट काटा तो उसके पेट में से एक बेहोश आदमी निकला जिस पर खरोंच का एक भी निशान नहीं था। जब मछेरे ने उस आदमी को स्नान करवाया तो उसे होश आ गया, लेकिन वह अपना पिछला जन्म भूल चुका था। मछेरे का कोई लड़का नहीं था। वह उसे पाकर बहुत खुश हुआ कि परमात्मा ने मुझ पर बहुत भारी दया की है। मुझे बिना किसी मेहनत-मुशक्कत के नौजवान बेटा मिल गया है। मछेरे के पास बहुत धन था, उसने उस नौजवान की शादी अच्छे घराने में कर दी। उसके घर दो लड़के और दो लड़कियाँ पैदा हुईं। पहली शादी से भी उस नौजवान के दो लड़के और दो लड़कियाँ थीं।

उस नौजवान की पहली बीवी और बच्चों ने उसकी बहुत खोज की। जब वह न मिला तो थाने में भी रिपोर्ट करवाई। कोई नतीजा न निकलने पर वे **मालिक का भाणां** समझकर चुप हो

गए। एक बार वहाँ मेला लगा। वह नौजवान अपनी बीवी और बच्चों के साथ उस मेले में गया। वहाँ उसकी पहली बीवी ने अपने पति को पहचान लिया और भागकर उसकी बाजू पकड़कर बोली, ''प्यारे पति जी! आप इतने दिन कहाँ रहे?'' नई पत्नी पहले वाली पत्नी पर शेर की तरह झपटी और कहने लगी, ''तू मेरे पति पर कब्जा करने वाली कौन सी सौतन है?'' वे दोनों ही अपनी-अपनी जगह सच्ची थीं।

उन्होंने नगर के अफसर के पास जाकर मुकदमा दर्ज किया, वहाँ भी फैसला नहीं हो सका। अदालत में गए कोई भी अफसर इस गाँठ को नहीं खोल सका। आखिर किसी ने सलाह दी कि आप लोग गुरु नानकदेव जी के पास जाओ। वे रावी नदी के किनारे बैठे हैं। वे ही इसका हल निकाल सकते हैं।

दोनों औरतों ने गुरु नानकदेव जी के पास जाकर अपने दुःखी दिल की हालत सुनाई। गुरु नानक जी ने मुस्कुराकर कहा, ''बेटी! तुम दोनों अपनी-अपनी जगह पर सही हो। हम परमात्मा से इज़ाज़त लेते हैं। अगर उसकी आज्ञा हुई तो तुम्हारा फैसला हो जाएगा।'' आपने कहा, ''तुम दोनों अपने पति के दायें और बायें खड़ी होकर उसका हाथ पकड़ लो। परमात्मा अकाल पुरुष पर भरोसा रखकर अपने पति को अपनी-अपनी तरफ खींचो।'' जब दोनों ने उस नौजवान को अपनी-अपनी तरफ खींचा तो एक के दो आदमी बन गए। दोनों औरतें खुश होकर चली गईं। जो फैसला दुनिया की कोई भी अदालत नहीं कर सकी, सन्तों ने अपनी दया-दृष्टि से उसका फैसला कर दिया।

सन्तमत का इतिहास ऐसे वाकयों से भरा पड़ा है। परमात्मा सन्तों के अंदर अपनी शक्ति रखकर काम करता है। वह पुरुष को नारी और नारी को पुरुष कर सकता है। वह जल की जगह थल और थल की जगह जल कर सकता है। वह बड़ा बेपरवाह

है। मारने वाले से रक्षा करने वाला बड़ा है। जब इब्राहिम को आग पर चलाया गया तो अंगारे फूल बन गए। जब भक्त प्रह्लाद को उसकी जादूगरनी बुआ आग में लेकर बैठ गई तब भी उस करण-कारण परमात्मा गुरुदेव ने उसकी रक्षा की। वह रक्षा करते समय देर नहीं लगाता। लेकिन सवाल अपनी श्रद्धा, प्यार और भरोसे का है। कबीर साहब कहते हैं:

जाको राखे साँइयां, मार सके ना कोए।
बाल ना बाँका कर सके, जे जग बैरी होए॥

'आसा जी दी वार' में ज्यादातर बानी गुरु नानकदेव जी और कुछ बानी गुरु अंगददेव जी की भी है। सभी सन्तों ने अपनी लेखनियों में तीन मुख्य बातें लिखी हैं। गुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता। 'नाम' के बिना मुक्ति नहीं। सतसंग के बिना हम अपनी गलतियाँ नहीं निकाल सकते।

बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार॥
जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार॥

सूफी सन्त शेख फरीद अच्छी कमाई वाले सन्त हुए हैं। उनकी बानी भी गुरु ग्रन्थ साहब में दर्ज है। उनके पौत्र का नाम शेख बरम था जो बाद में उनकी गद्दी का वारिस बना। शेख बरम ने गुरु नानक जी से बहुत से प्रश्न किए। उनके उत्तर में गुरु नानक जी बताते हैं कि गुरु किस ताकत को कहते हैं। गुरु जीवों के लिए क्या करता है? जिसने मिश्री खाई हो वही मिश्री का स्वाद बता सकता है। जिसने गुरु से कुछ प्राप्त किया हो वही गुरु के मुत्तलिक बता सकता है।

गुरु नानकदेव जी शेख बरम से कहते हैं, ''मैं सांस-सांस के साथ अपने गुरु पर बलिहार जाता हूँ। उसने मेरी राक्षस बुद्धि को देवता बुद्धि बना दिया। मैं भूला हुआ था। उसने मुझे परमात्मा के साथ जोड़ दिया। मेरी जिंदगी पलट कर रख दी।''

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार॥

आप कहते हैं, ''देख भई शेख बरम! इस संसार मंडल में एक सूरज और एक चन्द्रमा है जो सब जगह रोशनी करते हैं। सच्चाई यह है कि चाहे लाखों सूरज और चन्द्रमा चढ़ जाएँ! लेकिन अंदर के अज्ञान का अंधेरा गुरु के बिना दूर हो ही नहीं सकता।'' बेशक वह परमात्मा हमारे अंदर है लेकिन हम उससे नहीं मिल सकते। यह काम वही महात्मा कर सकता है जो परमात्मा की तरफ से इस संसार में आया है, परमात्मा के साथ जुड़ा हुआ है।

नानक गुरु न चेतनी मनि आपणै सुचेत॥
छुटे तिल बुआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत॥
खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह॥
फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह॥

आप कहते हैं कि जो लोग पूरे गुरु से नाम प्राप्त नहीं करते, सोचते हैं कि गुरु की क्या जरूरत है? वे बुवाड़ तिल के उस बूटे की तरह हैं, जिसमें फूल तो लगते हैं लेकिन अंदर बीज नहीं होता। जमींदार इसे खेत में ही छोड़ जाते हैं कि इसे घर ले जाने का कोई फायदा नहीं। इसे जानवर तक भी नहीं खाते।

इसी तरह मनमुखों के बेटे-बेटियाँ भी होते हैं। वे तंदुरुस्ती का मजा भी मनाते हैं। लेकिन परमात्मा की दरगाह में उनकी कद्र बुवाड़ तिल के उस बूटे की तरह ही है। इस जिंदगी के बाद परमात्मा उन्हें अपने घर में दाखिल नहीं होने देता।

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ॥

आप कहते हैं कि इस संसार की रचना परमात्मा ने की है। उसने ही पशु, पक्षी और इन्सान की सब योनियाँ बनाई हैं। वह परमात्मा इस संसार को पैदा करके खुद ही देख रहा है कि यह संसार किस तरह चल रहा है, कौन क्या कर रहा है?

दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ॥
तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ॥

आप कहते हैं, ''तू खुद ही देह बनाकर जीव को सजाता है। तू ही उस देह में जीवन डालता है। उस ताकत के जरिए ही जीव दौड़े फिरते हैं। सब कुछ तू खुद ही कर रहा है।''

करि आसणु डिठो चाउ॥ करि आसणु डिठो चाउ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि जिस शक्ति ने इस संसार को पैदा किया है, वह अकाल है। वह काल के दायरे में नहीं आता। इस संसार की रचना रचकर इसका इंतजाम भी वह खुद ही कर रहा है। जो जैसा कर्म करता है वह उसे वैसा ही फल देता है। हमें यह समझ गुरुओं की कृपा से ही आ सकती है।

यह फैसला भी उसी परमात्मा का होता है कि किसे गुरु से मिलवाना है, किसे नाम देना है, किससे इस जन्म में 'नाम' की कमाई करवानी है। जब हम 'नाम' की कमाई करके अंदर जाते हैं तब पता लगता है कि उस परमात्मा की ताकत हर जगह काम कर रही है; वह परमात्मा कण-कण में व्यापक है।

❁❁❁

दो

किसका नाम रहता है ?

एक समय था, जब संसार में कोई पैदाइश नहीं थी। पशु, पक्षी, इन्सान, हैवान, पहाड़, कुछ भी नहीं था। उस परमात्मा की मौज हुई कि 'मैं एक से अनेक हो जाऊँ।' उसने दरिया, पहाड़, खंड, ब्रह्मांड सबकी रचना कर दी। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

एका कवाओ तिसते होवे लख दरियाओ।

सिर्फ इतना कहने से ही सारी रचना पैदा हो गई। वह देवताओं में देवता बनकर आया। अपनी रोशनी देने के लिए इन्सानों में इन्सान बनकर आया क्योंकि इन्सान का अध्यापक इन्सान ही हो सकता है। अगर वह देवता या फरिश्ता बनकर आता तो हम उसे देख नहीं सकते थे। अगर पशु की योनि में आता तो हम उसकी भाषा नहीं समझ सकते थे। इसलिए उसने वही शक्ल इख्तियार की, जिसमें हम उसे आसानी से समझ सकें।

परमात्मा ने अपनी रचना का ज्ञान देने के लिए कामिल इन्सान को संसार में भेजा। वह मालिक का प्यारा परमात्मा रूप होता है, उसने आत्मा और परमात्मा की खोज करके अपने आपको परमात्मा के हवाले किया होता है। वह अपनी आँखों देखा तजुर्बा ही बयान करता है। अभ्यासी ही आपसे अभ्यास करवा सकता है। पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। जिसने खुद परमात्मा को देखा है, वह आपको भी परमात्मा दिखा सकता है। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।
अंधे एक ना लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूँक॥

मैंने पहले भी यह कहानी कई बार सुनाई है कि एक राजा

जंगल में शिकार करने गया। रास्ता भूल गया। उसे प्यास लगी कि अगर पानी नहीं मिला तो प्राण निकल जाएँगे। वहाँ एक गरीब लक्कड़हारा लकड़ी काट रहा था, वह लकड़ी बेचकर अपना गुजारा करता था। उस लक्कड़हारे ने राजा को पानी पिलाया। राजा के प्राण बच गए। राजा उससे खुश हुआ। राजा ने उससे कहा, ''अगर तुझे कभी कोई जरूरत हो तो मेरे पास आना।''

थोड़े दिनों बाद वह गरीब लक्कड़हारा राजा के पास गया और उसने राजा के सामने अपनी गरीबी रखी। राजा ने सोचा! इसने मेरे कीमती प्राण बचाए हैं, मैं इसे कोई कीमती वस्तु दूँ। राजा ने उसे शहर के नज़दीक एक चन्दन का बाग दे दिया, ताकि वह कीमती लकड़ी को बेचकर अच्छी जिंदगी गुजार सके। लक्कड़हारा चन्दन का बाग पाकर खुश नहीं हुआ क्योंकि वह तो यह सोचकर आया था कि राजा धन इत्यादि देगा। लक्कड़हारा चन्दन की लकड़ी के कोयले बना बनाकर बेचता रहा।

एक बार राजा उस तरफ से निकल रहा था। उसे ख्याल आया कि जिस लक्कड़हारे ने मेरे प्राण बचाए थे अब तो वह बहुत धनी हो गया होगा, उससे मिलते चलें। राजा ने देखा, उस लक्कड़हारे के हाथ में उसी तरह कुल्हाड़ी थी और उसने फटे हुए कपड़े पहने हुए थे।

राजा बहुत पछताया, उसने लक्कड़हारे से कहा, ''सज्जना! मैंने तुझे बहुत कीमती वस्तु दी थी, क्या उसमें से कुछ बची है?'' उस लक्कड़हारे के पास चन्दन की एक छड़ी बची हुई थी। जब राजा ने उसे उस बची हुई छड़ी का मूल्य कई सैकड़ों में दिया तो वह लक्कड़हारा बहुत पछताया कि अगर मुझे पता होता कि यह लकड़ी इतनी कीमती है तो मैं इसे सोच-समझकर इस्तेमाल करता।

महात्मा हमें बताते हैं कि यह दुनिया एक जंगल है; राजा वह परमात्मा है। परमात्मा जब हमारे शुभ कर्मों पर दयाल

होता है तब हमें इन्सानी देह-चन्दन का बाग इनाम में देता है। हमें इस देह की कद्र नहीं। हम इसे विषय-विकारों में इस तरह खत्म कर देते हैं जिस तरह लक्कड़हारे ने चन्दन की लकड़ी को जलाकर कोयले बना लिए थे। जब इन्सानी जामा हाथ से निकल जाता है तब हम बहुत पछताते हैं कि हमें इस जामे में 'नाम' जपना था।

अब पछताए क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत।

महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर बाईबल में से एक कहानी सुनाया करते थे कि एक मालिक किसी खास कारोबार के लिए बाहर जाने लगा तो उसने अपने नौकरों को अलग अलग ड्यूटियाँ दी। मालिक ने अपने एक नौकर को बहुत से रुपये दिए और कहा, ''इससे कारोबार करना है।'' दूसरे को भी खुले दिल से रुपये दिए और तीसरे को थोड़े कम रुपये देकर अपना कारोबार करने के लिए चला गया।

पहले वाले नौकर ने बहुत मेहनत मुशक्कत करके उन रुपयों से कारोबार किया। दूसरे ने भी उसी तरह मेहनत मुशक्कत करके रुपये दुगने कर लिए लेकिन तीसरे ने उन रुपयों को घर में संभालकर रख दिया। जब मालिक वापिस आया तो वह उन दोनों नौकरों से बहुत खुश हुआ कि इन्होंने मेरी आज्ञा को माना है। उसने उन दोनों नौकरों को ज्यादा अधिकार दे दिए और कहा, ''मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।'' तीसरे नौकर ने वह रुपये वैसे ही वापिस लाकर मालिक को दे दिए। मालिक ने नाराज होकर कहा, ''मैं तुझसे खुश नहीं हूँ।''

महात्मा हमें समझाते हैं कि वह मालिक परमात्मा है और पूँजी इन्सानी जामा है। जो इस इन्सानी जामे में बैठकर प्रभु-भक्ति करते हैं, वे जब वापिस जाते हैं तो प्रभु खुश होकर उनके लिए दरवाजा खोलता है; उन्हें शाबाशी देता है। जो लोग इन्सानी

जामा पाकर भक्ति नहीं करते, परमात्मा उनसे खुश नहीं होता। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

ईकनी लाहा लै चल्ले ईक चल्ले मूल गँवाए।

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार॥

शेख बरम ने गुरु नानकदेव जी से पूछा कि संसार में कौन सी चीज़ सच्ची है; क्या सच बोलने को सच कहा है? गुरु नानकदेव जी जवाब देते हैं कि सच बोलना अच्छा है, यह सतोगुणी असर है। लेकिन सन्त उस ताकत को सच कहते हैं जो कभी फना नहीं होती। उसने खंड, ब्रह्मांड और लोगों के शरीरों के आकार रचे हैं। वह इनके अंदर खुद बैठा है। आप कहते हैं:

खंड पाताल द्वीप सब लोआ काले वस आप प्रभ कीआ।
त्रेहां गुणां से रहे नरारा सो गुरुमुख शोभा पायेन्दा॥

हम अपने आप खंडों, ब्रह्मांडों को नहीं पहचान सकते थे और न ही हमें परमात्मा की समझ थी। परमात्मा ने अपने प्यारों को भेजकर हमें यह समझ दी।

सचे तेरे करणे सरब बीचार॥ सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु॥
सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु॥ सचा तेरा करमु सचा निसाणु॥

अब उस परमात्मा की महिमा गाते हैं, ''हे परमात्मा! तेरा दरबार सच्चा है। तू जिसके लिए एक बार दरवाजा खोल देता है फिर उसे नहीं छोड़ता। तेरा विचार कि किसे दुनिया में रखना है, किसे नाम देना है, किसे अपने साथ मिलाना है। किसके लिए तेरा हुक्मनामा है तेरा यह विचार भी सच्चा है।''

सचे तुधु आखहि लख करोड़ि॥ सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि॥

आप प्यार से कहते हैं कि जो तेरी तारीफ करते हैं, तेरा

नाम जपते हैं, तेरे साथ जुड़ जाते हैं वे भी सच्चे हो जाते हैं; फना नहीं होते। एक बार गुरु नानकदेव जी ने कुछ प्रेमियों से पूछा कि संसार में **किसका नाम रहता है?** किसी ने कहा, ''कहीं सराय बनवा दो।'' किसी ने कहा, ''कहीं मन्दिर बनवा दो।'' किसी ने कहा, ''बच्चे पैदा कर लो।'' आप इन जवाबों से संतुष्ट नहीं हुए और आपने कहाः

नाम रहयो साधु रहयो रहयो गुरु गोविन्द।
कहो नानक इस जगत में किन जपया गुरु मंत॥

उस परमात्मा का या उस साधु का नाम रहेगा जो परमात्मा की तरफ से इस संसार में आया है। जो उनसे 'शब्द-नाम' का भेद लेकर कमाई करते हैं वे भी परमात्मा रूप हो जाते हैं; क्योंकि परमात्मा सदा रहने वाला है।

सची तेरी सिफति सची सालाह॥ सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह॥

आप कहते हैं कि तेरी सिफत करनी सच्ची है। जिसने तेरी सिफत कर ली उसका कभी नाश नहीं होता। तेरी सलाह सच्ची है, तेरी शक्ति सच्ची है जो कभी फना नहीं होती। आप ऐसे उपाय करो जिससे आप गुरु परमात्मा की सिफत कर सको और उनके साथ प्यार कर सको।

नानक सचु धिआइनि सचु॥ जो मरि जंमे सु कचु निकचु॥

आप कहते हैं, ''जो उसकी भक्ति करते हैं, उसके साथ जुड़ जाते हैं, वे भी सच्चे हो जाते हैं। जिन्हें 'नाम' का रस आ गया, भक्ति का ज्ञान हो गया, वे कभी नहीं डोलते। जो परमात्मा की भक्ति नहीं करते, वे जन्मते-मरते हैं। वे कच्चे हैं। अगर ऐसे लोग देखा-देखी सन्तों की संगत में आ भी जाएं तो उनका दिल डाँवाडोल ही रहता है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसने अपनी

आँखों से देख लिया कि यह घोड़ा है फिर चाहे सारा मुल्क एक तरफ होकर कहे कि यह गधा है; वह कभी भी नहीं मानेगा।''

मेरी आत्मा का परमात्मा 'शब्द-रूप' कृपाल सदा यह कहता रहा कि यह देह सदा नहीं रहेगी, सन्तों के अंदर जो ताकत काम करती है वह सदा रहेगी। वह जब संसार से दूर हुए तो कितने ही लोग अदालतों तक गए। उन सबने कहा कि कृपाल मर गया है। लेकिन मैंने यही कहा, ''जो यह कहते हैं कि गुरु मर गया है उन्हें अदालत में खड़ा करो, क्योंकि 'शब्द-रूप' गुरु मरता नहीं वह सदा रहता है। जिनका गुरु ही जन्म-मरण में लगा हुआ है उसके शिष्य किस तरह जन्म-मरण से बच सकते हैं।''

गुरु सदा संसार में रहता है वह न आता है न जाता है। वह किसी को देह के साथ नहीं बांधता। जब तक परमात्मा का हुक्म होता है, वह देह में बैठकर परमात्मा शब्द के साथ जोड़ता है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

सतगुरु मेरा सदा सदा, ना आए ना जाए।
वो अविनाशी पुरुष है, हर जेहा रहा समाए॥

हुजूर महाराज कहा करते थे कि अगर एक बल्ब फ्यूज़ हो जाए तो उसकी जगह दूसरा बल्ब लग जाता है, रोशनी में कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरुग्रन्थ साहब में *राय बलबन्डे की वार* में आता है कि ज्योत वही है वह सिर्फ काया पलटता है।

वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज उस परमात्मा की महिमा बयान करते हैं कि वह कण-कण में व्यापक है। उसका 'नाम' बड़ा है, उसका कभी नाश नहीं होता। उसका न्याय बड़ा है, वह सच्चा न्याय करता है। अगर कोई उसे याद करता है तो वह उसे

उसका फल अवश्य देता है। अगर कोई उसे गालियाँ देता है तो वह उससे नाराज नहीं होता। वह तो अपनी दया का हाथ बढ़ाता ही रहता है लेकिन हर किसी को अपने कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ता है।

वडी वडिआई जा निहचल थाउ॥ वडी वडिआई जाणै आलाउ॥

उसकी बड़ाई इसलिए है कि ओ३म् तक प्रलय में सृष्टि ढ़ह जाती है। भँवर गुफा तक ऊपर के मंडल महाप्रलय में ढह जाते हैं। सच्चखंड निश्चल देश है जिसका कभी नाश नहीं होता।

वडी वडिआई बुझै सभि भाउ॥ वडी वडिआई जा पुछि न दाति॥

उसकी सबसे बड़ी बड़ाई यह है कि वह जिसके अंदर 'नाम' प्रगट कर देता है; उसे नाम देने का अधिकारी बना देता है फिर उससे यह नहीं पूछता कि तूने इतनों को नाम के साथ जोड़ दिया है।

सौंपे जिस भंडार फिर पुछ ना लीतियन।

वडी वडिआई जा पुछि न दाति॥ वडी वडिआई जा आपे आपि॥

आप कहते हैं कि उसकी बड़ी बड़ाई इसलिए है कि वह किसी की सलाह से दात नहीं देता। उसका कोई शरीक नहीं, वह अपने आप ही परमात्मा है।

नानक कार न कथनी जाइ॥ कीता करणा सरब रजाइ॥

आप कहते हैं कि हम उसकी महिमा को जुबान से बयान नहीं कर सकते। हम उसकी रज़ा को अंदर जाकर परमात्मा के साथ मिलकर ही समझ सकते हैं।

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु॥
इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु॥

यह बानी गुरु अंगददेव जी की है। आप कहते हैं कि प्यारेओ! यह उस परमात्मा के रहने का एक कोठा है। गुरु अमरदेव जी ने इसे हरि-मन्दिर कहा है। किसी महात्मा ने इसे चर्च, गुरुद्वारा, मन्दिर और मस्जिद कहा है। आप कहते हैं कि इस कोठे के अंदर परमात्मा खुद बैठा है। यह फैसला भी उसी का है कि किसे अपने साथ मिलाना है और किसे माया के पदार्थों मे लगाना है।

इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु॥
एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि॥
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु॥

गुरु नानकदेव जी महाराज यह अहंकार नहीं करते कि मुझे ही परमात्मा या खंडो-ब्रह्माँडों का पता है। आप कहते हैं, ''जो गुरुओं की शिक्षा पर चलते हैं वे गुरुमुख होते हैं। जो गुरु बोलता है वे भी वही बोलते हैं।''

मैं बताया करता हूँ कि जो सन्तमत की शिक्षा पर चलकर अपने अंदर उस प्रकाश को प्रगट करके धुरधाम पहुँच जाता है, गुरु को प्रगट कर लेता है; वही गुरुमुख इस राज़ को समझता है कि परमात्मा जिसकी हमें खोज है वह हमारी देह और वजूद में है। जिन्होंने इस राज़ को नहीं समझा, वे बातों के पहलवान बने हुए हैं। सिर्फ जुबानी कुश्ती ही करते रहते हैं।

नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ॥
ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा ने जीवों को पैदा करके बेसहारा नहीं छोड़ा। संसार की मर्यादा को कायम रखने के लिए उसने धर्मराज को मुकर्रर किया है; जो जैसा कर्म करता है वह उसे वैसा इनाम या सजा देता है। जीव को

अपनी मर्जी के मुताबिक कर्म करने की तो छूट है, लेकिन जब धर्मराज के पास पहुँचते हैं तब सच्चे एक तरफ और झूठे एक तरफ निकाले जाते हैं। झूठों को परमात्मा के दरबार में दाखिल नहीं किया जाता।

थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ॥
तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ॥
लिखि नावै धरमु बहालिआ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ॥

आजकल तो बहुत सहूलियतें हैं। कागजों के नोट, डॉलर वगैरह बन गए हैं। पिछले जमाने में चाँदी के रुपये हुआ करते थे। जब रुपये लेकर खजांची के पास जाते तो वह उन रुपयों को अच्छी तरह खड़काकर देखता। जिस रुपये में मिलावट होती वह उस रुपये को टक* लगाकर अलग कर देता। फिर वह रुपया कहीं नहीं चलता था।

हमारी भी यही हालत है, हर जन्म के बाद धर्मराज हमारी आत्मा की परख करता है जिनके खोटे कर्म हैं उनका मुँह काला कर देता है ताकि दूसरों को भी पता चल जाए कि यह नर्क में भेजा जाएगा।

आप कहते हैं कि धर्मराज की किसी के साथ दोस्ती-दुश्मनी नहीं। जो जैसा कर्म करता है वह उसके मुताबिक ही अपनी रिपोर्ट दे देता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

खरे परख खज़ाने पाए, खोटे भ्रम भुलावणया।

❁❁❁

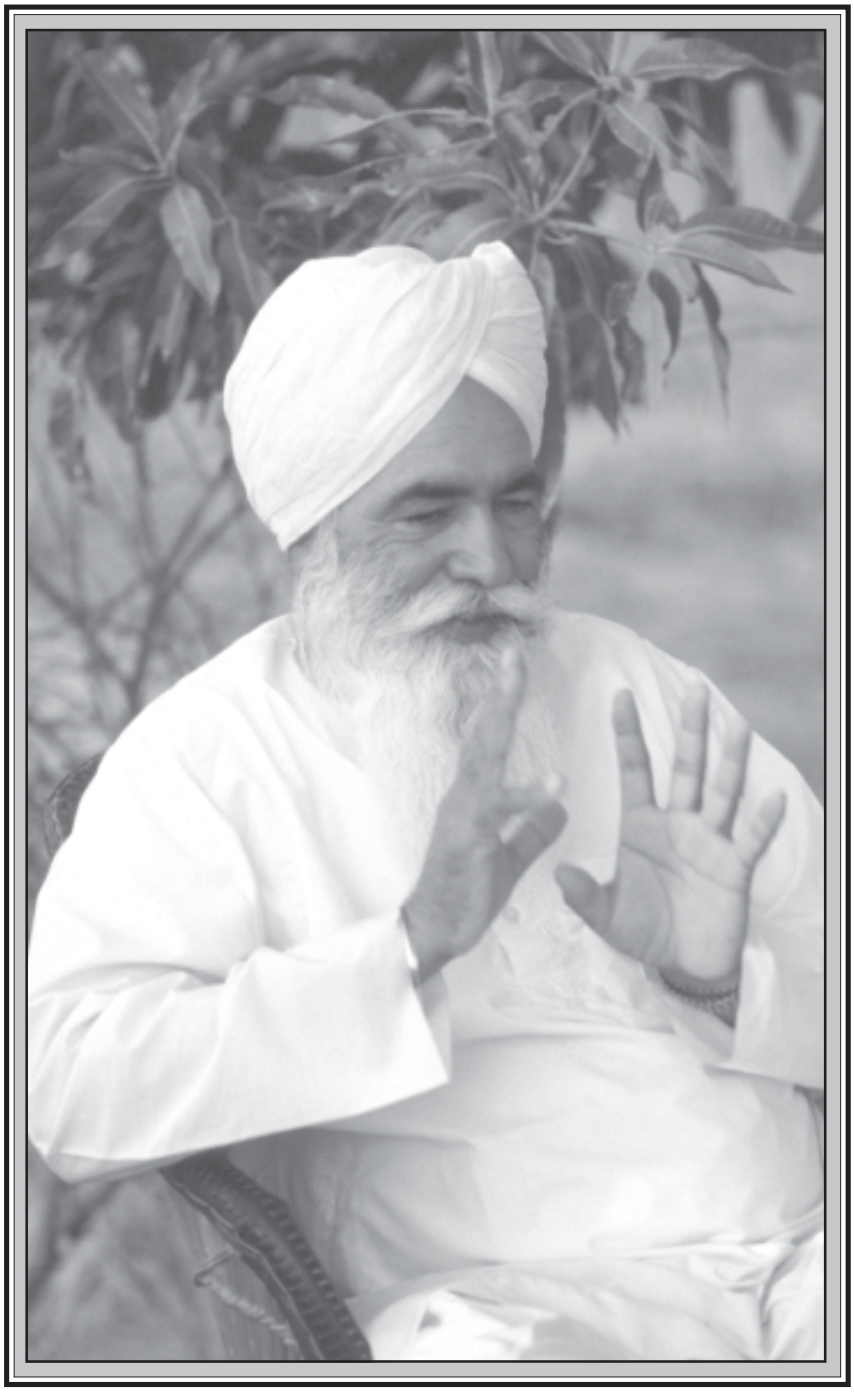

तीन

आओ! करो और देखो!

इन्सान को अच्छा या बुरा बनाने वाली सोहबत-संगत है। कभी भी बुरे आदमियों की सोहबत-संगत मत करो। सदा ही भले पुरुषों की सोहबत करो। बेशक शराब बेचने वाले के हाथ में दूध हो, लेकिन देखने वाला उसे शराब ही समझेगा।

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे हमें हमेशा ही चेतावनी देते हैं कि बुरों की संगत में पड़कर बुरे मत बनो। याद रखो! इन्सानी जामा बहुत कीमती है, अमोलक है। हमेशा ही अच्छे लोगों की संगत में रहकर अच्छे बनो। चोर-डाकुओं की संगत में रहकर हम चोर-डाकू ही बनेंगे। अपने और अपने बच्चों पर तरस करो। ऐसा कोई काम मत करो जिससे हमारी कौम, वंश, मुल्क की बदनामी हो। हमें अपनी आत्मा पर रहम करना चाहिए।

एक बार पैगम्बर लुकमान अपने बच्चे को अच्छी संगत के बारे में समझा रहे थे कि बेटा! तुम जिस लड़के की सोहबत-संगत कर रहे हो उसकी हरकतें अच्छी नहीं। तुम उसकी संगत में रहोगे तो तुम्हें भी वैसी ही आदतें पड़ जाएंगी। लड़के ने कहा, ''मैं बहुत समझदार हूँ मेरे ऊपर उसका कोई असर नहीं पड़ेगा।'' लुकमान साहब ने कहा, ''बेशक तू बहुत चतुर और समझदार है लेकिन तेरे ऊपर उसका असर अवश्य होगा और तू भी उस जैसा ही बन जाएगा।''

पैगम्बर लुकमान बहुत समझदार थे। उन्होंने एक कोयला अपने बेटे के हाथ में रखकर कुछ समय बाद वह कोयला फिंकवा दिया। लड़के ने देखा कि उसका हाथ काला हो गया है। आपने कहा, ''कोयला हाथ में पकड़ने से तेरा हाथ काला हो गया है।

इसी तरह ऐसा नहीं हो सकता कि बुरी संगत में रहकर तुझ पर उसका असर न हो।''

जब इन्सान कत्ल करके फाँसी के तख्ते पर चढ़ता है, अगर उस वक्त वह कहे कि मेरे साथ बुरा सलूक मत करो! मुझे सजा मत दो! तब धर्मराज कहता है कि तू बुरों की संगत करके बुरा बन गया। अब तेरे बुरे कर्मों की यही सजा है।

एक आदमी ने वरुण देवता की बहुत कठिन तपस्या की। वरुण देवता ने खुश होकर उसे एक बहुत कीमती हीरा दिया। उसने हीरे को अपनी गुदड़ी में सिल लिया। वह उस गुदड़ी को हमेशा अपने पास रखता था।

एक बार वह कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे चार-पाँच ठग मिले। उन ठगों ने देखा कि यह देखने में तो गरीब लगता है लेकिन बहुत खुश नज़र आ रहा है, इसके पास जरूर कुछ है। उन ठगों ने उससे पूछा, ''भ्रावा! तुझे किस तरफ जाना है?'' उसने कहा, ''मैं पूर्व से आ रहा हूँ और पश्चिम की तरफ जाना है।'' उनमें से एक ठग कह-कहाकर हँसा और कहने लगा, ''जब परमात्मा मेल मिलाता है तो अपने आप ही इंतजाम कर देता है। यह तो हमारा ही साथी निकला। हमें भी उसी तरफ जाना है।'' वे ठग भी उसके साथ चल पड़े।

वह गरीब आदमी अपनी गुदड़ी को संभालता रहा कि इसमें हीरा है; मैं इन लोगों को नहीं जानता। ठग समझ गए कि जो कुछ है, इसकी गुदड़ी में ही है। एक दिन उन ठगों ने उसे एक टका देकर कहा, ''तू बाजार से जाकर कुछ सामान ले आ।'' जब वह बाजार से सामान ले आया तो ठगों ने हिसाब लगाकर कहा कि दुकानदार ने तुझे एक कौड़ी कम दी है। जल्दी जाकर ले आ, कहीं दुकानदार मुकर न जाए। जब वह भागकर जाने लगा तो ठगों ने कहा, ''तू अपनी गुदड़ी यहीं पर रख जा। तुझे

भागकर जाने में दिक्कत होगी।'' वह जल्दबाजी में अपनी गुदड़ी वहीं छोड़कर चला गया कि कहीं दुकानदार मुकर न जाए। जब उसने दुकानदार से हिसाब किया तो हिसाब ठीक निकला। वह भागकर उसी जगह वापिस आया तो वहाँ न ठग थे न ही उसकी गुदड़ी थी। वह बहुत पछताया और रोकर कहने लगाः

बहुत बरस तप साध के, मिलया हीरा एक।
कौडी बदले खो दिया, ते होया कलेजे छेक॥

जिस तरह उस भक्त ने भक्ति करके वरुण देवता से हीरा प्राप्त किया, उसी तरह जब हम कई जन्मों में भक्ति करते हैं तो परमात्मा हमें इन्सानी, हीरा-जन्म देता है। हमें यहाँ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के ठग मिल जाते हैं। ये ठग हमें फँसा लेते हैं फिर हम इनसे छूट नहीं सकते। ये शुरू-शुरू में बड़े प्यार से दोस्ती करते हैं। काम कहता है कि हम औलाद ही पैदा कर रहे हैं। कोई गलत काम नहीं कर रहे। औलाद तो ऋषि-मुनि भी पैदा करते आए हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मरे बिना तुम छूटे नाहीं, जीवत जी तू सुने न कान।

जब तक हम मरते नहीं ये हमारी जान नहीं छोड़ते। जिस तरह ठगों ने उस गरीब से हीरा छीन लिया था, उसी तरह हमारी आत्मा भी गरीब है। 'नाम' हीरा है। ये ठग इसे लूट लेते हैं तरक्की नहीं करने देते। सतसंगी रोता-पीटता है, कहता है कि अब मुझे प्रकाश दिखाई नहीं दे रहा; मेरी चढ़ाई नहीं हो रही।

इस कहानी का यही तात्पर्य है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इस नाम रूपी हीरे को ठग लेते हैं।

विसमादु नाद विसमादु वेद॥ विसमादु जीअ विसमादु भेद॥
विसमादु रूप विसमादु रंग॥ विसमादु नागे फिरहि जंत॥
विसमादु पउणु विसमादु पाणी॥ विसमादु अगनी खेडहि विडाणी॥

विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥ विसमादु सादि लगहि पराणी ॥
विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥ विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥
विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥ विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥
विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥ विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥
वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥ नानक बुझणु पुरै भागि ॥

गुरुमुखों की अवस्था तीनों गुणों से ऊपर है, जिसे सहज अवस्था कहते हैं। गुरुमुख सहज अवस्था में ही सोते-जागते और बातचीत करते हैं। सभी महात्माओं ने अपनी बानियों में सहज अवस्था का जिक्र किया है। ये तीनों गुण गुरुमुखों के अधीन होते हैं।

तमोगुण के समय हमारे अंदर अंहकार होता है। तमोगुण के अधीन होकर हम अपने आपको भूल जाते हैं। भाई, भाई का सिर गाजर-मूली की तरह काट देता है।

रजोगुण के समय हमारे अंदर लोभ पैदा होता है। चोरियाँ, ठगियाँ करके लोगों की बददुआएँ लेते हैं। चाहते हैं कि सारी दुनिया का सोना-चाँदी हमारे घर आ जाए। गुरु नानक जी कहते हैंः

लैंदा बददुआएँ तू माया करे इकट्ठ।

सतोगुण के समय इन्सान सब तरफ से हटकर दान-पुण्य, जप-तप करने की सोचता है। नरकों से डरता है और स्वर्गों की आशा करता है। कबीर साहब कहते हैंः

राम कबीरा एक भये हैं कोए ना सके पहचानी।

आप प्यार से कहते हैं कि कोई महरम ही हमारे देश को पहचान सकता है। हमारे देश में बिना बादलों के बारिश होती है, बिना सूरज के उजाला होता है, बिना साजों के शब्द-धुन होती है। वहाँ के झरनों से अमृत की ऐसी बूँदें निकल रही हैं जो न मीठी हैं न खारी हैं।

हे परमात्मा! अब तुझमें और मुझमें क्या फर्क है? मैं हर जगह तुझे ही देख रहा हूँ।

महात्मा रविदास जी कहते हैं कि हमारे शहर का नाम बे-गम है। वही हमारे शहर का रहने वाला है जो वहाँ पहुँचता है। हमारे शहर में कोई गम नहीं। वहाँ किसी किस्म का कोई टैक्स नहीं। वहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई का झगड़ा नहीं। वहाँ सदा शान्ति है। वहाँ कोई किसी में नुक्ताचीनी नहीं करता।

गुरु नानकदेव जी इसे विसमाद अवस्था (आनन्द की अवस्था) कहकर बयान करते हैं। वहाँ मौत-पैदाइश नहीं। वहाँ पहुँची हुई आत्मा कहती है, ''वह परमात्मा अकाल-मूर्त है, मैं भी अकाल-मूर्त हूँ। वह मौत से रहित है, मैं मौत से नहीं डरता। वह भगवान है, मैं उसका बच्चा हूँ।''

महात्मा रविदास जी कहते हैं, ''वह आज़ाद सतसंगियों का देश है। वे सदा ही परमात्मा के दर्शनों में खुश हैं। अगर भूख लगती है तो उन्हें 'शब्द-नाम' का भोजन मिलता है; प्यास लगती है तो नाम का अमृत मिलता है। वहाँ का मिलाप विसमाद है, अचरज है। यह भी अपने-अपने भाग्य की बात है कि एक उस परमात्मा को अपनी देह में प्रगट कर लेता है और एक उसे मन्दिरों-मस्जिदों, जंगलों-पहाड़ों में ढूँढता फिरता है।''

सन्तों-महात्माओं का मार्ग अंधविश्वास का नहीं। वे यह नहीं कहते कि आपको परमात्मा दूसरे जन्म में मिलेगा। महात्मा कहते हैं, ''**आओ! करो और देखो।**'' लेकिन हम चाहते हैं, दुनिया के स्वाद भी न छूटें और परमात्मा भी मिल जाए। कबीर साहब कहते हैं, ''एक म्यान में दो तलवारें न देखी हैं न सुनी हैं।''

सहज अवस्था में पहुँचे महात्मा जीवन मुक्त होते हैं। महात्मा अपने सेवकों से कहते हैं, ''आपकी बहादुरी तभी है जब आप गुरु के देह में रहते हुए ही अपने अंदर शब्द की धार

को प्रगट कर लो।'' गुरु के दिल में तड़प है कि ये मेरे जीवन काल में ही अपना काम बना लें और मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाएं। आप भी गुरु के मिशन में पवित्र बनने की, अभ्यास करने की कोशिश करो।

गुरु नानकदेव जी प्यार से समझाते हैं, ''यह खुशी की बात है कि जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं वे सन्तों की बात को समझकर 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं।'' प्यारेओ! शुरू में भूखे रहना मुश्किल होता है। सेहत पर भी असर पड़ता है लेकिन बाद में सेहत पर कोई असर नहीं पड़ता।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि ताकत दुनिया के पदार्थों में नहीं। यह हमें विरासत में ही मिली होती है। काम की अग्नि इन्सान को इस तरह भस्म कर देती है जिस तरह पतंगा दीपक पर जाकर भस्म हो जाता है। काम बड़ी आसानी से कम किया जा सकता है। आप इसका ख्याल ही मत करो! आप इस जहर को चखकर ही मत देखो; फिर आपका ख्याल इस तरफ जाएगा ही नहीं।

कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु॥
कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु॥
कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु॥
कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु॥
कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान॥
कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु॥
कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु॥
सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु॥
नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु॥

आपने पहले परमात्मा का अचरज, विसमाद रूप बयान

किया है। अब उस परमात्मा की शक्ति को बयान कर रहे हैं जिसे कुदरत भी कहते हैं। आप कहते हैं कि हर जगह उसकी शक्ति काम करती है। दरियाओं में पानी उसकी शक्ति से चल रहा है। धरती उसकी शक्ति से खड़ी है। खंड-ब्रह्मांड और पाताल भी उसकी शक्ति से ही कायम हैं।

उस शक्ति के अधीन होकर ही आँख में ज्योति काम कर रही है, कान में सुनने की शक्ति काम कर रही है। उसी शक्ति से जुबान और हाथ-पैर चल रहे हैं। जब वह शक्ति हममें से गायब हो जाती है तो आँखें होते हुए हम देख नहीं सकते, कान होते हुए सुन नहीं सकते, जुबान होते हुए बोल नहीं सकते।

परमात्मा ने अपनी शक्ति सन्त-महात्माओं में रखी होती है। उसी शक्ति से सन्त-महात्माओं ने वेद, पुराण, ग्रन्थ लिखे हैं। चाहे कोई कितना भी आलम-फाज़ल क्यों न हो, लेकिन सन्तों की बानी को सन्त ही समझते हैं कि कौन सी बानी किस मंजिल की तरफ इशारा करती है। आलम-फाज़ल और गुणी-ज्ञानी इस तरह बयान करते हैं जैसे कोई नक्शा देखकर बताता है कि इस जगह शहर है; इस जगह नहर है। सच्चाई यह है कि उस नक्शे में न शहर होता है न नहर होती है। सिर्फ जानकारी मिल जाती है लेकिन महात्माओं का तजुर्बा इससे उलट है। वे कहते हैंः

तुम कहते हो पुस्तक देखी, हम कहते हैं आँखों देखी।

आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ॥
वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ॥

पहले आपने परमात्मा की अचरज अवस्था को बयान किया फिर उसकी शक्ति को बयान किया। अब गुरु नानकदेव जी प्यार से बताते हैं कि जीव को दुनिया के रसों-कसों और भोगों में किसी ने नहीं फँसाया। इसने खुद ही अपनी मर्जी से भोग भोगे, बुरे कर्म किए और बीमारियाँ लगा लीं।

जीते जी शरीर खाक जैसा हो गया। शरीर को शक्ति देने वाली आत्मा के निकलते ही यमों ने इसे पकड़ लिया। चाहे कोई कितना भी शक्तिशाली हो, राष्ट्रपति हो, बहुत फौज़ों का मालिक हो, दुनिया सलामें करती हो; लेखा सभी का होता है। वहाँ हाथों में हथकड़ियाँ और गले में जंजीर होती है, राजा और गरीब में कोई मतभेद नहीं होता। जिसका जैसा कर्म होता है उसे धर्मराज उसका हिसाब समझा देता है।

मैंने ऐसे बहुत से लोग देखे हैं जो अन्त समय में सारा किस्सा भी बयान करके जाते हैं। पंजाब में कपूरथला स्टेट की रानी महाराज सावन सिंह जी की बड़ी श्रद्धालु नामलेवा थी। उसने अपने पति से कई बार कहा, ''नाम लो। नाम बिना मुक्ति नहीं; गुरु बिना गति नहीं।'' राजा हमेशा ही बहाने बना देता। कभी कहता, ''लोग क्या कहेंगे कि राजा होकर कहाँ जाता है?'' लेकिन मौत किसी का इंतजार नहीं करती।

जब राजा का अन्त समय आया, मैं उस समय आर्मी में कपूरथला में ही था। राजा ने रानी से कहा, ''यमदूत मेरे हाथ जला रहे हैं, मेरे गले में जंजीर डालकर मुझे खींच रहे हैं।'' रानी ने कहा, ''मैंने तुझे कितनी बार कहा था कि 'नाम' ले ले।'' आखिर रानी ने हुजूर सावन के आगे फरियाद की, तब जाकर उसकी देह छूट सकी।

मैं बताया करता हूँ कि मेरा परिवार हुजूर सावन-कृपाल को नहीं मानता था। मेरे परिवार के लोग मेरा विरोध करते और कहते, ''कृपाल ने तेरे ऊपर जादू किया हुआ है।'' मैं अपने परिवार के लोगों से मेलजोल नहीं रखता था। मैं उनसे कहा करता, ''कृपाल के सिवाय आपकी मदद करने वाला कोई नहीं।''

पिछले साल दो जुलाई का वाकया है, जब मेरे भाई का अन्त समय आया। उस समय वह बीमार नहीं था। अचानक घर

में आकर कहने लगा, ''मुझे चार कसाइयों ने पकड़ लिया है और कष्ट दे रहे हैं। फिर एकदम से हुजूर का नाम लेकर बोला कि हुजूर आ गए हैं, उन्होंने मुझे कसाइयों से छुड़वा लिया है।'' फिर उसने कहा, ''आप लोग अजायब को घर में लाओ; उससे 'नाम' लो। मैंने तो अपनी जिंदगी ऐसे ही गँवा दी।'' यह कहकर उसने चोला छोड़ दिया।

पिछले सतसंग में मेरे परिवार के सब लोग आकर 'नाम' ले गए हैं। अब उन्हें कृपाल की ताकत पर बहुत श्रद्धा है।

अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ॥
थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रुआइआ॥
मनि अंधै जनमु गवाइआ॥ मनि अंधे जनमु गवाइआ॥

गुरु नानक साहब कहते हैं कि इसने मन के पीछे लगकर यह हीरा-जन्म विषय-विकारों में गँवा दिया। किए गए कर्मों के हिसाब से वहाँ यमों के जूते पड़ते हैं, कहीं सिर छिपाने की जगह नहीं। बहुत रोता चिल्लाता है। कोई इसकी चीख-पुकार नहीं सुनता।

सन्त-महात्माओं का बानियाँ लिखने का भाव हमें दहशत में डालना नहीं। वे सच्चाई बयान करते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

नानक दास मुख ते जो बोले इहाँ उहाँ सच होवे।

❁❁❁

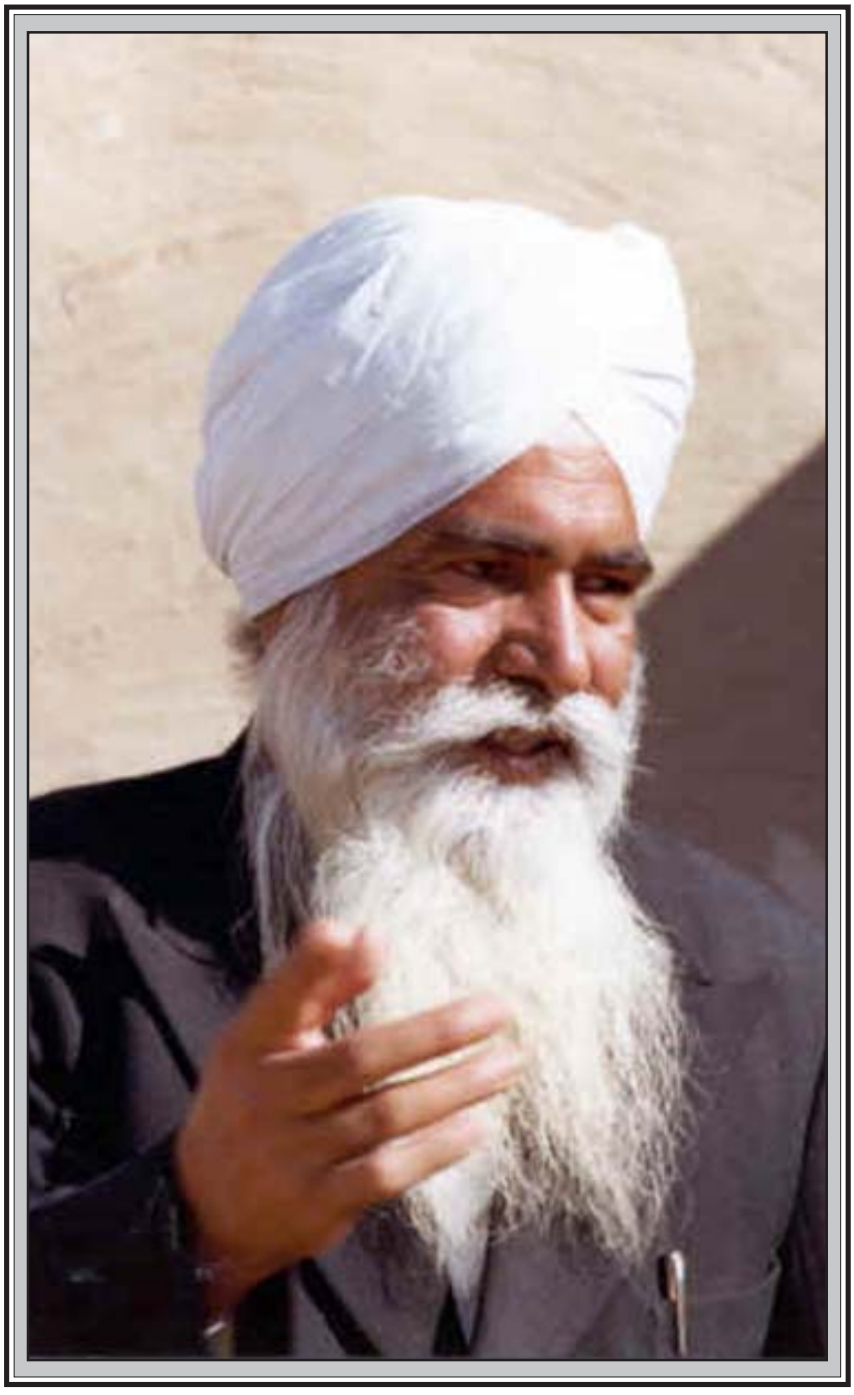

चार

डर

शेख बरम ने गुरु नानक जी से पूछा, ''क्या कोई इस संसार में **डर** से रहित है? अगर **डर** से बचना हो तो क्या करना चाहिए?''

गुरु नानकदेव जी जवाब देते हैं कि देख प्यारे आ! यह सारा संसार **डर** से ही बना है। बचपन में बच्चा माता-पिता से डरता है। थोड़ा बड़ा होने पर स्कूल जाता है तो टीचरों से डरता है। नौकरी करते हुए अपने अफसरों से डरता है। जवानी में धनी होने पर चोरों और टैक्सों से डरता है। बुढ़ापा आने पर मौत से डरता है।

चाहे दुनिया में राष्ट्रपति ही क्यों न बन जाए, पद छिन जाने का डर लगा रहता है। बिना **डर** के कुछ भी नहीं। सच्चाई तो यह है कि हम सिर्फ इन्सानों से ही नहीं डरते बल्कि पशु-पक्षियों से भी डरते हैं। हम साँपों, शेरों और बघियाड़ों से भी डरते हैं कि कहीं ये हमें खा न जाएँ! ये खूंखार जानवर इन्सानों से डरते हैं कि कहीं ये हमें पकड़कर कैद न कर लें, काटकर खा न जाएँ!

अगर कोई किसी का कत्ल करता है तो वह पुलिस और फाँसी से डरता है। पाप करता है तो धर्मराज के दंड से डरता है। धर्मी की सदा जय होती है, उसका आगे चलकर आदर-सम्मान होता है। कबीर साहब कहते हैं:

डरिए जे पाप कमाइए।

सन्तमत का इतिहास गवाह है कि वक्त की हुकूमतों ने मालिक के प्यारों को कितने कष्ट दिए। कबीर साहब को गंगा में फेंका गया। आपको गठरी में बाँधकर हाथी के आगे फेंका

गया। लेकिन आप डरे नहीं। उस समय की हुकूमत ने भक्त नामदेव से कहा, ''तू इस रास्ते से हट जा, नहीं तो तेरी गर्दन काट देंगे।'' लेकिन वे डरे नहीं। इसी तरह प्रह्लाद को उसकी जादूगरनी बुआ आग में लेकर बैठ गई। प्रह्लाद को तपते हुए खम्भे से चिपटाया गया लेकिन वह डरा नहीं। गुरु गोविंदसिंह जी का घर-घाट लूट लिया। आपके माता-पिता और बच्चों को शहीद कर दिया गया। आप जंगलों में नंगे पैर चलते रहे, लेकिन डरे नहीं।

गुरु नानकदेव जी इस शब्द में शेख बरम को समझाने की कोशिश करते हैं कि इस संसार को पैदा करने वाला परमात्मा **डर** से रहित है। जिस पोल पर परमात्मा की ताकत काम करती है, न वह डरता है न किसी को डराता है। अगर हमें वक्त का गुरु मिल जाए, वह हमें 'नाम' दे दे और हम 'नाम' में एक हो जाएं तो हम भी **डर** से रहित हो सकते हैं।

मनोवैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि पाप से **डर** पैदा होता है। **डर** से चिन्ता पैदा होती है। चिन्ता चिता के समान है।

सन्त-महात्मा समझाते हैं कि हमें भी 'सुरत-शब्द' का अभ्यास करना चाहिए। सुरत को शब्द में इस तरह मिला लेना चाहिए जैसे बूँद समुद्र में मिलकर समुद्र ही बन जाती है। इसी तरह उस **डर** से रहित परमात्मा में मिलकर हम भी **डर** से रहित हो सकते हैं।

भक्तों और सांसारिक लोगों का आपस में मेल इसलिए नहीं होता क्योंकि काल वक्त की हुकूमतों में बैठकर अपना काम करता है कि किस तरह भक्तों को शब्द-नाम की कमाई से हटाया जाए। भक्त **डर** से रहित होते हैं अपने मिशन से पीछे नहीं हटते।

एक महात्मा जंगल में बैठकर अभ्यास कर रहा था। बहुत

से लोग उसके दर्शन करने जाते थे। जहाँ सुगन्ध हो, वहाँ भँवरे आ ही जाते हैं। एक वेश्या भी आपके दर्शन करने जाया करती थी। वह महात्मा से पूछती, ''आप औरत हैं या मर्द?'' महात्मा कोई जवाब न देते। कुछ समय बाद वह महात्मा बीमार हो गए। उनका अन्त समय आने वाला था। वेश्या ने उनसे फिर पूछा कि आप औरत हैं या मर्द? महात्मा ने कहा, ''थोड़ा समय रह गया है। मैं तुझे एक-दो दिन बाद बताऊँगा। तू मेरे अन्त समय पर आना।'' उस वेश्या ने फिर आकर कहा कि अब तो आप जाने वाले हैं। मेरे सवाल का जवाब तो अधूरा ही रह जाएगा। महात्मा ने कहा, ''मैं पुरुष हूँ, मर्द हूँ।'' वेश्या ने कहा, ''मर्द तो आप पहले से ही दिखते थे, लेकिन आपने ऐसा पहले क्यों नहीं कहा?'' महात्मा ने कहा, ''माता! यह मन बेईमान है। क्या पता कब धोखा दे जाता? आज मैं सही मायनों में मर्द बनकर परमात्मा के पास पेश होऊँगा।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि एक झूठ को सच बनाने के लिए कई झूठ बोलने पड़ते हैं। एक जंगल में बहुत से ऋषि-मुनि रह रहे थे। वहाँ पारस ऋषि ने लोमस ऋषि से सवाल किया कि किस तरह इन्सान लोक या परलोक में शोभा प्राप्त करता है? लोमस ऋषि ने कहा, ''सच बोलने वाला यहाँ भी और आगे भी शोभा प्राप्त करता है।'' चाहे कोई पापी हो, उसे भी सच पसन्द है। सभी मजहबों के लोग सच पसन्द करते हैं।

महाभारत में आता है कि पांडवों ने कृष्ण भगवान से पूछा, ''हमने अच्छे कर्म किए हैं। क्या हमें स्वर्ग मिल जाएँगे?'' कृष्ण भगवान ने कहा, ''हिमालय पर चढ़ जाओ। स्वर्ग में पहुँच जाओगे।'' पांडव बहुत कठिन साधना साधकर हिमालय पर चढ़ गए। उनमें से चार भाई तो बर्फ में दबकर मर गए। युधिष्ठिर के पैर का एक अंगूठा बर्फ में गल गया। उसने कृष्ण भगवान से

विनती की ''महाराज! मेरे सारे भाई बर्फ में दबकर मर गए हैं। मैंने जिंदगी में कभी झूठ नहीं बोला, मेरे पैर का अंगूठा क्यों गल गया है?'' कृष्ण भगवान ने कहा, ''तुमने जिदंगी में एक बार झूठ बोला था। इसलिए तुम्हारे पैर का अंगूठा गल गया है।'' गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

कर्म धर्म कर मुक्त मंगाही, मुक्त पदार्थ नाम ध्याही।

गुरु नानकदेव जी महाराज इस शब्द में प्यार से समझा रहे हैं कि किस तरह यह सारी सामग्री **डर** में है। सतगुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता और नाम की कमाई के बिना कोई भी **डर** से रहित नहीं हो सकता।

भै विचि पवणु वहै सदवाउ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ॥

आप कहते हैं कि पवन, दरिया, समुद्र ये सब भय में हैं। उस परमात्मा के **डर** में हैं।

भै विचि अगनि कढै वेगारि॥ भै विचि धरती दबी भारि॥

आप कहते हैं कि अग्नि देवता दुनिया के सारे काम करता हुआ भी **डर** में है। जीवों के कर्मों का हिसाब रखने वाला धर्मराज भी दरबार के अंदर **डर** में है कि कहीं मुझसे कोई गलत काम न हो जाए।

भै विचि इंदु फिरै सिर भारि॥ भै विचि राजा धरम दुआरु॥

देवताओं का शिरोमणि देवता इन्द्र भी भय में है। बादल भी भय में हैं कि हमें बारिश करनी है।

भै विचि सूरजु भै विचि चंदु॥ कोह करोड़ी चलत न अंतु॥

अब आप कहते हैं कि सूरज, चन्द्रमा भय में हैं कि कब

उदय और अस्त होना है। सब उस परमात्मा के **डर** से अपनी-अपनी ड्यूटियाँ कर रहे हैं।

भै विचि सिध बुध सुर नाथ॥ भै विचि आडाणे आकास॥

ऋद्धियों-सिद्धियों के मालिक जो चमत्कार दिखाकर दुनिया को परेशान करते हैं वे भी परमात्मा के भय में हैं। आकाश में उड़ने वाले पक्षी भी भय में हैं। आकाश जो बिना खम्भों के खड़ा है वह भी परमात्मा के भय में है।

भै विचि जोध महाबल सूर॥ भै विचि आवहि जावहि पूर॥

आप कहते हैं कि समय-समय पर बड़े-बड़े योद्धा, महाबली, सूरमा, जो दुनिया में पैदा हुए, वे भी परमात्मा के भय में हैं।

अगर किसी को लड़वाना हो या किसी कौम के विरोध में बोलना हो तो हमारे धार्मिक नेता उसे सूरमा कहते हैं। हमारी देह ने जो मजहब अख्तियार किया होता है, हम उसी को धर्म समझते हैं और उसकी रक्षा के लिए एक-दूसरे का कत्ल करके शहीद कहलवाते हैं।

लेकिन कबीर साहब, गुरु नानकदेव और सभी सन्त, सूरमा या योद्धा उसे कहते हैं जिसने साधना साधकर अपने ऊपर काबू पा लिया हो। जो पाँच कर्म इन्द्रियों और पाँच ज्ञानेन्द्रियों पर काबू पा लेता है वही महाबली है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मन जीते जग जीत।

अगर हम मन को जीत लेते हैं तो जग के बनाने वाले को अपने ऊपर मेहरबान कर लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

सूरा सो पहचानिए, जो लड़े दीन के हेत।
पुर्जा पुर्जा कट मरे, कबहूं ना छाड़े खेत॥

वही सूरमा है जो अपने दीन के लिए लड़ता है। हमारा धर्म परमात्मा है। गुरु अर्जुनदेव जी ने सुखमनी साहिब में बताया हैः

सगल धर्म में श्रेष्ठ धर्म, हर का नाम जप निर्मल कर्म।

कबीर साहब कहते हैंः

गगन दोआमा वाजया, पढ़या निशाने घाव।
खेत जो मान्डे सूरमा, अब जूझन का दाव॥

हमारा खेत तीसरा तिल है। जो एकाग्र होकर इसे अपना घर बना ले, उसे अंदर से शब्द की आवाज आनी शुरू हो जाती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

मैं ते पंज जवान गुरु थापी दित्ती कन्ड जिओ।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की स्थूल गांठ तीसरे तिल पर है। जब हम तीसरे तिल पर पहुँच जाते हैं तो पूरा गुरु, जिसका हाथ हमारी पीठ पर है, वह हमें शब्द धुन के साथ इन पाँचों डाकुओं के साथ लड़वाता है। जो सेवक दिन-रात इनसे लड़ते हैं, वे जानते हैं कि किस तरह सतगुरु 'शब्द-रूप' होकर हमारी मदद कर रहा है।

कबीर साहब कहते हैं कि तलवारों, तोपों से लड़ने वाले सूरमा नहीं हैं। असली सूरमा वही हैं जो गुरु की दया से इन पाँचों जवानों से लड़कर जीत प्राप्त करते हैं। सन्त किसी को कमजोर दिल नहीं बनाते। मैं पहले ही बता चुका हूँ, ''वही डरता है जो पाप करता है।''

सगलिया भउ लिखिआ सिरि लेखु॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु॥

हर जीव के पैदा होते ही उसकी किस्मत में **डर** लिखा जाता है। सिर्फ परमात्मा ही **डर** से रहित है। गुरु नानक जी कहते हैंः

भय काहूं को देत न भय मानत आन।

मालिक के प्यारे न किसी से डरते हैं न किसी को डराते हैं। एक पश्चिमी प्रेमी ने 77 आर.बी. आश्रम में मुझसे पूछा कि सबसे बड़ा पाप क्या है? मैंने कहा, ''डरना ही सबसे बड़ा पाप है।''

नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल।

परमात्मा ही **डर** से रहित है। रामचन्द्र भी देह धारकर डरते रहे। उन्होंने अपनी जिंदगी डर में ही गुजारी। उनकी हिस्ट्री में आता है जब वे बनवास गए तब उनका छोटा भ्राता लक्ष्मण बारह साल तक धनुष बाण लेकर उनके पहरे पर खड़ा रहा।

मुझे सन् 1947 से 1950 के बीच पंजाब के आठ राज्यों के राजाओं के साथ मिलने का मौका मिला। उनमें से कोई भी राजा **डर** से रहित नहीं था। किसी ने दो सौ, तो किसी ने सौ आर्मी के आदमी पहरे पर लगाए हुए थे। फिर भी वे निश्चिंत नहीं थे। मामूली सी आवाज़ होने पर अलार्म बज जाता था।

केतीआ कन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि देख भाई शेख बरम! लोग कृष्ण की बहुत कहानियाँ गाते हैं और पढ़ते-पढ़ाते हैं। वेदों-शास्त्रों पर बहुत विचार करते हैं लेकिन उस मौत के फरिश्ते से निडर नहीं होते।

केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल॥

अब आप कहते हैं कि लोग राम कृष्ण की कहानियाँ गा-गाकर नाचते हैं और उनके नाम पर पैसे माँगते हैं। पैसे इकट्ठे करने के लिए जमीन पर कलाबाजियाँ लगाते हैं लेकिन मौत के **डर** से फिर भी नहीं बच सकते।

बाजारी बाजार महि आई कढ़हि बाजार॥

बहुरूपिए लोग रूप बदलकर लोगों का मनोरंजन करने के लिए बाजारों में नाचते हैं और किस्से कहानियाँ सुनाकर लोगों को गुमराह करते हैं, लेकिन वे भी मौत से डरते हैं।

गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल॥
लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार॥

वे लोग शहरों में, गाँवों में और धर्मस्थानों पर जाकर राम और कृष्ण का स्वांग बनाकर लोगों को खुश करने के लिए पागलों जैसे गीत गाते हैं। उन्होंने नकली हार पहने होते हैं। यह देह मिट्टी की ढेरी है इसने मिट्टी में ही मिल जाना है।

गुरु नानकदेव जी का भाव किसी की निन्दा करना नहीं है। जब दुनिया कुमार्ग पर चल पड़ती है भगवान की भक्ति करना छोड़ देती है। 'शब्द-नाम' को भूलकर बाहर के रीति-रिवाजों में फँस जाती है, तब सन्त-महात्मा ऐसे लोगों को समझाते हैं कि प्यारेओ! पानी को मथने से मक्खन नहीं निकलेगा। मक्खन तो दूध को मथने से ही निकलेगा। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

पानी मथ्थे हाथ कुछ नाहीं, खीर मथ्थन आलस भारा।

जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार॥
गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु॥

गुरु नानकदेव जी पढ़ने-पढ़ाने को ज्ञान नहीं कहते। आप वेदों-शास्त्रों को पढ़कर या बातों से ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। ज्ञान प्राप्त करना लोहे जितना कठोर है। आप कहते हैंः

ज्ञान ध्यान धुन जाणिए अकथ कहावे सोए।

करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं अगर हमारे अच्छे कर्म हों तो हमें गुरु मिले, 'नाम' मिले। हम उस परमात्मा को किसी हिकमत या चतुराई से प्राप्त नहीं कर सकते।

नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाईआ॥

अगर परमात्मा हम पर दया करता है तो हमारा मिलाप सतगुरु से करवाता है और सतगुरु दया करके हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ता है। अफसोस से कहना पड़ता है कि हम सतसंगी भी उस परमात्मा सतगुरु की दया को नहीं समझते। हम दया तभी समझते हैं जब हमारी तरक्की हो जाए, बीमारी से छुटकारा हो जाए या बच्चे अच्छे हों। अगर घर में मामूली सा नुकसान हो जाए तो हमारा सारा भरोसा उड़ जाता है। जबकि दुनियावी फायदे और नुकसान हमारे अपने किए हुए कर्मों के ही हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

ठीका ठौर न पावी गुरु को दोष लगावी।

ऐसे लोग अंदर जाकर शब्द को नहीं सुनते और गुरु को दोष देते हैं कि गुरु ने हमारी मदद नहीं की।

एहु जीउ बहुते जनम भरमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाईआ।

यह जीव बहुत से जन्मों में कभी कुत्ता, कभी बिल्ला बनकर आखिर जब सन्तों के द्वारे पर आता है तो सन्त देखते हैं कि यह बेचारा कभी कहीं जन्म लेता है तो कभी कहीं जन्म लेता है। सन्त इस पर तरस खाकर इसे 'नाम' की दात देकर कहते हैं, ''प्यारेआ! हम तुझे 'शब्द-नाम' की आवाज सुनाते हैं। तू इस

आवाज के पीछे पीछे चल। तेरा जन्म-मरण कट जाएगा। तू वहाँ पहुँच जाएगा, जहाँ न मौत है न पैदाइश है।'' गुरु अमरदेव जी कहते हैंः

अनेक जोनि भरमाए बिन सतगुरु मुक्ति न पाए।
फिर मुक्ति पाए लग चरणी सतगुरु शब्द सुनाए॥

सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ॥

जब सतसंगी के अंदर शब्द प्रगट हो जाता है, वह अंदर गुरु से मिलाप कर लेता है, तब दुनिया में होका देकर कहता है, ''भाइओ! गुरु की दात को चोर चुरा नहीं सकता, आग जला नहीं सकती, हवा उड़ा नहीं सकती। सतगुरु जीवन दाता है। सारी दुनिया का सोना-चाँदी उस दात का मूल्य नहीं दे सकता।''

सतिगुरि मिलिए, सचु पाईआ जिन्ही विचहु आप गवाइआ॥
जिनि सचो सच बुझाइआ॥

गुरु नानकदेव जी आखिर में हमें यही हिदायत करते हैं कि गुरु वह हस्ती है जो कभी फना नहीं होती। उस सच को उस नाम को वही प्राप्त कर सकते हैं जो अपने आपको उस शब्द गुरु के हवाले कर देते हैं।

हमें भी चाहिए कि गुरु नानकदेव जी के कहे मुताबिक शब्द-नाम की कमाई करें। अपने अंदर से हौमें अहंकार को निकाल कर उस परमात्मा के बन्दे बनें। कबीर साहब कहते हैंः

तू तू करदया तू होया मुझमें रही ना हूँ।
जब आपा परका मिट गया ते जित देखा तित तूं॥

❁❁❁

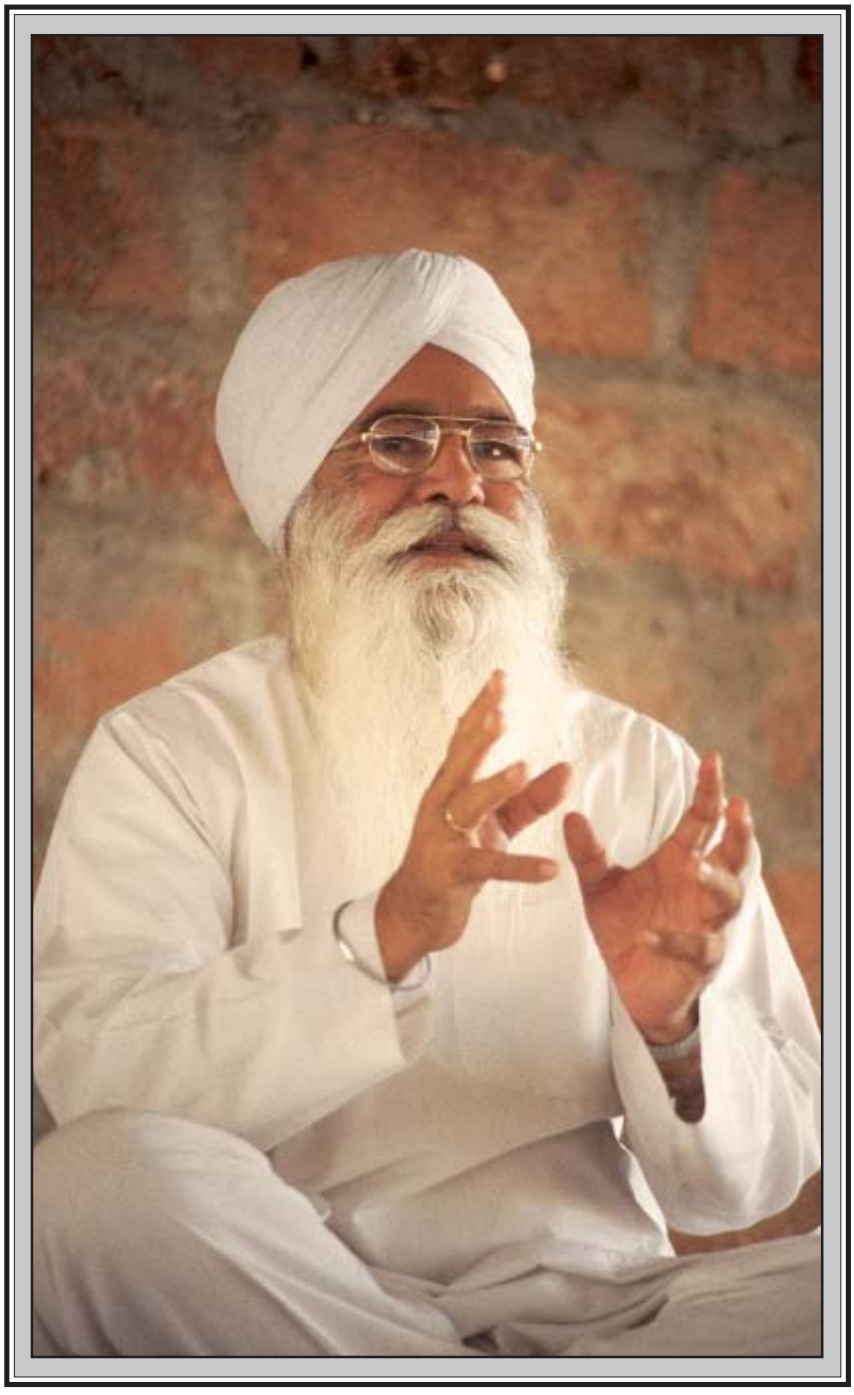

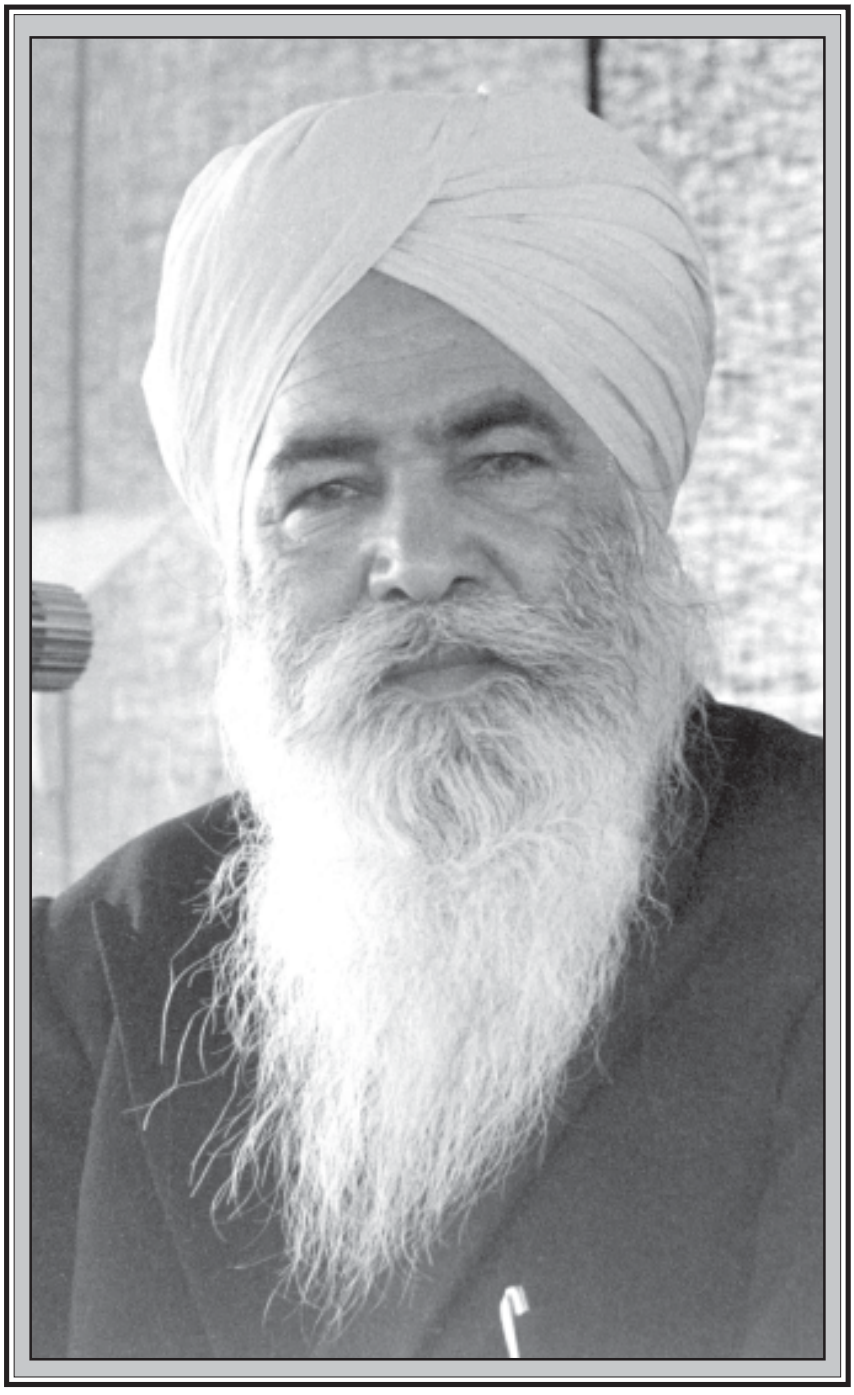

पाँच

धर्म-कर्म

सन्त-महात्मा, वली, फकीर जब भी इस संसार में आते हैं वे अपने सतसंगों में रीति-रिवाज नहीं रखते। किसी कर्मकांड को महानता नहीं देते। अपने शिष्यों, सतसंगियों को 'शब्द-नाम' और 'सुरत-शब्द' का अभ्यास ही बताते हैं।

सन्त-महात्मा किसी को अपनी खड़ावों और कपड़ों के साथ बाँधने के लिए नहीं आते। वे सबको नाम जपना, अंदर जाना और परमात्मा से मिलना ही सिखाते हैं। लेकिन अफसोस से कहना पड़ता है कि महात्माओं के जाने के बाद दुनिया बाहरमुखी हो जाती है। रीति-रिवाजों में ही मुक्ति समझने लगती है। धर्म पुस्तकों की तालीम को समझने की कोशिश नहीं करती बल्कि उनके ग्रन्थों को भगवान का भेजा हुआ कहती है।

हम जानते ही हैं कि ग्रन्थ, पुस्तकें देह धारकर ही लिखे जाते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी ने उस समय के प्रचलित रीति-रिवाजों को परमात्मा के आगे पाखंड कहकर बयान किया है:

कर्म धर्म पाखंड जो दीसे तिस जम जोगाती लूटे।

सच्चाई तो यह है कि आप चाहे जितने भी अच्छे से अच्छे कर्मकांड कर लो! यमों की मार से नहीं बच सकते।

बस इतना कहते ही मुसलमानों ने हंगामा खड़ा कर दिया। उस समय के बादशाह जहांगीर को बहका दिया गया कि मौहम्मद साहब की लिखी हुई कुरान तो आकाश से उतरी हुई है। गुरुग्रन्थ साहब में इस्लाम की निन्दा की गई है। जहांगीर ने गुरुग्रन्थ साहब को छह बार तलब किया। इसका एक-एक अक्षर पढ़ा

गया लेकिन इसमें किसी समाज की निन्दा और आलोचना नहीं पाई गई। इसमें सच्चाई बताई गई है कि सतगुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं। सतसंग के बिना हमें अपनी गलतियों का पता नहीं चलता।

बड़े अफसोस से कहना पड़ता है कि उस समय की हुकूमत ने गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया। आपके सिर में गर्म रेत डाली गई। आपके सगे बड़े भाई ने उस समय की सरकार के पक्ष में होकर आपको ये सारे कष्ट दिलवाए। आपका कसूर यही था कि आपने लोगों को सच्चाई बताई कि इन्सान का जामा अमोलक है। आप सच्चे मुसलमान बनो! सच्चे हिन्दू बनो! मुसलमान उसे कहा गया है जिसका दिल मोम जैसा है। जिसमें सब्र और सन्तोष है। जो परमात्मा के भाणे में रहता है।

जरा सोचकर देखो! अगर गलती से हमारा हाथ किसी गर्म जगह लग जाए! अगर हम गर्म रेत पर नंगा पैर रख दें तो किस तरह तड़प उठते हैं! उस महात्मा के साथ क्या बीती होगी जिसे इस तरह के गैरमनुखी कष्ट दिए गए।

कृष्ण भगवान की लिखी हुई गीता पढ़ने से पता चलता है कि उन्होंने अपनी तरफ से कोई भी कर्मकांड नहीं चलाया। पवित्र होने पर जोर दिया। लेकिन अफसोस से कहना पड़ता है कि उनके जाने के बाद उनके ही अनुयायी स्वांग बनाकर उनके नाम पर पैसे माँगने लग गए।

गुरु गोविंदसिंह जी ने अपने ग्रन्थ में राम और सीता की कहानी लिखी है, जिसमें उन्हें बहुत अच्छा इन्सान बताया गया है। सीता बहुत अच्छे धर्म-कर्म वाली औरत हुई है। अफसोस कि लोग राम-सीता का स्वांग बनाकर नाचते और पैसे मांगते हैं।

शेख बरम ने जब लोगों को ऐसे स्वांग बनाकर नाचते हुए

देखा तो गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''ये लोग जो रास कर रहे हैं क्या यह ठीक है?'' गुरु नानकदेव जी शेख बरम को उस सच्ची रास के बारे में बताते हैं जो रोजाना ही परमात्मा के घर में हो रही है, जिसे सन्त हमेशा ही देख रहे हैं।

घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कन्ह गोपाल॥

गुरु नानकदेव जी शेख बरम से कहते हैं कि हम तुझे परमात्मा के घर की रास के बारे में बताते हैं। चार घड़ियाँ और आठ पहर हैं। गोपियाँ घड़ियाँ हैं। कृष्ण के साथी ग्वाले पहर हैं।

गहणे पउणु पाणी बैसतरु चंदु सूरजु अवतार॥

पवन, पानी गहने हैं। चाँद सूरज इसका शृंगार हैं जो दिन-रात रोशनी देकर जीवों की मदद करते हैं। हिन्दू शास्त्रों में जो देवता प्राणों वाली देह धारण करके आए, उसे अवतार कहते हैं। चौबीस अवतार माने जाते हैं। अवतार उसे कहते हैं जो माता के पेट से न जन्मा हो, प्रगट हुआ हो। राम और कृष्ण को अवतार माना जाता है लेकिन उनके माता-पिता का भी जिक्र आता है।

सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल॥

आप कहते हैं कि धरती जीवों के खाने के लिए पदार्थ पैदा करती है। जीव जिन जंजालों में फंसा हुआ है वे बर्तन हैं।

नानक मुसै गिआन विहूणी खाई गइआ जमकालु॥

आप प्यार से कहते हैं कि ज्ञान न होने के कारण, शब्द-नाम प्रगट न होने के कारण आखिर यम इसे खा जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जो पैदा हुआ है वह नष्ट होगा। सिर्फ परमात्मा ही कायम रहेगा।''

वाइनि चेले नचनि गुर॥ पैर हलाइनि फेरन्हि सिर॥

रास धारिए गुरु गांवों-शहरों में कृष्ण का स्वांग बनाकर नाचते हैं और उनके चेले साज बजाते हैं। जब वे इस तरह की रास रचाते हैं तो बैठे हुए लोग उन्हें देखते हैं। लेकिन नाचते हुए जब गुरु का पैर ठीक नहीं पड़ता तो सब लोग सिर फेरकर कहते हैं कि यह ठीक नहीं। दोबारा करो।

आप सोचकर देखो! कृष्ण, जो त्रिलोकी का मालिक था, ये लोग आज उसका स्वांग धारण करके पैसे मांग रहे हैं। भाई गुरदास जी कहते हैं:

सिख बैठन घरां विच गुरु चल तनाड़े घर जाई।
चेले साज वजायेन्दे नच्चण गुरु बहु विधू भाई॥

हमारा या गुरु नानक जी का प्रयोजन किसी की आलोचना करना नहीं है। गुरु नानक जी ने जो कुछ अपनी आँखों से देखा और जो कुछ आज हो रहा है वही बानी में बयान किया है।

उडि उडि रावा झाटै पाइ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइ॥

विदेशों में जहाँ डांस होते हैं, वह जगह पक्की होती है, लेकिन हिन्दुस्तान में तो रेत होता है। ये लोग छलाँगें मार-मारकर नाचते हैं तो रेत उड़कर लोगों के मुँह और सिर में पड़ती है। देखने वाले लोग अपने घरों में जाकर खूब हँसते हैं।

रोटीआ कारणि पूरहि ताल॥ आपु पछड़हि धरती नालि॥

बच्चे घरों में जाकर अपने माता-पिता को उन नाचने वालों के बारे में बताते हैं तो माता-पिता बच्चों को समझाते हैं कि ये सचमुच के कृष्ण या गोपियाँ नहीं। ये बेचारे तो यह सब रोटी के लिए कर रहे हैं।

गावनि गोपीआ गावनि कान्ह॥ गावनि सीता राजे राम॥

उनमें से कोई गोपी-कान्ह और कोई सीता-राम बनकर गाते हैं। आप सोचकर देखो! हम उन महापुरुषों का इससे ज्यादा और क्या निरादर कर सकते हैं।

निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥ जा का कीआ सगल जहानु ॥

सिर्फ वह परमात्मा ही भय से रहित है; उसका 'नाम' जपने के काबिल है।

सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥ भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥

जब शिष्य महात्मा के पास आकर कहता है कि मैं दुखी हूँ; मुझे मुक्ति का साधन बताकर मुझ पर दया करो। महात्मा उसे कहते हैं कि गृहस्थ में रहते हुए अपनी जिम्मेवारियों को निभाते हुए शब्द-नाम की कमाई करो। सुबह उठकर दो-तीन घंटे समय लगाओ। जो कीर्तन परमात्मा ने तेरे अंदर जारी किया है, तू उस कीर्तन के साथ जुड़ और अपने आपको उसके हवाले कर दे।

सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ नदरी करमि लघाए पारि ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि वही शिष्य है जिसके पास गुरुओं की शिक्षा है। गुरुओं की शिक्षा यही है कि तू भजन-सिमरन कर, नाम जप। जब हम दुनियावी पिता के कहे मुताबिक काम करते हैं तो वह हम पर खुश हो जाता है। हमें अपनी कमाई हुई दौलत भी दे जाता है।

सन्त हजारों माता-पिता जैसा प्यार लेकर संसार में आते हैं। वे हमसे कुछ छिपाते नहीं। उन्हें परमात्मा ने रुहानियत की जो दौलत दी होती है, वे उसे लेकर शिष्य के अंदर बैठ जाते हैं। गुरु-घर में नाम जपने वालों की सेवा करने वालों की ही कद्र है।

कोलू चरखा चकी चकु ॥ थल वारोले बहुतु अनंतु ॥

आप शेख बरम से कहते हैं, ''प्यारेआ! तूने जो इन रास करने वालों को जमीन पर घूमते हुए देखा है, अगर ऐसे घूमने से ही परमात्मा मिलता होता तो तिलों में से तेल निकालने वाला कोल्हू जो सारा दिन ही घूमता रहता है उसे मुक्त हो जाना चाहिए। इसी तरह चाक और कुम्हार की बाजू भी सारा दिन घूमती रहती है। उसे भी मुक्त हो जाना चाहिए।''

लादू माधाणिआ अनगाह॥ पंखी भउदीआ लैनि न साह॥

बच्चे जिन लट्टुओं से खेलते हैं, मथानियाँ जिनसे दूध बिलौते हैं वे भी बहुत घूमती हैं। अनल पक्षी जो सारा दिन आकाश में घूमता है उसे भी मुक्त हो जाना चाहिए।

सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत॥ नानक भउदिआ गणत न अंत॥

बच्चों के झूलने का हिण्डोला बच्चों को बिठाकर कितने ही चक्कर लगाता है। अगर चक्कर लगाने से मुक्ति होती हो तो बच्चों और उस हिण्डोले को भी मुक्त हो जाना चाहिए।

बंधन बंधि भवाए सोइ॥ पइऐ किरति नचै सभु कोइ॥
नचि नचि हसहि चलहि से रोइ॥ उडि न जाही सिध न होहि॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''देख प्यारेआ! ये लोग रोटी और धन के लिए नाचते हैं। इन्होंने पिछले जन्मों में बुरे कर्म किए हैं। अब फिर ये बुरे कर्म कर रहे हैं। न ये सिद्ध पुरुष बनेंगे न ही मुक्त होंगे।''

नचणु कुदणु मनि का चाउ॥
नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ॥

नाच-कूदकर हम मन को ही खुराक दे रहे हैं। मालिक के

प्यारों को परमात्मा का डर भी है और परमात्मा से प्यार भी है। ये ऐसा लोक-दिखावा नहीं करते।

नाउ तेरा निरंकारु है नाई लइऐ नरकि न जाईऐ॥

अब गुरु नानकदेव जी महाराज परमात्मा की तारीफ करते हैं कि हे परमात्मा! तू ही जीवों पर दया कर सकता है। सन्तमत में 'नाम' को ही मुख्य माना गया है। यह नाम लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता।

आप डंके की चोट पर कहते हैं कि उस 'नाम' को प्राप्त करने वाला कभी भी नरक में नहीं जाएगा। तुलसी साहब ने कहा है:

सोना काई न गले, लोहा घुन न खाए।
बुरा भला गुरु भक्त, कदे नर्क न जाए॥

जिउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि परमात्मा ने आपको यह शरीर और इस शरीर में रहने वाली आत्मा दी है। उसी परमात्मा ने आपको और बहुत सी दातें दी हैं जिसके लिए हमें उसका आभारी और शुक्रगुजार होना चाहिए।

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे कि आप दाएँ हाथ से दान दो तो बाएँ हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए।

गुरु नानकदेव जी तो यह भी कहते हैं कि अगर आप अच्छे कर्म करते हैं तो यह भी सोचो कि आपने बुरे कर्म भी किए हैं। अच्छे कर्म करने पर भी आप अपने आपको नीच और पापी समझो। यह परमात्मा की दया ही है कि आपको कुछ अच्छे काम करने का मौका मिला।

बाबा सावन सिंह जी आमतौर पर एक कंजूस व्यापारी की कहानी सुनाया करते थे जो कभी किसी को कुछ नहीं देता था। उसकी पत्नी बहुत अच्छी थी। वह पंडितों, गरीबों और जरूरतमंद लोगों को कुछ देना चाहती थी। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकती थी क्योंकि उसका पति बहुत कंजूस था।

एक दिन वह कंजूस व्यापारी अपनी पत्नी के कहने पर गंगा नदी के किनारे एक ऐसे पंडित को ढूँढने गया जो ज्यादा दान-दक्षिणा न मांगे। उसे चार पंडित मिले जो कर्मकांड में लगे हुए थे। व्यापारी ने उनसे पूछा, ''पंडित जी! आप कितना खाना खा सकते हैं?'' उन पंडितों ने कहा कि वे दस किलो घी, पाँच किलो मिठाई, दूध इत्यादि खा लेंगे क्योंकि वे इतना सब खाने के आदी हैं। व्यापारी ने सोचा, ये पंडित तो बहुत खाते हैं इसलिए वह वहाँ से चल पड़ा।

आगे चलकर उसने एक ऐसा पंडित ढूँढ लिया जो बहुत कमजोर था। व्यापारी ने सोचा यह पंडित मेरे लिए ठीक रहेगा क्योंकि यह ज्यादा नहीं खा सकेगा मैं इसे ले जाता हूँ। मेरी पत्नी खुश हो जाएगी। व्यापारी ने उससे पूछा, ''पंडित जी! आप कितना खा सकते हैं?'' पंडित उसके दिल की बात समझ गया कि यह कंजूस आदमी है। पंडित ने कहा, ''मैं बहुत कमजोर हूँ, हमेशा बीमार रहता हूँ ज्यादा नहीं खा सकता, थोड़ा सा रूखा-सूखा खा लूँगा।'' व्यापारी ने घर आकर अपनी पत्नी से कहा, ''मैं तुम्हारे लिए एक पंडित ढूँढ लाया हूँ यह जो माँगे इसे दे देना।'' यह जानकर व्यापारी की पत्नी बहुत खुश हुई।

व्यापारी की पत्नी ने पंडित से पूछा कि आपको क्या चाहिए? पंडित ने कहा कि दस किलो दूध, पांच किलो घी, पन्द्रह किलो मिठाई, कुछ कपड़े, कुछ सामग्री और एक हजार रुपये दाँत

घिसाई दो। ये सब लेकर पंडित अपने घर चला गया। पंडित डरा हुआ था कि उसने एक कंजूस व्यापारी को धोखा दिया है। उस पंडित ने सब चीजें अपनी पत्नी को देकर कहा, तुम ये सब चीजें संभालकर रख लो कहीं वह कंजूस इन्हें वापिस लेने न आ जाए।

पंडित की पत्नी बहुत चालाक थी। उसने कहा, ''तुम चिन्ता मत करो। बिस्तर पर लेटकर कराहो कि जैसे तुम बीमार हो।'' जब कंजूस व्यापारी को यह सब पता चला तो वह सीधा पंडित के घर जा पहुँचा। वहाँ जाकर उसने देखा कि पंडित कराह रहा है जैसे वह मरने वाला हो। उसकी पत्नी भी जोर-जोर से रोकर कहने लगी, ''पता नहीं पंडित जी आज किसके घर से खाना खाकर आए हैं। उस खाने में जहर मिला होगा, जो यह मरने वाले हैं। अब क्या होगा? मेरे पास तो दवाई के लिए भी पैसे नहीं हैं।''

जब उस व्यापारी ने यह सब सुना तो वह डर गया कि हो सकता है, पुलिस इस मामले की जांच करे! क्योंकि पंडित खाना तो उसके घर से ही खाकर आया था। इस डर की वजह से व्यापारी ने पंडित की पत्नी को और रुपये देकर कहा कि पंडित को डाक्टर से दवाई दिलवाओ। कंजूसों की यही हालत है।

जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ॥

शेख बरम ने गुरु नानक जी से कहा, ''मेरे पास रूहानी ताकत है। यमराज भी मुझे छू नहीं सकता।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''शेख बरम! अगर तुम बलवान हो तो बुढ़ापे को रोककर दिखाओ। अगर तुम सदा ही जवान रहकर दिखाओ तो मैं तुम्हारी ताकत को मान लूँगा।''

जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ॥
को रहै न भरीऐ पाईऐ॥

जब हमारे सांस पूरे हो जाते हैं तो हम इस संसार में नहीं रह सकते। आजकल लोग कई धर्मों से जुड़े हुए हैं। कई तरह के भाषण देते हैं। मुक्ति की बातें करते हैं लेकिन वे यह नहीं जानते कि मुक्ति क्या है? हम पिछले किए हुए कर्म इस जन्म में भुगत रहे हैं और अब जो कर्म करेंगे उन्हें आगे भुगतेंगे। अगर हम अच्छे कर्म करेंगे तो आने-जाने के चक्कर से मुक्त हो जाएंगे।

आज कलियुग में **धर्म-कर्म** पूरे जोर पर हैं। अब लोगों ने धर्म गुरुओं-कबीर साहब, गुरु नानक जी पर फिल्में बना दी हैं। लोग अपने परिवार के साथ ये फिल्में देखने जाते हैं। मैंने सुना है, ऐसी धार्मिक फिल्में बनाने वाले गर्व से कहते हैं कि हम धार्मिक फिल्मों से ज्यादा कमा लेते हैं। ऐसी धार्मिक फिल्में देखने वाले सोचते हैं कि उनके पाप धुल जाएंगे और उन्हें कुछ ज्ञान भी मिलेगा। लेकिन उन्हें फिल्में देखने की लत पड़ जाती है।

आप जानते हैं कि सन्तों की बानियाँ हमारे सुधार के लिए होती हैं लेकिन आज के औरतें-आदमी वासना में पड़कर अपनी जिंदगी बरबाद कर रहे हैं।

सन्त किसी की निन्दा नहीं करते। वे कहते हैं कि हमें अपने जीवन को पवित्र रखना चाहिए। सतसंग में हाजरी लगाकर सन्तों के बताए हुए रास्ते पर चलकर अपने जीवन को सुधारना चाहिए।

❁❁❁

छह

आत्मा की खुराक

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे किसी की निन्दा नहीं करते और न ही अपने शिष्यों को किसी की निन्दा करने देते हैं। गुरु नानकदेव जी का मकसद किसी धर्म या सम्प्रदाय की निन्दा करना नहीं, सच का ज्ञान देना था। सन्त-महात्माओं का जाति तजुर्बा है कि हम जब तक अंदर नहीं जाते, शब्द को नहीं सुनते; मुक्त नहीं हो सकते। निन्दा परमारथ की जड़ काटती है।

बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''हर इन्सान के पास दो थैलियाँ होती हैं; एक आगे और एक पीछे। अगली थैली में दूसरों के गुण और पिछली थैली में उसके अपने गुण भरे होते हैं। इसलिए वह दूसरों के गुण-दोष बयान करता है, लेकिन अपने अवगुण नहीं देखता।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''लोग हमेशा दूसरों की कमियों को देखकर उनका मजाक उड़ाते हैं, वे अपनी कमियों की तरफ नहीं देखते।''

बाबा बिशनदास जी अक्सर एक कहानी सुनाया करते थे कि एक अमीर आदमी के पास एक नौकर था जो बहुत अच्छा खाना बनाया करता था। एक दिन उसने नौकर से कहा कि आज कुछ मेहमान आ रहे हैं, उनके लिए अच्छे खाने बनाओ। नौकर ने कई तरह के खाने बनाकर उन खानों को जीभ की शक्ल दे दी। उसके मालिक ने खानों को देखकर कहा, ''तुमने सब खानों को जीभ की शक्ल क्यों दी है?'' नौकर ने कहा, ''अगर जीभ मीठे वचन बोलती है तो दुश्मन भी मित्र बन जाते हैं।''

अगले दिन उस अमीर आदमी ने अपने नौकर से खराब

खाने बनाने के लिए कहा। नौकर ने फिर से सभी खानों को जीभ की शक्ल दे दी। अमीर आदमी ने नाराज होकर पूछा, ''यह सब क्या है?'' नौकर ने कहा, ''मेरे मालिक! अगर यह जीभ कड़वे शब्द बोले तो लड़ाई-झगड़े हो सकते हैं। कौरवों-पाण्डवों के युद्ध का कारण भी यही जीभ थी।''

शेख बरम ने गुरु नानक जी से पूछा, ''हिन्दू मरे हुए को जला देते हैं और मुसलमान दफना देते हैं। इसमें से कौन सा तरीका ठीक है?'' उन दिनों भारत में हिन्दू और मुसलमान दो ही फिरके थे। सन्त-महात्मा ईसाई देशों में नहीं जा पाते थे इसलिए इन दो ही धर्मों का जिक्र आता है।

मुसलमानों के धर्म में लिखा है कि जिन्होंने बुरे कर्म किए हैं नरक की आग भी उन्हें जलाने से इंकार कर देती है और जिन्हें दफनाया जाता है वे स्वर्गों में जाते हैं। प्यारेओ! आप देखते हो कि कुछ को जलाया जाता है, कुछ को दफनाया जाता है, कुछ को पानी में बहा दिया जाता है और कुछ को जानवर खा जाते हैं। मगर लोग यह नहीं जानते कि इस शरीर के अंदर जो आत्मा थी उसकी मुक्ति हुई या नहीं! लोग सिर्फ कर्मकांडों में ही उलझे हुए हैं।

जब गुरु नानक जी मक्का गए तो वहाँ के धार्मिक लोगों ने पूछा कि परमात्मा के दरबार में हिन्दू अच्छे हैं या मुसलमान अच्छे हैं? आपने जवाब दिया, ''अपने कर्मों की वजह से हिन्दू और मुसलमान दोनों ही रोते हैं। परमात्मा की भक्ति करने के बाद दोनों ही आपस में लड़ते हैं और अपने आपको अच्छा कहते हैं।''

कबीर साहब से भी ऐसा ही सवाल किया गया था। आप एक मुस्लिम परिवार में पैदा हुए थे। आपका पालन-पोषण काशी के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। इसलिए हिन्दू और मुसलमान

दोनों ने आपसे पूछा कि आप हिन्दू हैं या मुसलमान? कबीर साहब ने कहा, ''न मैं हिन्दू हूँ न मुसलमान। मेरा शरीर और मेरी आत्मा उस परमात्मा की है। जला देने या दफना देने से मुक्ति नहीं मिलती।''

मुस्लिम धर्म में यह भी कहा गया है कि जो आदमी रोज़ाना नमाज पढ़ता है और तीस दिन तक रोज़े रखता है वही सच्चा मुसलमान है। अगर मस्जिद का इमाम टाँगें नंगी करके नमाज पढ़ता है तो उसकी नमाज स्वीकार नहीं होती। मुस्लिम धर्म के अनुसार औरतों को मस्जिद में नमाज पढ़ना मना है।

इसी तरह हिन्दू धर्म में जो माथे पर तिलक लगाए, जनेऊ पहने, मूर्ति पूजा करे, गायत्री मन्त्र व अन्य मन्त्रों का जाप करे और तीर्थ यात्राएँ करे, वही हिन्दू कहलवाता है।

गुरु नानक जी के समय में हिन्दुस्तान में बहुत से योगी थे, जो लाठी लेकर चलते, कानों में बालियाँ पहनते, गोरखनाथ की शिक्षा पर चलकर 'अलख-अलख' बोलते थे। इन योगियों का लक्ष्य दसवें द्वार तक पहुँचना था।

मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु॥
बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु॥

मुसलमान वे ही किताबें पढ़ते हैं जिनमें उनके धर्म के कानून लिखे होते हैं। वे कहते हैं कि जो इन्सान इन नियमों को मानता है, खतना करवा लेता है वही परमात्मा को पा सकता है।

इस दुनिया में सब धर्मों के अपने-अपने नियम हैं इसीलिए कई किस्म के झगड़े हैं। हम सब यही कहते हैं कि हमारा धर्म ठीक है, हम ही स्वर्ग में जाएँगे। सन्त हमें समझाते हैं कि हम सच्चाई को समझें और ऊपरी दिखावे पर न जाएँ।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जब बच्चा पैदा होता है उस पर कोई लेबल नहीं लगा होता कि वह हिन्दू है या मुसलमान है।'' आप हमेशा कहते, ''सच्चाई के मार्ग पर चलो! 'शब्द-नाम' की कमाई करो।'' लेकिन हम शब्द-नाम की कमाई नहीं करते। कर्मकांडों और रीति-रिवाजों में उलझ जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि कुरान एक पवित्र किताब है। पैगम्बर मौहम्मद एक महान सन्त थे। फिर भी मुसलमानों में कम से कम सत्तर किस्म के धर्म बन गए। आप जानते हैं, मुसलमानों में शिया और सुन्नी दो धर्म हैं जिनमें रोज ही झगड़े होते रहते हैं।

इसी तरह ईसामसीह एक है। बाईबल की शिक्षा सबके लिए एक है फिर भी इसकी कई शाखाएं हैं। दूसरे विश्व युद्ध के समय मुझे बाहर जाने का मौका मिला। मैंने वहाँ देखा कि ईसाई ईसाइयों को मार रहे थे।

जब मैं केलीफोर्निया गया तो वहाँ के प्रेमियों ने मुझे बताया कि वे कैथलिक धर्म के हैं। मैंने उनसे कहा कि आप रसल पर्किन्स से बात करें क्योंकि उसे बाईबल के बारे में जानकारी है। मेरे कहने का भाव अगर किसी एक धर्म को मानने वाले ज्यादा हो जाते हैं तो वे दूसरे धर्म को जानना ही नहीं चाहते। अपने धर्म को ही ठीक समझते हैं।

इसी तरह गुरुग्रन्थ साहब में गुरु नानक साहब से गुरु गोविंदसिंह जी तक की शिक्षाएँ हैं। ये शिक्षाएँ सब सिक्खों के लिए हैं, इसमें गुरुओं ने 'शब्द-नाम' के बारे में जिक्र किया है फिर भी सिक्ख धर्म की पचास से ज्यादा शाखाएं हैं।

इसी तरह हिन्दू धर्म में एक गीता और एक कृष्ण भगवान

हैं। फिर भी इस धर्म की शाखाओं का कोई अन्त नहीं। कृष्ण और गीता को मानने वालों की शाखाओं का भी कोई अन्त नहीं।

पिछले समय में 'सुरत-शब्द' का भेद देते समय महात्माओं को हिन्दू-मुसलमान दो धर्मों का ही सामना करना पड़ता था। लेकिन आज के जमाने में महात्माओं को सात सौ किस्म के धर्मों का सामना करना पड़ता है। आप सोचकर देखो! आज सन्तों के लिए सन्तमत का काम कितना मुश्किल हो गया है।

हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु॥
तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि हिन्दू लोग परमात्मा की मूर्ति के आगे धूप जलाकर, फूल चढ़ाकर पूजा करते हैं और सोचते हैं कि इन कर्मकांडों से परमेश्वर के दर्शन कर लेंगे। लेकिन यह संभव नहीं, क्योंकि मूर्ति बेजान होती है। यह अपनी तरफ नहीं खींच सकती। पहले जमाने में जहाँ कहीं कोई महात्मा भक्ति कर रहा होता था, वहाँ भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। उस जगह को शुद्ध रखने के लिए अगरबत्ती जलाई जाती थी लेकिन आजकल सफाई रखने के लिए बहुत साधन बन गए हैं।

जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु॥
सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि पहले के समय में योगी अलख नाम को जपते हुए त्रिकुटी से दसवें द्वार में पहुँचते थे। लेकिन आजकल के योगियों की यह हालत है कि हाथ में डंडा, कान में बाली और गोरखनाथ की तरह सिर पर साफा बाँधकर अपने आपको योगी कहलवाते हैं। लेकिन ये नाम-मात्र के योगी होते हैं अभ्यास, साधना नहीं करते।

सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै के वीचारि॥
दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु॥

दानिओं को दान देकर ही तृप्ति मिलती है क्योंकि वे दान के बदले इस दुनिया में ही कुछ पाने की इच्छा रखते हैं। दानी चाहते हैं कि उनका इस दुनिया में नाम हो। वे भगवान से कहते हैं कि हे भगवान! हमें और दे ताकि हम ज्यादा दान कर सकें और हमारा नाम हो।

चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार॥
इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार॥

अब गुरु नानक जी कहते हैं कि चोर मक्कार और इस तरह के झूठे व्यापारी सोचते हैं चाहे चोर चोरी करे, व्याभिचारी किसी स्त्री का संग करे, झूठा झूठ बोले; कोई पूछने वाला नहीं।

गुरु नानक जी बहुत अफसोस के साथ कहते हैं कि पिछले कर्मों की वजह से यह अनमोल मनुष्य जामा मिला जिसे ये पाप करके यूं ही गंवा रहे हैं, साथ क्या ले जाएंगे?

जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार॥
ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार॥
नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु॥

अब गुरु नानकदेव जी उस परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे मालिक! ये आत्माएं चाहे पानी में जन्मी हों, पशु-पक्षियों के जामे में हों, धरती पर रहती हों या आकाश में उड़ती हों; ये सब आपका यश गाती हैं। आप इनकी जरूरतें पूरी करते हैं। यह आपके नाम की ही महिमा है कि आपके बच्चे इस दुनिया में चल-फिर रहे हैं।

सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥

परमात्मा के प्यारे दिन-रात 'शब्द-नाम' में मस्त रहते हैं और अपने आपको परमात्मा के चरणों की धूल समझते हैं।

मिट्टी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥
जलि जलि रोवै बपुड़ी झाड़ि झाड़ि पवहि अंगिआर ॥
नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥

गुरु नानकदेव जी शेख बरम को जवाब देते हैं कि आमतौर पर कब्र की मिट्टी नरम होती है। यह मिट्टी धीरे-धीरे इस तरह बदल जाती है जैसे दुनिया बदलती है। एक समय ऐसा आता है कि कोई पहचान भी नहीं पाता कि यहाँ कभी कब्र भी थी। कुम्हार कब्र की मिट्टी से बर्तन, घड़े इत्यादि बनाता है। जब उन बर्तनों को भट्टी में जलाया जाता है तो यह मिट्टी रोती है।

आप कहते हैं, ''मैं किसी धर्म की निन्दा नहीं करना चाहता। यह सिर्फ परमात्मा ही जानता है कि कौन स्वर्ग में जाता है और कौन नरक में जाता है। हे शेख बरम! आओ, हम शब्द-नाम की कमाई करें ताकि असलियत जान सकें।''

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥
सतिगुर मिलाऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु माहु चुकाइआ ॥
उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥
जगजीवनु दाता पाइआ ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मैं आपको सच कहता हूँ कि सतगुरु के बिना कोई परमात्मा को नहीं पा सकता। परमात्मा

ने खुद ही सतगुरु को अपने तक पहुँचने के लिए बिचौलिया बनाया हुआ है। परमात्मा के हुक्म से ही सतगुरु से मिलाप होता है।''

जब गुरु मिल जाता है वह 'नाम' दे देता है। जो नाम की कमाई करता है, वह दुनिया से कुछ नहीं छिपाता। खुले आम कहता है, ''मुझे सतगुरु मिल गया है, अब मैं मुक्त हूँ।'' जो लोग शब्द-नाम की कमाई करते हैं उनका सांसारिक रसों-कसों से मोह छूट जाता है वे मुक्त हो जाते हैं। हमारे जीवन के वही क्षण अच्छे हैं जो हमने शब्द-नाम की कमाई में लगाए हैं।

अगर हम नाम लेने के बाद 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं और गुरु के वचनों का पालन करते हैं तो जो परमात्मा हमारे अंदर बैठा है हमें उसके दर्शन अपने आप ही होने लग जाते हैं।

इस तरह गुरु नानकदेव जी ने शेख बरम को उसके सारे सवालों के जवाब दिए और यह भी बताया कि नाम के खज़ाने से ही मुक्ति प्राप्त होती है।

महात्माओं ने सतसंग की महिमा गाई है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सैकड़ों जरूरी काम छोड़कर सतसंग में जाओ। हजारों जरूरी काम छोड़कर भजन में बैठ जाओ। जब तक आत्मा को खुराक नहीं दे लेते, तन को खुराक मत दो। जिस तरह तन की खुराक भोजन है उसी तरह **आत्मा की खुराक** भजन है।''

❁❁❁

सात

अहंकार

सन्त-महात्मा जब भी इस संसार में आए, उन मालिक के प्यारों ने हमें मनुष्य जामे का मूल्य बताया। महात्मा समझाते हैं कि पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों की वजह से हमें यह मनुष्य जन्म मिला है। इस चोले में ही हम परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा को पा सकते हैं।

महात्मा सिर्फ ज्ञान ही नहीं देते बल्कि यह वायदा भी करते हैं कि अगर हम बाहर से ध्यान हटाकर अंदर 'शब्द-नाम' के साथ जुड़ें तो वह वहाँ भी हमारी मदद करते हैं।

इसी तरह जब भी सन्त-महात्मा दुनिया में आए तो उन्होंने हमें मनुष्य जामे की कीमत समझाई और अंदर जाने की प्रेरणा भी दी। सन्तों ने हमें खोलकर समझाया कि इस शरीर में कौनसे बुरे तत्व हमें धोखा देते हैं। कौनसे अच्छे तत्व हमें भक्ति की तरफ ले जाते हैं; परमात्मा के घर पहुंचने में हमारी मदद करते हैं।

महात्मा रविदास जी कहते हैं, ''ये पाँच डाकू कभी शान्त नहीं होते। ये हमारे अन्दर ऐसी आग पैदा कर देते हैं, जो बढ़ती ही जाती है। हम इन्हें जितना खिलाते हैं ये उतना और माँगते हैं। ये डाकू इन्सान तो क्या, जीव-जन्तुओं को भी नहीं छोड़ते।''

इन पाँच डाकुओं की माँ चालाकी है। ये कहती है कि तुम्हारा इस दुनिया में आना तभी सफल है जब तुम धन, शोहरत इकट्ठा कर लो और किसी बिरादरी या संस्था के नेता कहलवाओ।

इस तरह ये पाँचों भाई हमारे अंदर आ जाते हैं; **अहंकार** इन सबका नेता है। सबसे पहले हमारे अंदर अहंकार आता है

फिर यह अपने और भाइयों के लिए दरवाजा खोलकर इन्हें भी अंदर बुला लेता है।

शुरू-शुरू में ये पाँचों डाकू अच्छे लगते हैं। **अहंकार** हमें बताता है कि दूसरों की तरह तुम्हारा भी इस धरती पर रहने का हक है। तुम आज़ाद हो। तुम्हारे बच्चे भी आज़ाद होने चाहिए। तुम्हारे पास भी वह सब कुछ होना चाहिए जो औरों के पास है। फिर यह जीव को धीरे-धीरे प्रेरित करता है कि तुम्हारा नाम और शोहरत होनी चाहिए। इस तरह यह **अहंकार** आपके अंदर राक्षस की तरह बस जाता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि योगियों को योग का अहंकार होता है। वे कहते हैं, ''हम सबसे अच्छे हैं।'' सन्यासियों को अपने सन्यास लेने का **अहंकार** होता है। वे कहते हैं, ''हमने सब कुछ त्याग दिया है हमारे जैसा कौन है?'' पंडितों को अपनी पंडिताई का अहंकार होता है। वे कहते हैं, ''हमने सब वेद-पुराण पढ़े हैं। हमारे जैसा कौन है।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि **अहंकार** हमारा नाश कर देता है। अहंकार की वजह से परिवार में, दोस्तों में छोटे-छोटे झगड़े होते हैं। फिर देशों के बीच युद्ध होते हैं।

तुलसी साहब कहते हैं कि सोना-चाँदी और काम-वासना को त्यागना आसान है लेकिन **अहंकार**, नाम और शोहरत को त्यागना बहुत मुश्किल है।

ऋषि-मुनि भी कहते हैं कि हमने **अहंकार** और माया को त्यागा हुआ है। वे घर-बार छोड़कर जंगलों में जाकर परमात्मा की भक्ति करने में लगे हुए हैं लेकिन वे माया को नहीं त्याग सके। जो अंदर की माया से मुक्त हो जाता है वही असली साधु है।

गुरु नानकदेव जी प्यार से कहते हैं कि इस **अहंकार** की

वजह से ही हमारा बार बार जन्म-मरण होता है और हमें माता के गर्भ की आग में जलना पड़ता है।

आसा जी दी वार में गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि जीव **अहंकार** से भरा हुआ आता है और **अहंकार** में भरा हुआ ही चला जाता है। इसी **अहंकार** की वजह से यह अपने आपको चालाक समझता है और सब कुछ **अहंकार** की वजह से ही करता है।

गुरु अर्जुनदेव जी ने **अहंकार** को तपेदिक की बीमारी जैसा बताया है। जैसे मतवाले हाथी काम-वासना के लिए भटकते हैं, मधुमक्खी शहद की ओर जाती है, मछली पानी के बिना तरसती है। उसी तरह यह जीव भी अहंकार की तरफ खिंचा चला जाता है। हमें इस बीमारी से कोई नहीं बचा सकता।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''ये पाँचों लाइलाज बीमारियाँ हैं। इनका इलाज सिर्फ हमारे सतगुरु के पास है, हमें इनसे वही बचा सकता है।''

हमारी भी यही हालत है। अगर हम 'नाम' लेकर सतसंग में आकर इन पाँचों डाकुओं में से किसी एक के भी शिकार हैं, तो लोग कहेंगे कि देखो! यह सतसंग में जाता है, नाम भी जपता है फिर भी इन डाकुओं के बीच फँसा हुआ है। इसमें 'नाम' देने वाले गुरु का क्या कसूर है?

हमारे बहुत से भाई-बहन जब इन्टरव्यू में मिलते हैं तो बताते हैं कि वे मन के हाथों खिलौना बने हुए हैं। वे कहते हैं कि हमने बूढ़ों जैसे कपड़े पहने हुए हैं। क्या काम से बच जाएँगे?

भर्तरी एक बहुत अच्छा राजा था। जब उसे इन पाँचों डाकुओं ने तंग किया तो उसने अपने राज्य का त्याग कर दिया। राज्य का त्याग करने के बाद जब वह जा रहा था। उसने रास्ते में देखा

कि एक कुत्ता जिसके सिर में कीड़े पड़े हुए थे, पूँछ कटी हुई थी और शरीर जख्मों से भरा हुआ था; फिर भी वह एक कुतिया के साथ भोग-वासना करना चाहता था। राजा भर्तरी ने अपने मन को धिक्कार लगाई कि हे मन! यह कुत्ता मरने के किनारे है फिर भी इस तरफ से नहीं हट रहा।

परम पिता कृपाल कहा करते थे, ''कबूतर बिल्ली को देखकर आँखें बन्द कर लेता है कि बिल्ली मुझे नहीं दिख रही। यह मुझे कैसे देख लेगी? लेकिन थोड़ी ही देर के बाद वह अपने-आपको बिल्ली के मुँह में पाता है।''

इसलिए प्यारेओ! हमारे लिए यही बेहतर है कि हम इन डाकुओं के जाल में फँसने से पहले ही 'नाम' की कमाई करें। इन्द्रियों के भोगों से ऊपर उठकर नाम के साथ जुड़ जाएं।

हमारी देह सच्चा मन्दिर है। इसके अंदर अमृत से भरा हुआ कुआँ है। ये पाँचों डाकू इस शरीर में दाखिल होकर अमृत को पी जाते हैं। इस देह के नौं दरवाजे हैं जब हम किसी भी दरवाजे को खुला छोड़ देते हैं तो ये डाकू एक-एक करके हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। अन्त में ये पाँचों डाकू हमारे शरीर में दाखिल हो जाते हैं।

गुरु नानक जी हमें इस शब्द में प्यार से समझा रहे हैं।

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ॥
हउ विचि जमिआ हउ विचि मुआ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''यह जीव हौमें से ही आता, जाता, जन्मता और मरता है।''

हउ विचि दिता हाउ विचि लइआ॥
हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ॥

अगर यह किसी को दान देता है तो **अहंकार** करता है कि मैंने इतना दान दिया है। दान लेने वाले को भी इस बात का **अहंकार** होता है कि शायद मुझमें कोई खूबी होगी कि मैं स्कूल या मन्दिर के लिए इतना दान ला सका।

आजकल तो हम अखबारों में छपवाते हैं कि मैंने इतनी जमीन स्कूल, मन्दिर या चर्च को दान दे दी है। मुझे कई समाजों में जाने का मौका मिला है। मैंने देखा है कि अगर कोई दो-चार आदमियों को खाना खिला दे तो बड़ी-बड़ी अरदासें करता है, ''हे भगवान! तू इसे लेखे में लगाना कि हमने इतने लोगों को खाना खिलाया है; कपड़े, लोटे इत्यादि दान दिए हैं।'' लेकिन गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन बोलया सब कुछ जाणंदा किसपे करिए अरदास।

गुरु गोविंदसिंह जी कहते हैं, ''देख प्यारेआ! तू सोचता बाद में है, परमात्मा सुन पहले लेता है।'' आप अपनी बानी में लिखते हैं कि वह परमात्मा हाथी से पहले चींटी की पुकार सुनता है। यह जीव हौमें से ही पाता है और हौमें में ही गंवा देता है।

हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु॥
हउ विचि पाप पुंन वीचारु॥

आप कहते हैं कि यह **अहंकार** में ही पाप और पुण्य का निर्णय करता है। **अहंकार** में आकर ही चालाकी करता है और **अहंकार** में आकर ही झूठ बोलता है।

हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु॥
हउ विचि हसै हउ विचि रोवै॥

अहंकार की वजह से ही यह नरकों और स्वर्गों में जाता है। अहंकार की वजह से ही जगह-जगह जन्म लेता है।

हमारे पास एक ऊँट था। हमने उसकी देखभाल के लिए एक आदमी भी रखा हुआ था। वह ऊँट सीधा चलने की बजाए उल्टा चलता और उस आदमी को काटने के लिए दौड़ता था। वह आदमी उसे डंडों से पीटता था। लेकिन अफसोस! कि वह ऊँट थोड़ा समय सीधा चलकर फिर उसी तरह उल्टा चलने लग जाता था। यह सब देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ। मैंने कहा कि देख! अब तू ऊँट बन गया है, मुँह से गूँगा हो गया है लेकिन अभी भी तेरा **अहंकार** खत्म नहीं हुआ।

हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै॥
हउ विचि जाती जिनसी खोवै॥

आप कहते हैं कि यह **अंहकार** में ही सारे काम करता है। अगर अपनी जाति छोड़कर दूसरी जाति धारण करता है तो वहाँ भी अंहकार इसका पीछा नहीं छोड़ता। अगर तीर्थों पर जाकर तन की मैल धोता है, तब भी इसे अंहकार है।

हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा॥
मोख मुकति की सार न जाणा॥

आप कहते हैं कि मूर्ख और समझदार दोनों ही अंहकार में हैं। **अंहकार** की वजह से ही हमने मुक्ति की युक्ति प्राप्त नहीं की, नाम प्राप्त नहीं किया।

हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ॥
हउमै करि करि जंत उपाइआ॥

माया और उसकी परछाई अहंकार में ही है। अहंकार में ही इसने जन्म लिया।

हउमै बूझै ता दरु सूझै॥
गिआन विहूणा कथि कथि लूझे॥

अहंकार बुरी चीज़ नहीं, अगर हमें यह समझ आ जाए कि यह हमारे अंदर क्यों रखी गई है। अगर इसका ठीक तरीके से इस्तेमाल करें तो हमें अपने सच्चे घर की पहचान हो सकती है।

नानक हुकमी लिखीऐ लेखु॥
जेहा वेखहि तेहा वेखु॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि उस परमात्मा ने सबके मस्तक में लेख लिख दिए हैं। हम जिस तरह देखते हैं, परमात्मा भी हमें उसी तरह देखता है।

एक बूढ़ी औरत मूर्ति पूजा किया करती थी। एक दिन उसके दिल में ख्याल आया कि जब तक यह मूर्ति भोग नहीं लगाएगी, मैं तब तक खाना नहीं खाऊंगी। उसने मूर्ति के आगे सोने की कटोरी में दूध और थाली में रोटी रख दी। लेकिन पत्थर की मूर्ति क्या भोग लगाती? परमात्मा ने सोचा कि यह बूढ़ी औरत हठ किए बैठी है; मैं इसके पास जाकर इसकी रोटी खा आऊं।

परमात्मा एक बूढ़े कुबड़े आदमी का रूप धारण करके उस बूढ़ी औरत के घर जाकर कहने लगा, ''मैं कई दिनों से भूखा हूँ, तू मुझे रोटी दे दे।'' उस बूढ़ी औरत ने कहा, ''मेरे पास एक ही रोटी है वह मैंने ठाकुर के आगे रखी है। अगर ठाकुर भोग लगा दे तो मैं तुझे वह रोटी दे सकती हूँ।'' आखिर वह कुबड़ा आदमी निराश होकर चला गया।

परमात्मा ने फिर एक गरीब आदमी का भेष धारण करके उस बूढ़ी औरत के पास जाकर कहा, ''मेरे पेट में दर्द हो रहा है तू मुझे थोड़ी सी चाय बनाकर दे दे।'' बूढ़ी औरत ने कहा, ''दूध तो ठाकुर को भोग लगाने के लिए ही है।'' अगर उस बूढ़ी औरत को यह ज्ञान होता कि सबके अंदर वह परमात्मा बैठा है तो वह जीवित ठाकुर को अपने घर के दरवाजे से वापिस न मोड़ती।

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि॥
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि॥
हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि एह जाइ॥
हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि॥
हउमै दीरघ रोग है दारू भी इसु माहि॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि॥
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि॥

आप कहते हैं कि हौमें ही जन्म-मरण का कारण है। यह मीठी तपेदिक, दीर्घ रोग है। परमात्मा ने दया करके दवाई भी इसके अंदर ही रखी है। वह परमात्मा जिन पर अपनी दया-मेहर करता है उन्हें 'नाम' दे देता है। हम नाम की कमाई करके इस असाध्य रोग से बच सकते हैं।

सेव कीती संतोखीई जिन्ही सचो सच धिआइआ॥

आप कहते हैं कि वही सेवा कर सकता है जिसके अंदर सन्तोष है। 'शब्द-नाम' की कमाई करने वालों के अंदर **अंहकार** नहीं होता। उन्हें गुरु की तरफ से जो भी सेवा मिल जाए; चाहे जूते झाड़ने की हो, चाहे लंगर बनाने की हो; वे उस सेवा को बहुत प्रेम-प्यार से करते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि मुझे आर्मी से बहुत कुछ सीखने को मिला। मुझे वहाँ ज्यादा से ज्यादा हुक्म मानने की प्रेरणा मिली। आर्मी के हुक्म बड़े सख्त होते हैं। वहाँ जिसको जो काम कहा जाता है, उसे वह करना पड़ता है।

मैं आर्मी में अपनी खुशी से नहीं गया था। दूसरे विश्वयुद्ध के समय सरकार हमें जबरदस्ती आर्मी में ले गई थी। मैंने सोचा कि जब काम करना ही है तो उसे दिल लगाकर करना चाहिए। इससे मेरे अफसर मुझ पर मेहरबान हुए।

जब मुझे हुजूर मिले, उन्होंने जो हुक्म दिया मैंने उसे खुशी-खुशी स्वीकार किया। मैं हमेशा कहता हूँ कि मेरे बहुत अच्छे भाग्य थे जो मुझे बचपन से ही हुक्म मानने की आदत पड़ी।

कई प्रेमी अपने पत्रों में लिखते हैं कि हमारा मन हमें भजन पर नहीं बैठने देता। गिट्टे-गोडे दुखते हैं और भी कई परेशानियां लिखते हैं। साथ में यह भी लिखते हैं कि अभ्यास करने की जो दवाई आपने हमें बताई है वह हम नहीं करते। अब आप सोचकर देख सकते हैं कि अभ्यास के बिना क्या इलाज है?

ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ॥
ओन्ही दुनिया तोड़े बंधना अनुं पाणी थोड़ा खाइआ॥
तू बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ॥
वडिआई वडा पाईआ॥

आप कहते हैं कि सन्तोष वाला इन्सान सेवा करता है, नाम जपता है, सच्चा इन्सान बन जाता है। नाम जपने वाला बुराई की तरफ नहीं जाता। नेक कमाई करता है और अपनी कमाई को लंगर में डालकर उसे पवित्र कर लेता है। प्यार से ही दुनिया के बंधन तोड़ देता है। उसकी खुराक भी बहुत कम होती है। गुरु गोविंदसिंह जी कहते हैं ''वह अल्पाहारी बन जाता है।''

आप कहते हैं कि ऐसा साधु कम खाता है, कम पीता है और कम सोता है। उसका शरीर पवित्र होता है। वह नाम की कमाई करके परमात्मा को अपने ऊपर खुश कर लेता है। परमात्मा उस पर नाम की बख्शिश करता है, जो कम नहीं होती; बल्कि बढ़ती जाती है। उस पवित्र आत्मा की यही विशेषता है कि वह अपने सतगुरु परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर लेता है।

❁❁❁

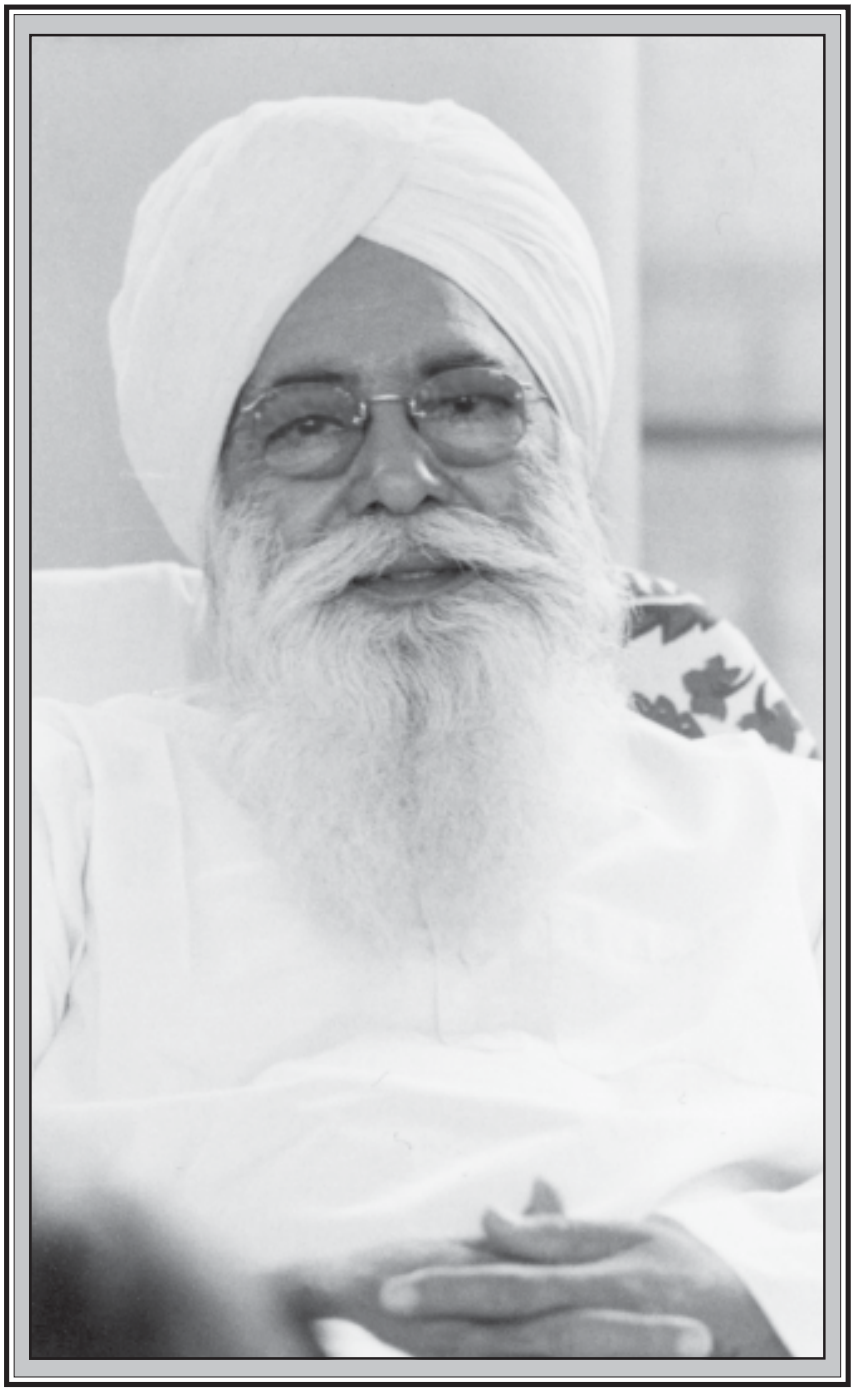

आठ

परवरिश

परमात्मा ने बहुत दया करके हमें यह रत्नों की खान इन्सानी जामा दिया है। यह न तो मूल्य से मिलता है और न ही हम इसे किसी ताकत से प्राप्त कर सकते हैं। हमें मन के कहने पर चलकर इस जामे को विषय-विकारों और नशों में बरबाद नहीं करना चाहिए। परमात्मा ने हमें जिस मकसद के लिए यह इनाम दिया है उसे याद रखना चाहिए। हम परमात्मा की भक्ति, परमात्मा से मिलाप इन्सानी जामे में ही कर सकते हैं।

शेख बरम ने गुरु नानक जी से सवाल किया कि इस चलती-फिरती दुनिया में पशु-पक्षी, पेड़ इत्यादि की **परवरिश** कौन करता है? क्या ये अपने उद्यम से रोजी-रोटी खा रहे हैं या कोई और इनकी संभाल कर रहा है?

गुरु नानकदेव जी प्यार से शेख बरम को बताते हैं कि शुरू-शुरू में सब जीव खासकर इन्सान यही समझता है कि हम अपनी **परवरिश** खुद कर रहे हैं। जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती हैं वे जानते हैं कि जिसने हमें पैदा किया है वही हमारा पालन-पोषण कर रहा है, उसे हमारी चिन्ता है।

हम पक्षियों को चोगा डालते हैं। पक्षी चोगा खाकर उड़ जाते हैं। अगले दिन की भी चिन्ता नहीं करते। उनके पास चोगा इकट्ठा करके रखने की जगह भी नहीं। उन्हें अंदर से ज्ञान है कि जिस परमात्मा ने आज रोजी-रोटी दी है वह कल भी देगा। लेकिन एक इन्सान ही ऐसा है जो अपनी चिन्ता में खुद ही फँसा हुआ है। यह सोचता है कि मैं कैसे धन कमाऊँ? धन कमा लेने के बाद बुढ़ापे की फिक्र करता है। फिर पुत्र-पौत्रों के लिए सोचता

है कि इनके लिए भी कुछ बनाकर जाऊं। कहने का भाव; इन्सान की तृष्णा बढ़ती ही जाती है।

उदासी मत में एक रोटीनन्द नाम का साधु था जो मेरा अच्छा दोस्त था। वह अक्सर रोटी माँगकर हाथ पर रखकर ही खा लेता और आगे बढ़ जाता था। एक बार वह बीमार हो गया। एक प्रेमी उसे चार आने देकर गया, उस जमाने में चार आने का चार-पाँच किलो आटा आ जाता था। उसने उन पैसों की मिठाई मंगवाकर जो उसके पास बैठे थे, उन्हें खिला दी और थोड़ी सी अपने लिए रख ली। ऐसा वही करते हैं जिन्हें परमात्मा पर भरोसा है। महात्मा रोटीनन्द कहा करते थेः

अध्धी रोटी खाकर करे गुजारा नित।
अध्धी वंडदा फक्करा जेहड़ा रब्ब दा मित॥

आप देखते ही हैं कि महात्मा अपना कमाया हुए धन और प्रेमियों के धन को भी खुले दिल से लंगर में लगा देते हैं। लेकिन दुनियादार अपनी ही फिक्र में लगे रहते हैं। महात्मा जानते हैं कि जिस मालिक ने आज दिया है वह कल भी देगा।

गोईन्दवाल में गुरु अमरदेव जी के समय में सेवा के लिए जो भी पदार्थ आता, उसे शाम तक पका लिया जाता था और रात को सारे बर्तन धोकर रख दिए जाते थे कि जिस परमात्मा ने आज भेजा है वह कल भी भेजेगा। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर माया सुम की, देखन ही का लाड।
जे कर कौड़ी घट जाए, ते साईं तोड़े हाड॥

कंजूसों को माया गिनने और संभालकर रखने का ही हुक्म है कि कितना धन बैंकों में है और कितना ब्याज आ रहा है। वे सिर्फ धन को गिनकर और देखकर ही खुश होते रहते हैं। वे एक कौड़ी न तो अपने ऊपर खर्च करते हैं और न दान ही देते हैं।

आप बड़े प्यार से शेख बरम को समझाते हैं कि देख प्यारे आ! इस सारी कायनात का फिक्र परमात्मा को है, वह रोजी-रोटी देते हुए नहीं थकता। वह परमात्मा पत्थर में रहने वाले कीड़ों को, जल में रहने वाले जीवों को भी रोजी-रोटी देता है।

पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥

वह परमात्मा इन्सानों को, समुद्र में रहने वाले जीवों को और समुद्र के किनारे रहने वाले जीवों को रोजी-रोटी देता है। वह खेतों की खुराक मुहैय्या करता है। बादलों की और बादलों में रहने वाले सूक्ष्म जीवों की भी **परवरिश** करता है। वह परमात्मा देवी-देवताओं की भी **परवरिश** करता है।

दीपां लोआं मंडलां खंडा वरभंडांह ॥

आप कहते हैं कि वह धरती और धरती के द्वीपों में बसने वाले सब जीवों की प्रतिपालना करता है।

अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥

वह अंडो से पैदा होने वाले, जेरज से पैदा होने वाले इन्सान, चौपाए जानवरों की, मौसम की तबदीली से पैदा होने वाले जीव और वनस्पति की भी **परवरिश** करता है।

सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥

उस परमात्मा को सब जीव-जंतुओं की फिक्र है कि मुझे इनको कैसे रोजी-रोटी देनी है। वह भूलता नहीं।

नानक जंत उपाइ कै संमाले सभनाह ॥

परमात्मा सबकी संभाल करता है कि कब किसकी पैदाइश और कब किसकी मौत करनी है। वह रोजी देते हुए किसी के ऐबों को नहीं देखता, अच्छे-बुरे सभी को रोजी देता है।

जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह॥

आप कहते हैं कि देख भई शेख बरम! यह बड़े सोच विचार की बात है कि जिसने यह प्रपंच रचा है उसी ने इसे चलाना है। इन्सान फिजूल में ही अपनी चिन्ता करता है, चिन्ता इसका कुछ भी नहीं संवारती। चिन्ता करने से बीमारियाँ पैदा होती हैं। समझदार लोग कहते हैं कि चिन्ता चिता के समान है।

नानक चिन्ता मत करो, चिन्ता तिसही हेय।
जल में जंत अपायन, तिन्ना को रोजी देय॥
ओथे हट ना होवी, ना कोई लेय ना देय।
विच उपाय सहरा, तिन्ना को रोजी देय॥

सो करता चिंता करे जिनि उपाइया जगु॥
तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु॥

आप कहते हैं कि जिसने इस जग की रचना की है उसे सबकी फिक्र है, हम उसे नमस्कार करते हैं। वह अभूल है। उसका दरबार सच्चा है। उसका कभी नाश नहीं होता। उसे कोई दंड देने वाला नहीं। उसका कोई शरीक नहीं।

नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु॥

गुरु नानकदेव जी शेख बरम से कहते हैं कि देख प्यारेआ! जो नाम की कमाई नहीं करता। जब तक अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म, कारण के तीनों परदे उतारकर दसवें द्वार में नहीं पहुँचता, तब तक उसे समझ ही नहीं आती। वह अपने आपको पूरा इन्सान ही नहीं कहलवा सकता।

नाम की कमाई के बिना, अंदर जाए बिना माथे पर तिलक लगाने से, जनेऊ पहनने से, शरीर पर इस तरह के चिह्न-चक्र धारण करने से शान्ति नहीं मिलती।

लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु॥

सिख इतिहास में आता है कि गुरु नानकदेव जी ने यह शब्द ज्योति-जोत समाने से पहले अपने बच्चों के प्रति उचारा था। आपके ज्योति-जोत समाने के समय आपके बच्चे आपके पास नहीं आए थे। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

वैद्य वकील सन्त सरदारे, पिंड विच माण न पौन्दे चारे।
नानक दादक ते घरवाली, ऐह वी रहण साध तो खाली॥

गुरु नानकदेव जी के बेटे श्रीचन्द और लखमी दास ने आपसे 'नाम' नहीं लिया था। श्रीचन्द ने अविनाशी मुनि को गुरु धारण किया था। उस अविनाशी मुनि ने श्रीचन्द को तीर्थों पर तप करने और शरीर पर सिर्फ एक लंगोट पहनने के लिए कहा। लेकिन गुरु नानकदेव जी ने आखिरी समय में इन पर तरस खाकर कहा, ''चाहे जितने मर्जी तीर्थ कर लो, समाधियाँ लगा लो। परमात्मा के दरबार में इन सबकी कोई कीमत नहीं।''

श्रीचन्द की गद्दी उदासी सम्प्रदाय की थी। इस सम्प्रदाय वाले 'दो-शब्द' का भेद देते थे। बाबा बिशनदास के गुरु अमोलक दास जी ने श्रीचन्द से ही 'नामदान' लिया था। उस समय श्रीचन्द की गद्दी बहुत मशहूर थी।

गुरु नानकदेव जी बेदी परिवार में हुए हैं। हिन्दुस्तान में अभी भी लोग बेदी जाति वालों का बहुत आदर करते हैं। जिस वंश में कोई साधु हुआ होता है, आमतौर पर लोग उस वंश को बहुत मान देते हैं।

लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण॥

चाहे तीर्थों पर जाकर लाखों किस्म के तप कर लो, चाहे जितनी मर्जी समाधियाँ लगा लो! परमात्मा के दरबार में इनकी कोई मान्यता नहीं।

लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण॥
लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण॥

चाहे लाखों बार रणभूमि में प्राण छोड़ो, सूरमा कहलवाकर मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। चाहे अठारह पुराणों को पढ़ लो, ज्ञान-ध्यान की कितनी भी बातें कर लो, इन सबसे परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते।

जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु॥
नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु॥

बाहरी रीति-रिवाजों और कर्मकांडो को मिथ्या बताया है। इनके करने से हमारा दुनिया में आना-जाना खत्म नहीं होता। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बिन नामे नहीं छूटस नानक।

आप यह भी कहते हैंः

नाम बिसार चले अनमारग अंतकाल पछताई हे।

सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा ही सच्चा है। सच का मतलब जिसका कभी नाश न हो। परमात्मा ने ही सन्तों के अंदर बैठकर सच्चे नाम का प्रसार किया है।''

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि दुनिया में ऐसा कोई भी इन्सान नहीं जिसके सारे काम पूरे हो गए हों और उसकी सारी कल्पनाएँ खत्म हो गई हों। किसी के चार काम पूरे हो गए, दो रह गए और किसी के दो काम पूरे हो गए, चार रह गए। अंत समय में जिन बचे हुए कामों की कल्पना रह जाती है

उसकी वजह से ही हम फिर वहाँ जन्म ले लेते हैं। वहाँ दो कल्पनाएँ पूरी हो जाती हैं और दस अधूरी रह जाती हैं। ये कल्पनाएँ ही बार-बार हमें इस संसार में लाती हैं।

परमात्मा ने इस संसार में हर किस्म के इन्सान पैदा किए हैं। बाबा बिशनदास जी मन को शेख चिल्ली की तरह बताया करते थे। शेख चिल्ली दिन में सपने देखा करता था। एक बार की बात है कि वह बैठा हुआ था। सिपाही ने उससे कहा, ''तू यह घी का टीन उठाकर वहाँ पहुंचा दे, तो मैं तुझे दो आने मजदूरी दूँगा।''

शेख चिल्ली ने टीन उठाकर सिर पर रख लिया और सोचने लगा कि मैं इन दो आनों के अंडे लूँगा। अंडों में से बच्चे निकलेंगे जिनकी मुर्गियाँ बन जाएँगी। उन मुर्गियों को बेचकर बकरियाँ खरीदूँगा। बकरियों को बेचकर जो मुनाफा होगा उससे गायें खरीदूँगा। फिर उन्हें बेचकर जो मुनाफा होगा उससे मैं अपनी शादी करवाऊँगा।

फिर मेरे बच्चे होंगे। मैं अपने बच्चों से प्यार किया करूँगा। बच्चे बड़े होकर आपस में झगड़ेंगे तो मैं उन्हें समझाऊंगा। जब वे मेरा कहना नहीं मानेंगे, तब मैं उन्हें इस तरह लात मारूँगा। जब उसने लात चलाई तो सिर पर रखा हुआ टीन गिरकर जमीन पर बिखर गया। सिपाही ने कहा कि तूने मेरा नुकसान कर दिया। शेख चिल्ली ने कहा, ''तेरा तो थोड़े से रुपयों का नुकसान हुआ है लेकिन मेरा तो सारा परिवार ही बिखर गया है।''

कहने का भाव, हमारा मन शेख चिल्ली से कम नहीं। यह सारा दिन ऐसे ही ख्याल बनाता रहता है।

जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ॥

लोग कहते हैं कि हम 'नाम' लेकर आए हैं या नाम लेना है। यह सब परमात्मा के हाथ में है कि किसे 'नाम' देना है, किसकी मुक्ति करनी है! किससे इस जन्म में भक्ति करवानी है; फिर दोबारा इस संसार में नहीं लाना।

सावन सिंह जी कहा करते थे, ''लोग कहते हैं कि हम भजन पर बैठते हैं, लेकिन जब अंदर जाकर सच्चाई को देखते हैं तो पता लगता है कि कोई हमें खींच कर भजन पर बिठा रहा है।''

सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ॥

आप कहते हैं कि हम 'नाम' की दौलत सतगुरु से ही प्राप्त कर सकते हैं। सतगुरु मिले, वह हमें 'नाम' दे, वही हमारे अंदर प्यार की दौलत बसा देता है।

मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ॥
विचि दुनीआ काहे आइआ॥

मन का कहना मानने वाले लोग मूर्ख हैं; मनमुख हैं। वे परमात्मा से तन लेकर बच्चे-बच्चियाँ और धन-पदार्थ लेकर चोर बने हुए हैं। उनका इस दुनिया में आना बेकार है। वे परमात्मा की मौज को नहीं समझते। उन्हें इन्सानी जामे का जो मौका मिला था उसे गंवाकर चले गए।

बाबा बिशनदास जी बताया करते थे कि एक मनमुख और गुरुमुख में अच्छा प्यार था। मनमुख हमेशा परमात्मा को गालियाँ निकालता और गुरुमुख हमेशा ही परमात्मा के भाणे में रहता। परमात्मा ने दोनों की पीठें जोड़कर जन्म दे दिया कि मनमुख कहाँ तक गालियाँ निकालेगा? क्या गुरुमुख को भी अभाव आएगा?

जब मनमुख परमात्मा को गालियाँ निकालता तो गुरुमुख

को भी सुननी पड़ती। गुरुमुख कहता भ्रावा! परमात्मा हमें हमारे कर्मों की इससे भी ज्यादा सजा दे सकता है। मनमुख कहता कि वह परमात्मा इससे ज्यादा और क्या सजा दे सकता है? और भी जो सजा देनी है, दे ले।

थोड़े समय बाद गुरुमुख का शरीर छूट गया। अब मनमुख को गुरुमुख के शरीर का बोझ भी उठाना पड़ता था। उसके तन से बदबू आने लगी। बदबू की वजह से कोई भी उसके पास नहीं रुकता था। आकाशवाणी हुई कि तू परमात्मा को मान ले। परमात्मा का शुक्रगुजार हो जा। लेकिन वह फिर भी नहीं माना। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मनमुख जे समझाइए पी औजड़ जाए।

प्यारेओ! हमें मालिक के भाणे में रहना चाहिए। अगर दुःख आता है तो यह हमारे कर्मों का ही है। हमें परमात्मा से शिकायत नहीं करनी चाहिए। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''किसी को दोष क्यों देते हो? जैसा करके आए हो वही आपको भोगना पड़ रहा है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ददा दोष ना दीजे काहू, दोष कर्मां आपणया।
जो मैं कीता सो मैं पाया, दोष ना दीजे अवरजना॥

❁❁❁

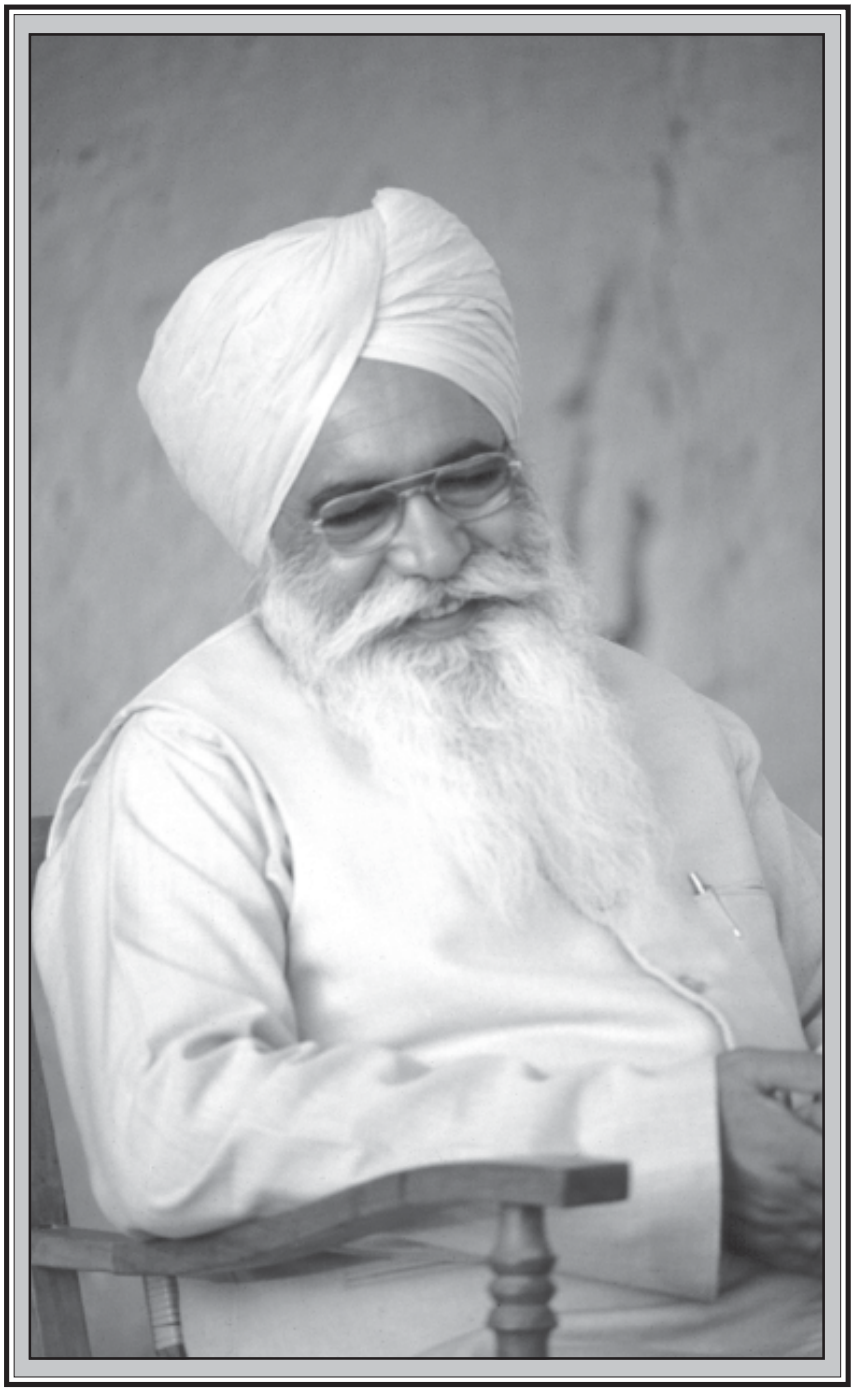

नौ

हम कैसे जागें?

आज से पाँच सौ साल पहले हिन्दुस्तान में काशी-बनारस ही शिक्षा का केन्द्र था। उस समय का समाज पंडित, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में बँटा हुआ था। उस समय केवल पंडित ही विद्या प्राप्त करने के अधिकारी थे। विद्या का ज्यादा प्रसार नहीं था। जिन भी लोगों ने विद्या प्राप्त की, वह पंडित बनकर ही की। गुरु गोविंदसिंह जी ने अपने कुछ सेवकों को पंडितों का भेष धारण करवाकर ही विद्या प्राप्त करने के लिए काशी भेजा था।

पंडितों को विद्या का अहंकार था। एक बार एक पंडित की वार्ता गुरु नानक जी के साथ हुई तो उस पंडित ने कहा, ''मुक्ति पढ़-पढ़ाई में है।'' गुरु नानकदेव जी ने उसे अपना तजुर्बा बताया कि मुक्ति 'नाम' में है।

एक ऐसा पंडित था उसे जब भी किसी साधु-महात्मा की जानकारी मिलती, वह उसके साथ शास्त्रों पर चर्चा करता। जो उससे हार जाता, पंडित उसके ग्रन्थ छीन लेता। एक बार वह पंडित बहुत सारी किताबें लादकर गुरु नानक जी के पास बातचीत करने के लिए आया। गुरु नानक जी ने उसे बताया कि मुक्ति 'नाम' में है। वह नाम लेने के लिए तैयार हुआ तो गुरु नानक जी ने सोचा कि इलाज करने से पहले पेट साफ करना जरूरी है।

गुरु नानक जी ने उससे कहा, ''तुमने पहले जो गुरु धारण किया हुआ है, तुम उसकी पूजा करते हो; पहले उससे मेल-मिलाप करो।'' वह पंडित आगे जाकर देखता है कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव और स्वर्गों का राजा इन्द्र, महात्माओं का रूप धारण करके

बैठे हुए हैं। उस पंडित ने उन्हें नमस्कार करके कहा, ''मुझे उपदेश दो। मैं आपको गुरु धारण करने के लिए आया हूँ।''

वे महात्मा पंडित के दिल की बात जानते थे कि यह किस चीज़ का पुजारी है। उन महात्माओं ने उससे कहा, ''तेरा गुरु उस सुनहरे मंदिर में बैठा है।'' जब वह उस मंदिर में गया तो उसे वहाँ एक औरत मिली। उस औरत ने पंडित की जूतों से पिटाई की लेकिन वह उस औरत का हाथ नहीं रोक सका।

जब वह वापिस आया तो महात्माओं ने पूछा कि तुम इतनी जल्दी कैसे वापिस आ गए? क्या उपदेश लेकर नहीं आए? पंडित ने कहा, ''वहाँ एक बहुत कड़े स्वभाव की औरत थी। उसने मुझसे कोई बात नहीं की। मुझे बहुत पीटा।'' महात्माओं ने कहा कि तुम पढ़े-लिखे तो बहुत हो लेकिन तुम्हारा असली गुरु वह माया ही है क्योंकि तुम माया के पुजारी हो। अगर संसार समुद्र से पार होना चाहते हो तो गुरु नानक जी से 'नाम' लो।

आखिर पंडित ने गुरु नानक जी के पास आकर सिर झुकाकर कहा, ''आप जो उपदेश देंगे, मैं उस पर श्रद्धा से चलूँगा। आप जो कहेंगे, मैं वही करूँगा।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

पढ़या मूर्ख आखिए, जिस लभ लोभ अंहकारा।

सन्त-महात्मा पढ़ने-लिखने को बुरा नहीं कहते। हमें दुनिया की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए लेकिन परमात्मा की भक्ति के लिए 'सुरत-शब्द' के अभ्यास की और 'नाम-शब्द' की कमाई की जरूरत है। इस शब्द में गुरु नानकदेव जी उस पंडित को बड़े प्यार से समझा रहे हैं, गौर से सुनो।

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं चाहे आप पढ़-पढ़कर उन पोथियों से गाड़ियाँ भर लो और चाहे उन्हें ऊँटों पर भी लाद लो।

पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात॥

आप कहते हैं चाहे कितनी किताबें पोथियाँ पढ़ लो। दरिया के पार जाना हो तो बेड़ियाँ भर लो। वे ग्रन्थ पुराने हो जाएँ, उन्हें मिट्टी में दबाकर नए ले लो। लेकिन मुक्ति फिर भी नहीं होगी।

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास॥

चाहे जिंदगी के सारे साल और सारे महीने पढ़ते रहो तो भी मुक्त नहीं हो सकते।

पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास॥

चाहे सारी जिंदगी ऊपर नीचे आने वाले सांस-सांस तक पढ़ते रहो, तब भी मुक्त नहीं हो सकते।

नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख॥

गुरु नानकदेव जी उस पंडित को समझाते हुए कहते हैं कि हमें 'नाम' मिल जाए, हम कमाई करें, सुरत-शब्द के साथ मिल जाएँ, वही घड़ी लेखे में है। कबीर साहब कहते हैं:

लेखे में सोई घड़ी बाकी के दिन बाद।

आप प्यार से समझाते हैं कि शब्द-नाम की कमाई के बिना हम जो कुछ भी पढ़-लिखकर एक दूसरे से बहस करते हैं, वह बेकार है। किसी लेखे में नहीं।

लिखि लिखि पड़िआ॥ तेता कड़िआ॥
बहु तीरथ भविआ॥ तेतो लविआ॥

मैंने भी अपनी जिंदगी में देखा है कि हिन्दुस्तान में बहुत

लोग भेष धारण कर लेते थे। लेकिन आजकल उतने लोग भेष धारण नहीं करते। आमतौर पर उन लोगों का काम तीर्थों पर स्नान करना, पढ़-लिखकर बहस करना ही था।

हिन्दुस्तान में बहुत लोगों का रोजगार तीर्थस्थानों पर ही है। यात्री दस दिन किसी तीर्थस्थान पर, तो दस दिन किसी और तीर्थस्थान पर जाते हैं। भेषी लोग किसी यात्री से कपड़ा, किसी से गुटका, किसी से और कुछ माँगकर इन्हें बेचकर अपना गुजारा करते हैं। इन लोगों में किसी ने साधुओं का भेष धारण किया होता है तो किसी ने माथे पर तिलक लगाकर सिद्ध पुरुष का रूप धारण करके माँगने का पेशा बनाया होता है।

गृहस्थी लोग भोले-भाले होते हैं। इनकी कमाई पवित्र होती है। ये अपनी कमाई भेषधारियों को दे देते हैं, जिससे भेषधारी गांजा, शराब और कई किस्म के नशे करते हैं। गुरु नानकदेव जी किसी की निन्दा नहीं कर रहे। उन्होंने जो तीर्थ स्थानों पर देखा, वही बयान किया है। आपने तीर्थों पर भक्ति करने वालों से चर्चा की और यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि बाहर के रीति-रिवाजों से मुक्ति नहीं मिलती। मुक्ति 'नाम' में है।

बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ॥ सहु वे जीआ अपणा कीआ॥
अनु न खाइआ सादु गवाइआ॥ बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ॥

आप कहते हैं, ''जो जितने ज्यादा भेष धारण करते हैं वे उतने ही दुख और परेशानियाँ उठाते हैं, जो पहले कर्म करके आए हैं वह आज भोग रहे हैं। अन्न खाना छोड़कर मुँह का स्वाद बिगाड़ लेते हैं।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि ऐसे लोग एक रुपये का अन्न नहीं खाते बल्कि दस रुपये का दूध पीकर अपने आपको दूधाधारी कहलवाते हैं।

महात्मा बताते हैं, ऐसों के सेवक चोरी-छिपे उनके लिए अच्छे खाने लाकर रख देते हैं। जब प्रेमी दर्शनों के लिए आते हैं तो उनसे कहते हैं कि सन्त दूध पीकर ही गुजारा करते हैं। कबीर साहब कहते हैं अगर दूध के सहारे ही मुक्ति मिलती हो तो बच्चों की मुक्ति हो जानी चाहिए। क्योंकि बच्चे सिर्फ दूध ही पीते हैं।

बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥
मोनि विगूता ॥ किउ जागै गुर बिनु सूता ॥

कुछ इस किस्म के भी साधु होते हैं जो वस्त्र नहीं पहनते। जैसे जानवर वस्त्र नहीं पहनते, सर्दी-गर्मी में नंगे ही घूमते हैं।

कुछ इस किस्म के भी साधु होते हैं, मौन धारण कर लेते हैं। उन्हें जिस चीज की जरूरत होती है, लिखकर मांग लेते हैं। जिस मन को दुनिया से हटाना था, वही मन अंदर ज्यादा कल्पना करता है। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''मौनी होने का क्या फायदा? बोलकर नहीं मांगा, लिखकर मांग लिया।''

मैं पंजाब के दौले गांव में एक मौनी के पास गया। सेवा के लिए विनती की। मौनी जिस बोरी पर बैठा था, उसने बोरी का एक कोना उठा दिया। मौनी के चेले ने कहा, ''सन्त त्यागी हैं माया को हाथ नहीं लगाते। यहाँ रख दो। जब किसी चीज की जरूरत होगी, इसे इस्तेमाल कर लेंगे।''

आप सोचकर देखो! अगर मुँह से मांग लिया जाए तो क्या हर्ज है? जबकि अंदर तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की इच्छाएं उसी तरह उठ रही हैं। हम जितना चुप करते हैं, मन उतनी ही ज्यादा इच्छाएं पैदा करता है।

बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''अगर चुप रहने से परमात्मा मिलता होता तो पशु कौन सी गुफ्तगू करते हैं? परमात्मा पशुओं को मिल जाता।''

पग उपेताणा॥ अपणा कीआ कमाणा॥
अलु मलु खाई सिरि छाई पाई॥

बहुत से ऐसे भी पंथ हैं जो जूते नहीं पहनते। नंगे पाँव ही चलते हैं। ये लोग ट्रेन और हवाई जहाजों में सफर नहीं करते।

एक ऐसा भी पंथ चला जिन्हें घोरी कहते थे। ये लोग नहाते नहीं। अपना ही मैल खा जाते हैं। ये अच्छे बुरे में भेद नहीं समझते। समझदार लोग ऐसों की आलोचना करते हैं कि इस तरह परमात्मा की भक्ति कैसे हो सकती है!

एक बार कबीर साहब के पास एक ऐसा आदमी आया, जिसने बारह साल से कपड़े और जूते नहीं पहने थे। उसने अपनी कुर्बानी के बारे में बताया। कबीर साहब ने उससे कहा कि जब तक आप अपनी आत्मा को 'शब्द-नाम' के साथ नहीं मिला लेते, तब तक चाहे आप बिना कपड़ों और जूतों के रहो, इस सबका कोई फायदा नहीं।

नगरी फिरत जे पाइए जोग, बनके मृग मुक्त सब होत।
क्या नांगे क्या बांधे चाम, जब नाहीं चीनस आत्मराम॥

मूरखि अंधै पति गवाई॥ विणु नावै किछु थाइ न पाई॥

'नाम' के बिना कोई ठिकाना नहीं, मुक्ति नहीं। हम नाम के बिना इन्सानी जामे को पवित्र नहीं कर सकते।

रहै बेबाणी मड़ी मसाणी॥ अंधु न जाणै फिरि पछुताणी॥

कुछ ऐसे भी पंथ हैं जिनमें लोग अपने घरों को छोड़कर कब्रिस्तान और मढ़ी-मसानों में रहने लग जाते हैं। लोग उन्हें पूजते हैं कि यह बाबा भूतों से नहीं डरता। ऐसे लोग नाम की तरफ नहीं जाते। आखिरी समय में पछताते हैं।

बाबा बिशनदास जहाँ रहते थे उसके नज़दीक ही गांव वालों की कब्रें थीं। वहाँ एक साधु आकर बैठ गया। लोग उसे पूजने लगे। बाबा बिशनदास ने उस साधु से कहा, ''अगर तुझे कोई करामात दिखानी है तो जिन्दा लोगों में जाकर रह। तू जानता है कि मरे हुए लोग कब्रों में से नहीं बोलते। तू यहाँ इसलिए आकर बैठा है कि कोई तुझसे ज्ञान की बात न पूछ ले।''

हम गृहस्थी लोग भ्रमों में फँसे होते हैं। जिन्हें हम कब्रों में छोड़कर आए हैं, क्या वे वहीं बैठे हैं? महात्मा हमें समझाते हैं कि कब्रों में बैठने वाले तो अंधे हैं, जो वहाँ बैठने में ही भक्ति समझते हैं। फिर हम लोग भी अंधे हैं, जो उनके पीछे लगकर अपना जीवन बर्बाद करते हैं।

सतगुरु भेटे सो सुखु पाए॥ हरि का नामु मंनि वसाए॥

अगर सतगुरु हमारे अंदर 'नाम' टिका दे तो हमारे जन्म-जन्मातंरो के बुरे कर्म नाम की कमाई से खत्म हो जाते हैं।

नानक नदरि करे सो पाए॥
आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि जब महात्मा हमें यह बताते हैं कि 'नाम' मुक्तिदाता है, नाम ही हमारे बुरे खोटे कर्मों को राख कर सकता है, तब हमारे दिल में ख्याल आता है कि नाम कौन सा मुश्किल है! महात्मा नाम मुफ्त में ही दे देते हैं। कोई फीस नहीं लेते।

जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती हैं, वे पत्ते-पत्ते में उस परमात्मा की ताकत को काम करते हुए देखते हैं। ऐसे महात्मा कहते हैं प्यारेओ! नाम प्राप्त करना अपने बस में नहीं। जिस जीव पर परमात्मा अपनी नजर करता है, जिसका फैसला

सच्चखंड से हो जाता है कि इसे दुखी दुनिया में हाजिर नहीं करना, वही जीव सतसंग में आता है, नामदान प्राप्त करता है। दिल में उत्साह पैदा करके इसी जन्म में अपना काम बना लेता है।

नानक जी कहते हैं कि सारी दुनिया सुख माँगती है। दुख कोई नहीं माँगता। लेकिन परमात्मा दया कर रहा है। हम देखते हैं कि समय पर सूरज निकलता है, दिन और रात होते हैं और समयानुसार मौत-पैदाइश हो रही है। उसी तरह नाम प्राप्त करना, सतसंग में आना, सब परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है।

भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे॥

अब आप कहते हैं कि मनमुख भी उसी परमात्मा के बच्चे हैं। उनमें भी वही परमात्मा विराजमान है। परमात्मा को वही प्यारे लगते हैं जो परमात्मा की भक्ति के गीत गाते हैं। वही परमात्मा के दर पर शोभा प्राप्त करते हैं। इनके साथ जिनका मिलाप होता है ये उनके अंदर भी भक्ति का शौक पैदा कर देते हैं।

परम पिता कृपाल कहा करते थे, ''परमार्थ भी एक छूत की बीमारी है। जैसे किसी एक को खारिश हो रही हो तो वह और लोगों को भी खारिश की बीमारी लगा देता है। एक भक्त खुद भक्ति करता है, वह हमारे अंदर भी भक्ति की खारिश पैदा कर देता है। हम भी भक्ति करने लग जाते हैं।''

नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे॥

आप कहते हैं कि नाम का मिलना बहुत से जन्मों के अच्छे कर्मों का इनाम है। लेकिन जिनका कर्म नहीं बना, वे उसके दर पर नहीं पहुँच सकते। उसकी भक्ति नहीं कर सकते।

इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे॥

ऐसे लोग भी संसार में आते हैं जो यह नहीं जानते कि

हम क्यों पैदा हुए हैं? इस जन्म से पहले कहाँ थे और आगे कहाँ जन्म लेंगे? ऐसे लोग अपने आपको समझदार समझते हैं, मालिक के प्यारों के उपदेश को ग्रहण नहीं करते और कहते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं।

हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि जिन्हें अपने आपकी समझ नहीं, उनके दिल में अहंकार होता है कि हम ज्यादा समझदार और अच्छे हैं। आप कहते हैं, ''मैं तो बहुत गरीब हूँ, नीच जाति का हूँ।'' गुरु नानकदेव जी बेदी जाति में पैदा हुए थे। हिन्दुस्तान में बेदी जाति की बहुत इज्ज़त है। कबीर साहब कहते हैं:

बुरा जो देखन मैं गया, बुरा न मिलया कोए।
जब देखया दिल आपना, मुझसे बुरा न कोए॥

कबीर साहब कुल मालिक थे। आप सदा ही जीवों की रक्षा करते रहे और आज भी कर रहे हैं। आप हमें प्यार से समझाते हैं कि प्यारेओ! परमात्मा को नम्रता प्यारी है, आप अपने अंदर नम्रता धारण करो।

तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हे परमात्मा! मैं उनका मिलाप मांगता हूँ जो तेरी भक्ति करते हैं।

आप कहते हैं कि पढ़ना बुरा नहीं, लेकिन उसे समझना बहुत जरूरी है। परमात्मा की भक्ति करने वाला चाहे पढ़ा-लिखा हो, चाहे अनपढ़ हो वह परमगति को प्राप्त हो जाता है। पढ़ना इस तरह है, जिस तरह हम प्यार से सतसंग में जाते हैं, अगर हम इस पर अमल करें तो इससे फायदा उठा सकते हैं।

❁❁❁

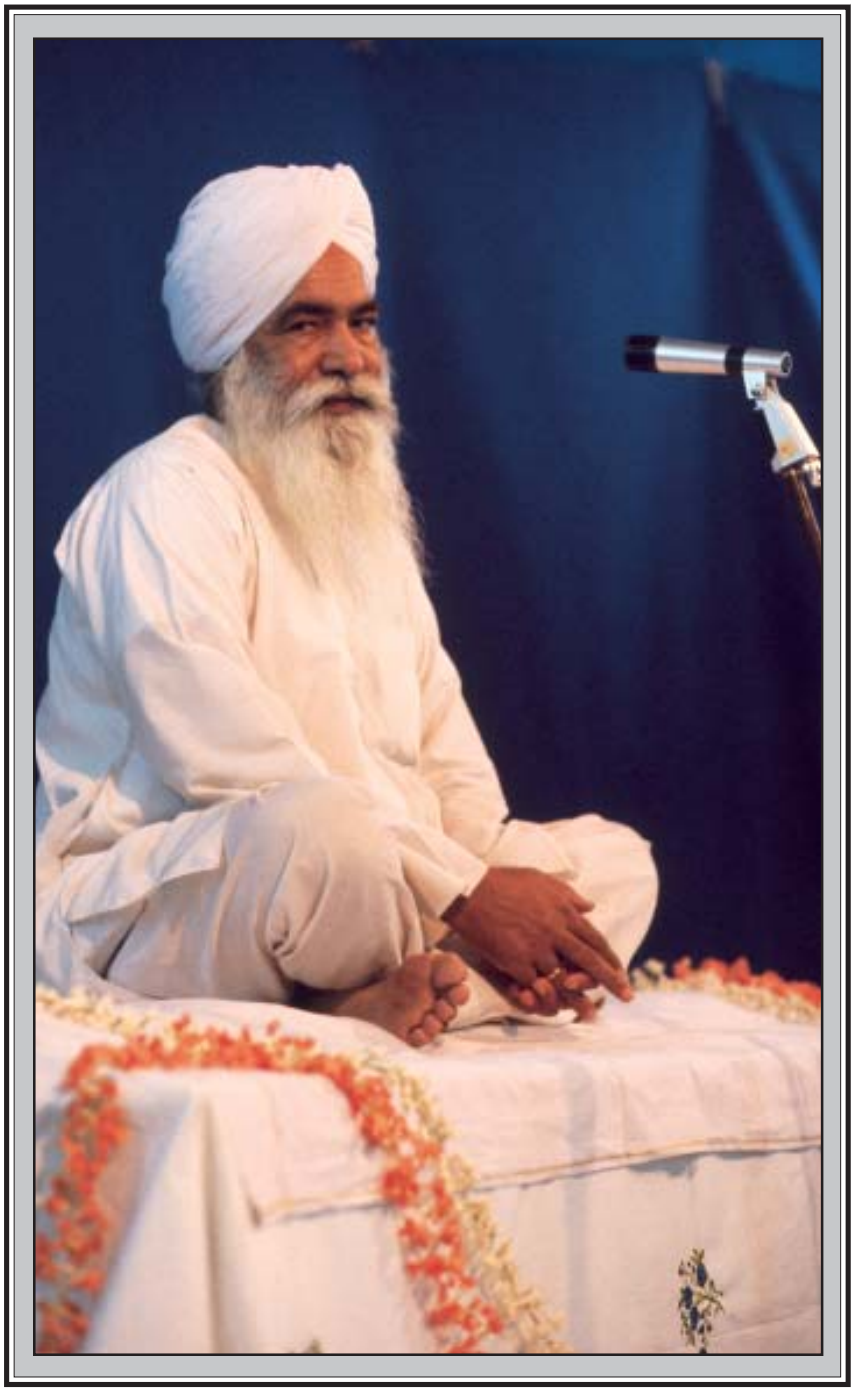

दस

सच और झूठ

सन्त-महात्मा परमात्मा के भेजे हुए इस संसार में आते हैं, वे परमात्मा के नियमों के मुताबिक ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। जिन आत्माओं के दिल में तड़प होती है, वे इनसे फायदा उठा लेते हैं। बाकी लोग सोचते ही रह जाते हैं।

यह जरूरी नहीं कि परिवार के लोग ही इनसे फायदा उठाएं। ऐसा नहीं कि सन्तों से अमीर लोग ही फायदा उठा सकते हैं, गरीब नहीं। सन्त सभी को एक समान समझते हैं, सभी के साथ प्यार करते हैं।

गुरु नानकदेव जी का जन्म ननकाना साहब में हुआ जो अब पाकिस्तान में है। पहले इस जगह को राय भौंए की तलवन्डी कहा जाता था। राय इस इलाके का मालिक और बड़ी हस्ती वाला था। उसने गुरुनानक जी को बचपन से ही जान लिया था कि यह खुदा की तरफ से आया हुआ खुदा का बन्दा है।

गुरु नानक जी के माता-पिता उदास रहते थे कि हमारा बेटा दुनियावी कारोबार नहीं करता। वे गुरु नानक जी की शिकायतें राय भौंए से करते। राय भौंए यही कहता, ''आप परेशान क्यों होते हैं? आपका बेटा जो भी नुकसान करेगा, मैं उसे पूरा कर दूँगा। परमात्मा ने जो कारोबार इनके जिम्मे लगाया है; ये अपने आप ही उस कारोबार में लग जाएँगे।''

एक दिन राय भौंए ने गुरु नानक जी से कहा, ''मेरे पास परमात्मा का दिया हुआ बहुत अन्न-धन है। आप मुझे वह उपदेश दो, जिससे मेरे मन को शान्ति आ जाए और मुझे सच का ज्ञान

हो जाए।'' राय भौंए की विनती स्वीकार करते हुए गुरु नानक जी ने यह शब्द उचारा।

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु॥

आप प्यार से राय भौंए को समझाते हैं, ''देख प्यारे आ! राजा भी कूड़ है और प्रजा भी कूड़ है। यह संसार और इस संसार की सभी वस्तुएं कूड़ हैं, असत्य हैं।'' कूड़ उस चीज़ को कहते हैं जिसका अपना कोई स्वरूप न हो। जिस तरह मृग को प्यास लगती है तो वह दौड़ता है कि वहाँ पानी है लेकिन सच्चाई यह है कि वहाँ पानी नहीं होता। उसे फिर उसी तरह नजर आता है और वह फिर दौड़ता है, इसे सन्तमत में मृगतृष्णा कहते हैं। इसी तरह इन्सान असत्य चीज़ों को सत्य माने बैठा है।

कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु॥

रामायण में लिखा है कि राजा रावण ने बहुत लम्बी आयु भोगी। उसने ज्यादा से ज्यादा विद्या प्राप्त की और बहुत सोना चाँदी इकट्ठा किया। उसने बहुत ऊँची मंजिलों वाले मकान बनाए, जिस तरह आजकल बहुत ऊँची-ऊँची बिल्डिगें बनाने का रिवाज है। आप कहते हैं, यह सब कुछ असत्य है। ये माड़ियां (बिल्डिंगें) और उसमें रहने वाले जीव असत्य हैं। ये सदा नहीं रहेंगे। नामदेव जी कहते हैं:

लंका गढ़ सोने का भया, मूर्ख रावण क्या ले गया।

कबीर साहब कहते हैं:

इक लख पूत सवा लख नाती, ते रावण घर दीया न बाती।

कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु॥

आप कहते हैं कि सोना भी कूड़ है चाँदी भी कूड़ है। जो जीव इन्हें पहनकर शृँगार करते हैं, वे भी असत्य हैं। यहाँ का सब कुछ चलणहार है।

कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥

अब आप कहते हैं कि यह काया भी असत्य है, कूड़ है। सदा नहीं रहेगी। यह पराया मकान है, इसे यहीं छोड़ जाना है। इस शरीर पर जो सुन्दर कपड़े पहनते हैं, ये भी साथ नहीं जाएँगे। ये भी असत्य हैं। इन कपड़ों को पहनने वाले जीव भी असत्य हैं, सदा नहीं रहेंगे। हम इस रूप का मान करते हैं कि हमारे जैसा कौन है? गुरु साहब प्यार से समझाते हैं कि हड्डियों के ऊपर माँस है और माँस के ऊपर रूप का पोचा फिरा हुआ है। बुढ़ापे में हम इस बदलते हुए रूप को देखते हैं। मौत इसका रूप बिगाड़ देती है। मिट्टी मिट्टी में जाकर मिल जाती है।

कूड़ मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥

आप कहते हैं कि मियाँ भी असत्य है और बीबी भी असत्य है। वे आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, वे भी असत्य है या जो प्यार में लगे हुए हैं वह भी असत्य हैं, सदा नहीं रहेंगे। हम नहीं जानते कि पिछले जन्मों में हमनें कितनी पत्नियाँ और कितने पति बनाकर छोड़ दिए हैं। इसलिए आप प्यार से समझाते हैं कि हम जो कुछ भी इन आँखों से देख रहे हैं, सब असत्य है।

कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥

अब गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''देखो प्यारेओ! यह बहुत अचरज की बात है कि कूड़ का कूड़ के साथ प्यार लगा हुआ है। हम उस परमात्मा को भूल गए हैं।''

दात प्यारी विसरया दातारा।

किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥

अब आप राय को बहुत प्यार से समझाते हैं कि मैं तुझे किसका पता दूं कि तू किसके साथ दोस्ती कर? जो पैदा हुआ है उसे एक दिन यह संसार छोड़कर चले जाना है। सारी दुनिया ही

चलती सराय है। कोई भी पदार्थ स्थिर नहीं। इसलिए परमात्मा के अलावा किसके साथ दोस्ती करें, प्यार करें!

कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु॥

अब आप कहते हैं कि बेशक कूड़ बुरा है फिर भी जीव इससे चिपटे हुए हैं। यह कूड़ शहद के समान मीठा लगता है, लेकिन इस कूड़ का साथ लेकर सारी दुनिया भवसागर में डूबी हुई है।

एक पंडित राजदरबार में कथा किया करता था। वह राजा का दरबारी पंडित था। एक दिन कथा करने के बाद उसकी निगाह राजकन्या पर चली गई। उसके दिल में ख्याल आया कि मैं इस कन्या को कैसे हासिल करूँ। हम जानते हैं कि वाचक ज्ञानियों का क्या हाल होता है। जब काम का वेग आता है तो यह सारी अक्लें गुम कर देता है। यह सोचता हुआ वह अपने घर चला गया।

अगले दिन जब वह कथा करने आया तो उदास और परेशान था। राजा ने उससे पूछा, ''पंडित जी! आप उदास क्यों हैं?'' पहले तो पंडित चुप रहा। राजा के प्यार से पूछने पर बोला, ''आपको क्या बताऊं? मुँह छोटा और बात बड़ी है। मैंने ज्योतिष विद्या लगाकर देखा है कि आपके ऊपर बहुत कठिन साढ़े-सत्ती आने वाली है, जिससे आपको बहुत कष्ट होगा। मैंने आपका नमक खाया है मैं आपको दुखी कैसे देख सकता हूँ?''

राजा ने पूछा, ''इसका कोई उपाय बताओ।'' पंडित ने कहा, ''इसका उपाय है लेकिन आपके लिए करना बहुत मुश्किल है।'' राजा ने कहा, ''पंडित जी! बताओ।'' पंडित ने कहा, ''आप एक अच्छे संदूक, जिसमें हवा भी न जाए, उसमें अपनी राजकन्या और उसे जो भी दान-दहेज देना चाहते हैं साथ में कुछ दिनों का खाना रखकर उस संदूक को दरिया में बहा देने से आपकी

साढ़े-सत्ती टल जाएगी।'' राजा ने उसी तरह रात को संदूक दरिया में बहा दिया, जिसके बारे में और किसी को भी पता नहीं था।

पंडित ने अपने साथियों को बताया कि दरिया में जो संदूक बहा जा रहा है, इसमें बहुत धन-पदार्थ है। हम इसे बाहर निकाल लेते हैं। जब उन्होंने संदूक बाहर निकाल लिया तो पंडित ने उनसे कहा कि अगर हम इस संदूक को अभी खोलेंगे तो कोई देख लेगा। हम इसे छिपाकर रख देते हैं, एक दो दिन बाद खोलेंगे।

वहाँ एक राजा शिकार खेलता हुआ आया। उसने देखा कि जंगल में संदूक छिपाकर क्यों रखा गया है! जब राजा ने संदूक खोला तो देखा कि उसमें एक सुंदर राजकन्या बैठी थी। राजकन्या ने पंडित की सारी करतूत राजा को बताई। राजा ने संदूक में से राजकन्या और उसमें रखा हुआ दान-दहेज का सोना-चाँदी व सब धन-पदार्थ निकाल लिया। राजा के पास एक भालू था उसने उस भालू को संदूक में कैद कर दिया।

पंडित जी रात को अकेले ही अपनी कामना पूरी करने के लिए जंगल में आ गए। संदूक में कैद भालू गुस्से में था। जैसे ही पंडित ने संदूक खोला, भालू उस पर झपटा और पंडित को खा गया। राजकन्या की परमात्मा ने रक्षा की। उसे राजा के घर भेज दिया। बेशक पंडित जानता था कि झूठ बोलना अच्छा नहीं, फिर भी वह लालचवश झूठ बोलने से नहीं हटा।

गुरु साहब परमात्मा के आगे फरियाद करते हुए कहते हैं कि तेरे नाम के अलावा संसार में जो कुछ भी दिख रहा है वह कूड़ है झूठ है असत्य है।

नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु॥
सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ॥

राय भौंए ने गुरु नानक जी से कहा कि आपने जो कुछ

बताया, वह तो मेरी समझ में आ गया कि यह संसार असत्य है। लेकिन उस सच्चे परमात्मा को, जिसका कभी नाश नहीं होता, कैसे पहचान सकते हैं?

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि सबसे पहले हमारा हृदय सच्चा होना चाहिए। हमारे दिल में उस सच्चाई को प्रगट करने का शौक होना चाहिए। हम अपने आपको और दुनिया को धोखा दे सकते हैं, लेकिन परमात्मा हमारे अंदर बैठा सब कुछ देख रहा है।

सन्त-महात्मा, सतसंगी को एक नमूने का जीवन बनकर दिखाते हैं कि अपनी रोजी-रोटी कमाओ। हर प्रकार के नशों को छोड़ो और विषय-विकारों से ऊपर उठो। महात्मा शादी को बुरा नहीं कहते, लेकिन वे कहते हैं कि संयम में रहो। औरत-मर्द दोनों के लिए हुक्म है कि वे एक-दूसरे पर सब्र करें।

कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ॥

जब हम तन-मन से सच्चे होकर नाम की कमाई करते हैं तो हमारे अंदर नाम का प्रकाश हो जाता है। नाम हमारे ऊपर जन्म-जन्मांतरो से चढ़ी हुई कूड़ की मैल को धो देता है।

सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु॥
नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु॥

आप कहते हैं कि हम उस सच्चे परमात्मा को कैसे प्रगट कर सकते हैं? सबसे पहले हमें कण-कण में व्यापक उस शब्द की आवाज को सुनना है जो सच्चखंड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रही है। उसे अपने आपमें जज्ब कर लो, बोझ मत समझो, प्यार से सुनो।

हमारे ख्याल जितने पवित्र होंगे उतना ही हमारा मन पवित्र होगा। जब हम सिमरन के जरिए एकाग्र हो जाते हैं और धुन को ऊपर से पकड़ते हैं तब वह 'शब्द' हमारे अंदर प्रगट हो

जाता है। फिर हमारे दिल के अंदर ऐसा प्यार जाग जाता है जिसे हम छोड़ना चाहें तो भी छोड़ नहीं सकते।

सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ॥

अब आप कहते हैं, ''हम सच शब्द-नाम को तभी पहचान सकते हैं जब हमने अंदर जाने की युक्ति प्राप्त की हो कि किस रास्ते से अंदर जाना है। सबसे पहले उस जानकार से मिलना है जो अंदर जाता है। वह हमें भी अंदर ले जा सकता है।''

धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ॥

जब हम अपना तन और मन पवित्र करके विषय-विकारों से ऊपर उठ जाते हैं, दुनिया का सिमरन और विषय-विकारों का चितवन छोड़कर नाम का सिमरन करते हैं तो मन पवित्र हो जाता है। सन्त-महात्मा हमारी ऐसी हालत देखते हैं तो वह इस अच्छी धरती के अंदर 'नाम' का बीज डाल देते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे,''पवित्र आत्मा का सन्तों के पास आना इस तरह है जिस तरह खुष्क बारूद को आग के नज़दीक कर दें।''

सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ॥

अब आप कहते हैं कि हम उस परमात्मा सच को तभी पहचान सकते हैं, जब हमें सच्ची शिक्षा मिल जाती है। हम बाहर से ख्याल हटाकर अंदर 'शब्द' के साथ जुड़ जाते हैं।

दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ॥

सन्त-महात्मा किसी समाज की आलोचना नहीं सिखाते, बल्कि बताते हैं कि आप 'नाम' लो। मेहनत करके अंदर जाकर सच्चाई को देखो! जब हम 'नाम' की कमाई करते हैं, हमारे

अंदर अपने आप ही दया उत्पन्न हो जाती है। दान करने की लालसा पैदा हो जाती है और यह भी समझ आ जाती है कि हमारे दान का कौन हकदार है। फिर हम सही जगह दान देते हैं।

महात्मा न हमारे दान के भूखे हैं और न हमसे मान ही प्राप्त करना चाहते हैं। महात्मा अपना कमाकर खाते हैं लेकिन अपने सेवकों से कहते हैं कि अगर परमात्मा ने आप पर मेहर की है, थोड़ा बहुत धन दिया है तो आप ऐसे आदमी की मदद कर सकते हो जिसे आपकी मदद की जरूरत है।

आमतौर पर हम नहीं समझते कि दया किसे कहते हैं। हम ईर्ष्या में जल रहे होते हैं। हमारा अपना घर लुट रहा होता है और हम दूसरों पर परोपकार करने के लिए सोच रहे होते हैं। गुरु साहब कहते हैं, ''पहले अपने ऊपर दया करो। अपनी आत्मा को पाँचों डाकुओं से बचाओ, फिर दूसरों के लिए सोचो! पहले अपने घर की आग बुझाओ फिर दूसरों के घर की आग बुझाओ।'' तुलसी साहब कहते हैंः

दया धर्म का मूल है, नरक मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लग घट में प्रान॥

सचु ताँ परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु॥

अब आप कहते हैं, ''हम उस सच परमात्मा को जो सदा ही कायम है, तभी पहचान सकते हैं जब हम अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों परदे उतारकर दसवें द्वार में पहुंच जायें।'' कबीर साहब इसे प्रयाग राज और गुरु अमरदेव जी महाराज सच्चा अमृतसर कहकर बयान करते हैं। जब आत्मा दसवें द्वार में जाकर स्नान करती है तो इसके जन्मों-जन्मों के कर्म कट जाते हैं और यह उज्ज्वल हो जाती है।

सतिगुरु नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु॥

हम दसवें द्वार में सन्त-महात्माओं की मदद से ही पहुंच सकते हैं। सबसे पहले ऐसे महात्मा के पास जाओ जिसने अपनी जिंदगी में इस जगह पर निवास किया हो। हम भी वहाँ निवास कर सकते हैं। फिर हमारी आत्मा संसार की तरफ से सोना और परमात्मा की तरफ से जागना शुरू कर देती है।

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ॥

गुरु साहब कहते हैं, ''दुखों की दवाई 'नाम' है।'' जिस तरह हम कपड़े को साबुन से धोकर साफ करते हैं इसी तरह 'नाम' आत्मा के ऊपर लगे हुए पापों को धोकर साफ कर देता है। गुरु साहब कहते हैंः

संसार रोगी नाम दारू, मैल लग्गे सच बिना।

नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ॥
दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ॥

अब आप राय भौंए को बताते हैं, ''हमें परमात्मा से यह दान माँगना चाहिए कि अगर हमें कोई कमाई वाला महात्मा मिल जाए, तो हम उसके पैरो की राख अपने मस्तक पर लगा लें।''

कूंजो की सार कूंजे ही जानती हैं। हम विषय-विकारों में फँसे हुए दुनियादार लोग महात्माओं को क्या जान सकते हैं? महात्मा की कद्र महात्मा ही जानते हैं।

कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ॥

अब आप राय भौंए से कहते हैं देख प्यारेआ! हम झूठा लालच छोड़कर प्यार से भक्ति करके उस परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं।

फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ॥

अगर हम भक्ति करें तो हमें यह फल मिलता है कि परमात्मा हमारे अंदर प्रगट हो जाता है और हमें अपने घर में रहने की जगह दे देता है।

जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ॥

अगर परमात्मा ने हमारे पूर्वले कर्मों में लिख दिया हो कि आपको महात्मा के चरणों में जाकर भक्ति करनी है तो ही हमें कमाई वाले महात्मा के दर्शन होते हैं और उनके चरणों की धूल नसीब होती है।

मति थोड़ी सेव गवाईऐ॥ मति थोड़ी सेव गवाईऐ॥

प्यारेओ! सेवा करनी आसान है। जीव देखा-देखी सेवा कर लेता है, लेकिन यह संभालनी बहुत मुश्किल है। हम कम बुद्धि वाले लोग लंगर की और भजन-अभ्यास की भी सेवा कर लेते हैं लेकिन सेवा हम दुनिया की आशाएँ रखकर करते हैं। हम जानते हैं कि एक ख्वाहिश पूरी हो जाती है तो मन और ख्वाहिशें पैदा कर देता है। जब हमारी ख्वाहिश पूरी नहीं होती तो हम अभाव ले आते हैं। सेवा करके अहंकार आ जाता है, की हुई सेवा को बेकार कर लेते हैं।

गुरु साहब ने प्यार से समझाया है कि हम अपने जीवन को पवित्र बनाएँ। किसी चीज का अहंकार न करें। सब कुछ परमात्मा का दिया हुआ है। उसकी भक्ति करके उससे मिलाप करें।

❁❁❁

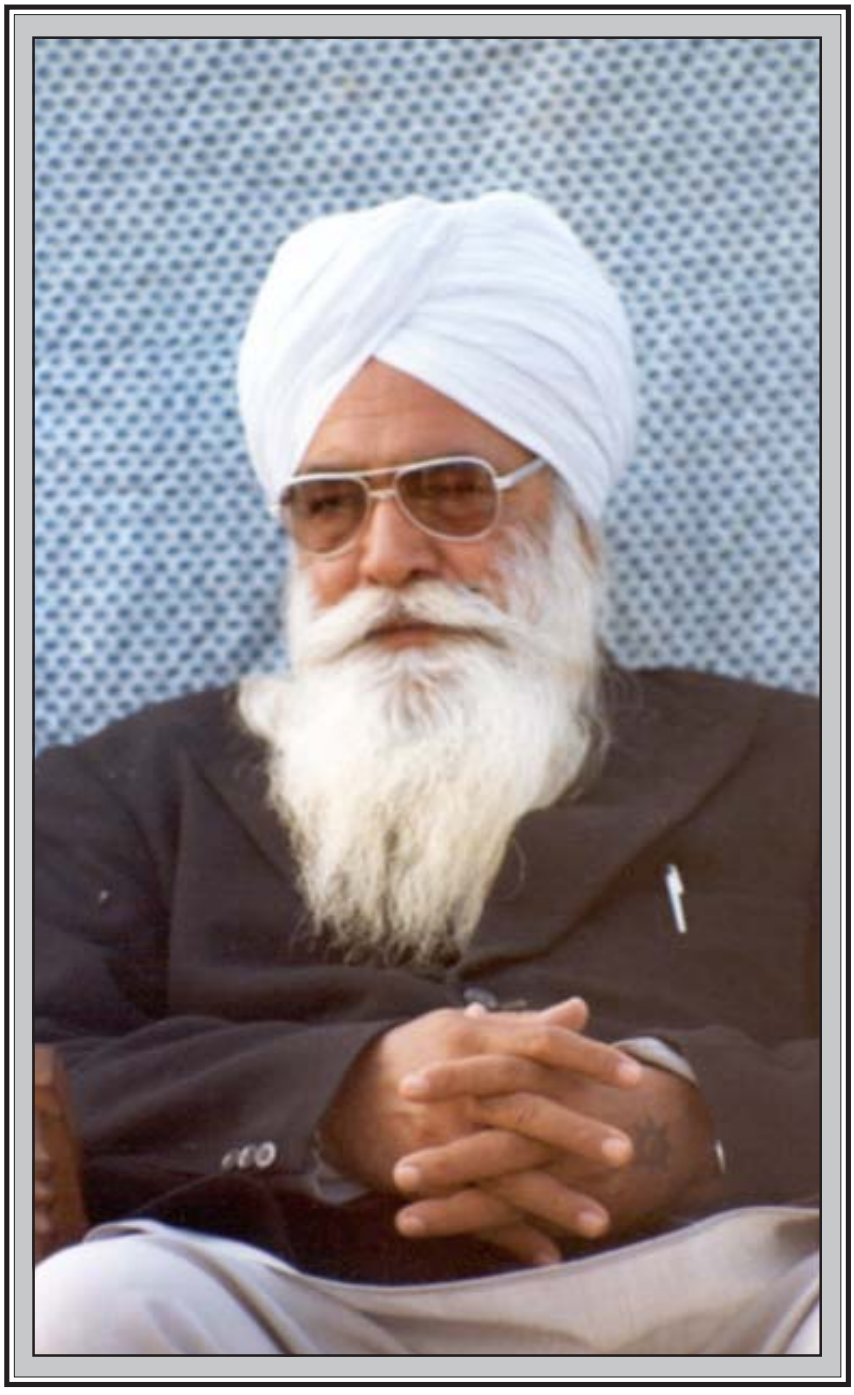

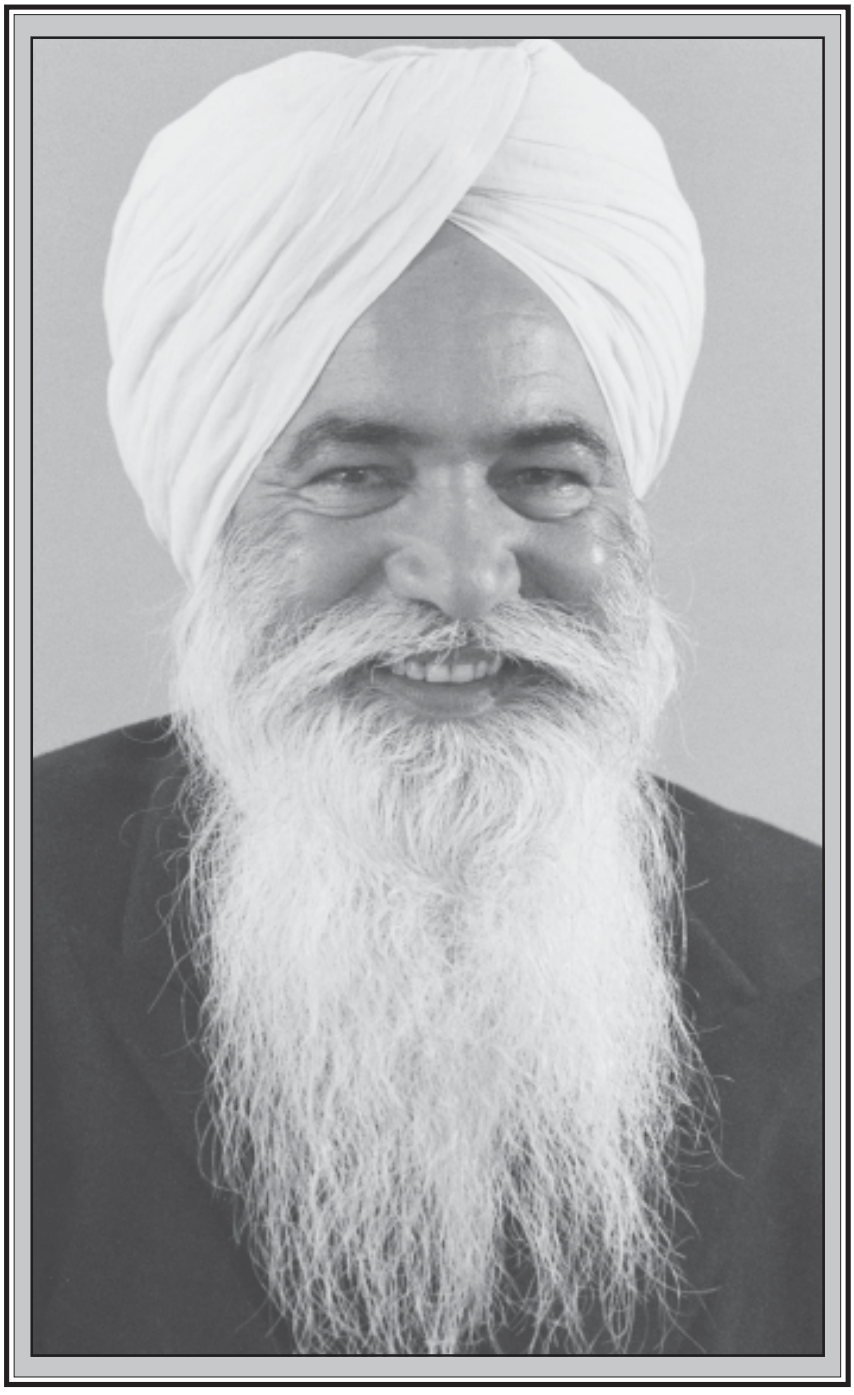

ग्यारह

नाम का रंग

जब गुरु नानकदेव जी हिन्दुस्तान के बहुत से हिस्सों में 'शब्द-नाम' का प्रचार करते हुए हिमालय के सुमेर पर्वत पर गए। तब उनकी नजर सिद्ध मंडली पर गई, जिन्होंने घर-बार छोड़कर जंगलों में डेरे लगाए हुए थे। वे पेड़ों के फल और कंदमूल खाने में ही मुक्ति समझते थे। उस समय भर्तरी, गोरखनाथ, गोपीचन्द और भी कई योगी मशहूर थे। बहुत से राजा-महाराजा उन योगियों के शिष्य बने। राजा-महाराजाओं के शिष्य होने के कारण और लोगों ने भी योग धारण किया।

सिद्ध मंडली ने गुरु नानक जी से पूछा कि संसार में क्या हो रहा है? परमात्मा कहाँ है? परमात्मा से मिलाप किसकी शरण में जाकर किया जा सकता है? इसके अलावा उन्होंने और भी कई सवाल किए। गुरु नानक जी उनके सवालों का जवाब बहुत विस्तार से दे रहे हैं, गौर से सुनो।

सिद्धों और योगियों की उम्रें बहुत लम्बी थी। उन्हें अहंकार था कि हम तो अपने योग के बल से इतनी ऊँची जगह पहुँचे हैं। यह बालक हमें क्या समझा सकता है और यह यहाँ कैसे आ गया? क्योंकि उस समय गुरु नानक जी की उम्र काफी छोटी थी। उनके साथ बाला और मरदाना भी थे। आखिर सिद्ध पूछने लगे कि मातलोक का क्या वरतारा है, वहाँ क्या हो रहा है?

सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल॥

आप कहते हैं ''सिद्धों! सच का दुनिया में अकाल पड़ गया है और झूठ प्रधान हो गया है। आत्मा पापों की दलदल में फँस चुकी है। जीव पापों में फँसकर भूतों की तरह हो गए हैं।''

बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि॥

आप कहते हैं कि सतयुग में जो आत्माएँ इस संसार में आई थीं, वे अपनी आबरू साथ ले गई हैं। सतयुग में लोग सच धारण करते थे इसलिए उनका मन थोड़े से इशारे से ही परमात्मा की तरफ लग जाता था। सच और विवेक बुद्धि धारण करने से जीव परमात्मा से मिल जाते थे। अब सिर्फ दाल ही बची है, यह किस तरह उग सकती है?

सतयुग और त्रेता युग, जा पर पूजा चार।
तीनों युग तीनों दृढ़ कल, केवल नाम उद्धार॥

जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ॥

आप कहते हैं कि सारे दाने दाल बन गए हैं, अगर एक भी दाना साबुत हो तो ही उग सकता है। पहले संसार में ऋषि-मुनि अच्छे थे। वे खुद भी जप-तप करते थे और जीवों से भी जप-तप करवाते थे। इस समय अगर कोई धनी आदमी यज्ञ करवाना भी चाहे तो यज्ञ करने वाले ही नहीं हैं। बीज बोने के लिए भी ऋतु होनी चाहिए अगर हम बेमौसम बीज बोएंगे तो वह नहीं उगेगा।

सतयुग में सच धारण करके, त्रेता में यज्ञ-होम करके और द्वापर में पूजा करके मुक्ति प्राप्त कर लेते थे। उन युगों में ऋषि-मुनि अच्छे थे। लेकिन इस समय ऋषि-मुनि संसार में विधिपूर्वक यज्ञ नहीं करवाते। अब सतयुग वाली ऋतु नहीं, कलियुग है।

कलियुग में 'शब्द-नाम' की कमाई में मुक्ति है। हम जिस युग में पैदा हुए हैं, वही साधन अपनाकर कामयाब हो सकते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

कलियुग में कर्म-धर्म ना कोई, नाम बिना उद्धार ना होई।

नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ॥

आप कहते हैं कि जिस तरह कोरे कपड़े पर जब तक

फिटकरी न लगाएँ तब तक उस पर पक्का रंग नहीं चढ़ता। उसी तरह जब तक हम सतगुरुओं के पास जाकर आत्मा को नाम की खुराक नहीं देते, तब तक हमारे मन पर **नाम का रंग** नहीं चढ़ता।

भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ॥

सबसे पहले हमारे दिल में परमात्मा के लिए भय हो और हमें बुरे कर्म करने से पहले शर्म आए कि मैं एक इन्सान हूँ! क्या यह बुराई मेरे लिए शोभादायक है? हम जानते ही हैं कि जब हम परमात्मा से डरते हैं, तब पाप करने में शर्म महसूस करते हैं। जब कपड़ा साफ होगा तो **नाम का रंग** भी चढ़ेगा और हम कामयाब भी होंगे। बेशक कहने वाले कह देते हैं:

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।

ऐसे विचार कुमार्ग पर ले जाने वाले हैं। जो कर्म हम करते हैं वे हम खुद ही भोगते हैं। हम रिश्तेदारों और दोस्तों से डरते हुए उनके खिलाफ कोई बुरा काम नहीं करते कि कहीं ये हमसे नाराज़ न हो जाएँ? क्या हम परमात्मा से नहीं डरते कि वह भी हमसे नाराज़ हो सकता है।

नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ॥

जिस पर एक बार नाम का, भक्ति का रंग चढ़ जाता है वह फिर झूठ में, पाप में नहीं फँसता। कबीर साहब कहते हैं:

जिनको सतगुरु रंग दिया, कभी ना होय कुरंग।

लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु॥

गुरु नानकदेव जी सिद्धों से कहते हैं, ''देखो प्यारेओ! लोभ इस युग का राजा है, झूठ इसका प्रधानमंत्री है; काम इनको सलाह देने वाला मुखिया है।''

कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु॥

जब कोई न्याय करना हो तो काम को बुलाते हैं। इनका चेयरमेन लोभ है। कलियुग में कामी, क्रोधी, लोभी जीव दुनिया को रास्ता दिखाएँगे। लोगों को उपदेश देंगे लेकिन खुद इन पाँच डाकुओं से ग्रस्त होंगे।

अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु॥

अब आप दुनिया की हालत बयान करते हैं, ''किसी को शब्द-नाम का, सतसंग का और महात्मा का ज्ञान नहीं। महात्मा हम पर दया करते हैं। उनके दिल में हमारे लिए आदर और प्यार है। दुनिया ज्ञान के बिना अंधी है और पापों के तले दबकर मुर्दे की तरह हो गई है।''

गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु॥

अब आप प्यार से कहते हैं कि इस युग में जो अपने आपको ज्ञानी, आचार्य कहलवाते हैं वे दुनिया के पदार्थों के लिए नाचते हैं। वे पिछले महात्माओं के स्वाँग बना लेते हैं, जिस तरह नाचने वाले लोग राम और कृष्ण जी महाराज के स्वाँग बनाते हैं और उनके चेले साज बजाते हैं।

हम जानते ही हैं कि अगर हम शेर की खाल पहन लें तो हमारे अंदर शेर वाले गुण नहीं आते। हम जो है सो हैं। अगर हम किसी महात्मा या पीर पैगम्बर का स्वाँग धारण कर लें तो हमारे अंदर वह शक्ति नहीं आती जो उस पीर-पैगम्बर में थी।

ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु॥

आप कहते हैं, ''ये लोग सभाओं में बहुत ऊँचा गाते हैं। पिछले जमाने के सूरमा, योद्धा और बहादुरों के गीत गाते हैं। शब्द-नाम का कोई प्रचार नहीं होता।''

कुछ लोगों ने परम पिता कृपाल से पूछा कि दुनिया में

शान्ति किस तरह हो सकती है? आपने प्यार से जवाब दिया, ''सन्त-महात्माओं, गुरु पीरों ने जो ग्रन्थ लिखे हैं, अगर उन पर अमल कर लें तो दुनिया में अमन हो सकता है।''

मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि जो अति मूर्ख होंगे, जिन्हें सुरत-शब्द के अभ्यास का ज्ञान नहीं होगा, लोग उन्हें ही पंडित कहेंगे। जिन्हें नाम का ज्ञान नहीं, वे परमात्मा की भक्ति क्या करेंगे? बल्कि वे तो हुज्जतें करते हैं कि इसमें यह कमी है उसमें वह कमी है। ऐसे लोग समाजों में भेदभाव पैदा करते हैं और एक-दूसरे को आपस में लड़वाते हैं।

कलियुग में मियाँ-बीबी सिर्फ भोग-वासना के लिए ही एक-दूसरे से प्यार मोहब्बत करेंगे।

धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु॥

अब आप कहते हैं कि इस युग में जो अच्छे आदमी होंगे, वे धर्म तो जरूर करेंगे लेकिन उसका फल गँवा लेंगे। वे लोग उसी समय अच्छे कर्म का फल माँगेंगे। उसी समय महात्मा से कहेंगे कि हमारे ऊपर दया करो! हमारा बच्चा राजी हो जाए! हमारा कारोबार अच्छा चल पड़े! हमारा शरीर तंदुरुस्त हो जाए! हम मुकदमा जीत जाएं! जो और ज्यादा समझदार हैं, वे कहते हैं, ''क्या हमें मुक्ति मिल जाएगी?''

मैं बताया करता हूँ कि गणेशगढ़ गांव में एक आदमी की टांग पर काफी चोट लगी। वह सतसंग में नहीं आ सकता था। उसने कहा, ''अगर आप महाराज को यहाँ ले आओ तो मैं धन्यवादी होऊँगा।'' मैं परम पिता कृपाल के साथ उस आदमी के घर गया। उन्होंने चाय बनाई। चाय पिलाने से पहले उसने कहा, ''पहले मेरी चोट वाली जगह पर दृष्टि डालो।''

आप खुद सोचकर देखो! वह चाय कितने की होगी! और माँग कितनी बड़ी है! हम किसी को निःस्वार्थ एक कप चाय भी नहीं पिला सकते। उसमें भी कोई न कोई माँग रखते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''परमात्मा हम पर मेहर करता है हमें धन पदार्थ देता है। अगर हम दायें हाथ से दान करें तो बायें हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए। हमें उस परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमें किसी की मदद करने के काबिल बनाया।''

जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु॥

सिद्धों को यही घमंड था कि नानक जी गृहस्थी हैं। हम योगी हैं। हमने कभी औरत की शक्ल नहीं देखी। गुरु नानक जी उन लोगों को मुखातिब करके कहते हैं, ''घर की औरत छोड़कर क्या रोटी के बिना गुजारा हो गया? रोटी के लिए कितनी औरतों के आगे हाथ फैलाने पड़े। घर की जायदाद छोड़कर औरों की जायदादों पर नजर रखी! इसके लिए कितने झगड़े करने पड़े! आप अपने आपको जती तो कहलवाते हो लेकिन आपको युक्ति का पता नहीं कि किस युक्ति को धारण करके जती होते हैं।''

सन्त हमें समझाते हैं कि प्यारेओ! अपना गृहस्थी जीवन संयम में बिताओ। गुरु साहब कहते हैंः

एके नारी सदा जती।

जिससे शादी हो गई, उसी के साथ सम्बन्ध है तो हम जती से कम नहीं। गृहस्थ में हम खाने-पीने, पहनने वगैरह की सब जरूरतें पूरी कर सकते हैं।

फर्ज करो, एक आदमी बाजार में जा रहा है। वहाँ अच्छे-अच्छे खाने रखे हैं। मन कहता है, ''ये लेने हैं।'' लेकिन उसके

पास पैसे नहीं। मन अड़ियल है। उसे झूठ बोलकर माँगना पड़ेगा या चोरी करनी पड़ेगी। अगर हम गृहस्थ में रहते हुए अपने दस नाखूनों की किरत करें तो आसानी से उसे खरीद सकते हैं।

सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै॥

अब गुरु नानकदेव जी सिद्धों से कहते हैं, ''मैं जिससे भी मिलता हूँ वह कहता है कि 'मैं पूर्ण हूँ, मैं सही हूँ।' कोई भी अपने आपको कम नहीं समझता।''

पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि जिंदगी बहुत लम्बी होती है। जो अपने आपको पूर्ण कहता है क्या उसने जिंदगी में कोई कमाई की है, साधना की है? दुनिया में उसकी कितनी इज्जत है? अगर इस दुनिया में हमारी इज्जत है तो परमात्मा भी हमें मान देता है।

महात्मा दिलों पर राज्य करते हैं। गुरु नानकदेव जी को आए हुए पाँच सौ साल और क्राइस्ट को आए हुए दो हजार साल हो गए। हम आज भी उन्हें प्यार से याद करते हैं। सुबह उठकर उनका नाम लेते हैं। अगर हम भी उन महात्माओं वाले गुण धारण करें तो हम भी पूर्ण हो सकते हैं।

वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''परमात्मा ने मर्यादा बनाई है कि किस तरह जीव-जन्तु पैदा होंगे और किस तरह लय होंगे! किस तरह सूरज-चन्द्रमा दुनिया को रोशनी देंगे! इनका रखवाला वही परमात्मा है।''

सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ॥

आप कहते हैं कि संसार में आकर सब जीवों ने अपने

कर्मों के मुताबिक छलाँगें लगाईं कि मैं बड़ा बनूँ, ज्ञानी-ध्यानी बनूँ, मेरी हुकूमत हो। लेकिन यह सब परमात्मा ने अपने हाथ में रखा है। जैसा जिसका कर्म है उसको वैसा ही फल देता है।

अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे॥

अब आप कहते हैं कि मालिक के दरबार में हमारी जाति व हुकूमत नहीं जाएगी। वहाँ हमारे परिवार का और जान पहचान का भी कोई नहीं होगा। वहाँ सब नए ही मिलेंगे। वहाँ कोई भी हमारा स्वागत नहीं करेगा। वहाँ सिर्फ उन्हीं लोगों का स्वागत होगा जो परमात्मा की भक्ति करते हैं।

जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ॥

गुरु नानकदेव जी सिद्धों से कहते हैं, ''देखो प्यारेओ! उस सच्चे दरबार में पहुँचकर ही अच्छे और बुरे का पता चलता है। अगर उस दरबार में हमारी इज्जत है तो हम अच्छे हैं। अगर वहाँ कोई इज्जत नहीं करता और यमदूत सिर पर खड़े हैं तो हम बुरे हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

लेखा देना सहेला, जे मन सच्चा होए।
उस सच्चे दीवान में, पल्ला न पकड़े है कोए॥

धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''यह हमारे अपने बस में नहीं कि हम जंगलों पहाड़ों में फिरें, नाम की कमाई करें या परमात्मा की भक्ति करें। यह सब कुछ परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है।''

परमात्मा की भक्ति वही करते हैं जिनकी किस्मत में परमात्मा धुर-दरगाह से लिख देता है कि तुम्हें मेरी भक्ति करके मेरे साथ मिलाप करना है।

एना जंता के वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ॥

जिन महात्माओं का परमात्मा से मिलाप हो जाता है वे ही उस परमात्मा की मौज को समझ सकते हैं। गुरु नानकदेव जी उस परमात्मा से कहते हैं, ''तूने इस संसार की अजीब ही रचना की है। कोई तेरी भक्ति में लगा हुआ है तो कोई दुनिया की रंगरलियों में खोया हुआ है। इन जीवों के अपने अख्तियार में कुछ भी नहीं है कि हम भोगी बनें या परमात्मा के भक्त बनें।''

इकना नो तूँ मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ॥

आप परमात्मा के आगे विनती करते हुए कहते हैं कि हे परमात्मा! यह तेरी अजीब लीला है कि तू कुछ जीवों को इन्सानी जामे में आकर मिल लेता है, उनके अंदर विरह-तड़प और अपने मिलाप का शौक पैदा कर देता है। तू जिन जीवों को भुल्लड़ बना देता है, वे शब्द-नाम की कमाई की तरफ नहीं आते। उन्हें चाहे जितना मर्जी समझा लो, वे विरोध ही करते हैं।

गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ॥

अब गुरु नानकदेव जी सिद्धों से कहते हैं, ''देखो प्यारेओ! हमें यह समझ हमारे सतगुरुओं ने दी कि किस तरह परमात्मा से अंदर जाकर मिलना है। यह गुरुओं की ही कृपा है कि उस परमात्मा ने हमें अंदर से ही ज्ञान दिया कि गुरु के बिना मुक्ति नहीं और गुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता।''

सहजे ही सचि समाइआ॥ सहजे ही सचि समाइआ॥

आप कहते हैं, ''जब हमें 'नाम' मिल जाता है, गुरु की शरण प्राप्त हो जाती है, तब हम सतसंग में जाकर अपनी कमियाँ निकालना शुरू करते हैं। हमारे अंदर नाम का शौक पैदा हो जाता है। स्वाभाविक ही हम उस परमात्मा में समाकर अपने जीवन को सफल कर लेते हैं।''

❁❁❁

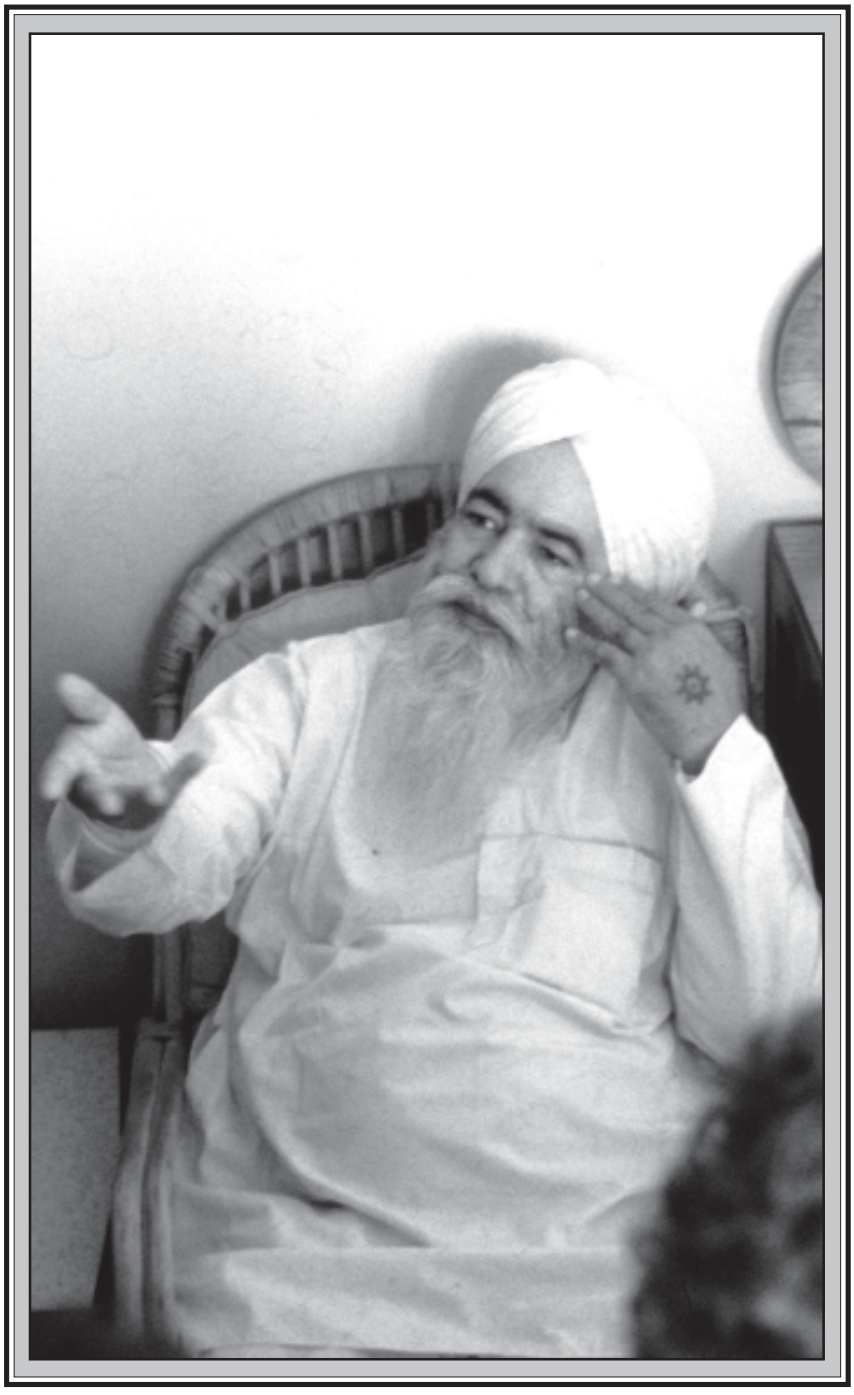

बारह

सुख और दुःख

एक बार गुरु नानकदेव जी से आपके सेवकों ने विनती की कि आप अपने सतसंगों में सुखों और दुःखों के बारे में बयान करते हैं। **सुख और दुःख** क्या हैं? हम जीव तो अंधेरे में फँसे हुए हैं। हमें न सुख का पता है न दुःख का पता है। मामूली सा दुःख या कोई समस्या आने पर हम रो पड़ते हैं। मामूली सा सुख आने पर हममें अहंकार आ जाता है। आप हमें प्यार से समझाओ ताकि हम फायदा उठा सकें।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''प्यारेओ! वह सुख नहीं जिसका अन्त दुःख हो। हम भोग भोगते हैं। क्षण-भंगुर सुख को सुख समझते हैं। भोग से रोग उत्पन्न होते हैं। जब रोग पैदा होते हैं तो हम पछताते हैं। आप कहते हैं:

बहु साधो दुःख प्राप्त होवे।
भोगों रोग से अन्त बेगोवे।
आए जाए दुःख पाऐन्दा।

सन्तों के कहने का भाव उस दुःख से है जो हमें मौत के समय भुगतना पड़ता है। जो पैदा होता है वह अवश्य मरता है। जो 'नाम' की कमाई के बिना संसार छोड़ता है, उसे अपने कर्मों के मुताबिक कहीं न कहीं जन्म अवश्य लेना पड़ता है।

प्यारेओ! माँ के पेट के अंदर जीव की हालत देखो! यह वहाँ उल्टा लटका होता है। वह बड़ी तंग और अंधेरी जगह है। किसी तरफ कुछ भी दिखाई नहीं देता। माँ को भी अपना दुःख नहीं बता सकता। वहाँ इसने सब सहारे छोड़कर एक परमात्मा का ही सहारा रखा होता है। परमात्मा ने इसे वहाँ से बचाकर

मातलोक में भेजा। अफसोस की बात है कि यह यहाँ आकर क्षण-भंगुर सुखों को ही सुख समझकर उस धनी परमात्मा को भूल गया कि फिर उसके आगे पेश होना है।

महात्मा हमें याद दिलाते हैं कि थोड़ा सोचकर देखो! वह कष्ट का समय हर किसी को देखना पड़ता है। इसलिए गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''सबसे बड़ा दुःख मौत और पैदाइश का है।'' आप कहते हैंः

मुख तले पैर ऊपरे वसन्धे कुहथड़े थाँव।
नानक सो धनी क्यों विसारया उदरे जिसका नाँव॥

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं, ''बच्चे को माता के पेट की जठर अग्नि का ताप नब्बे दिन तक सहना पड़ता है। हड्डियाँ जठर अग्नि से पकी होती हैं, इसलिए सख्त होती हैं।'' बाबा जयमल सिंह जी कहा करते थेः

जैसी अग्न उदर में तैसी बाहर माया।

आप कहते हैं, ''दोनों आग एक जैसी होती हैं। बाहर आकर मातलोक की पवन का नशा चढ़ जाता है। जीव परमात्मा को भूल जाता है।'' महात्मा हमें सावधान करते हैं और उस देश सच्चखंड, जहाँ की यह आत्मा रहने वाली है, वहाँ के सुख के बारे में बताते हैं कि वहाँ मौत नहीं, पैदाइश नहीं, ईर्ष्या नहीं और माया का कोई असर नहीं।

महात्मा बताते हैं कि सुख प्राप्त करने की कीमत दुःख है। आप दुनिया में कोई भी कारोबार करो तो मेहनत करनी पड़ती है, कष्ट उठाना पड़ता है। बिना कष्ट उठाए माता बच्चा भी पैदा नहीं कर सकती। इसी तरह सोना खान खोदकर निकाला जाता है। मोती समुद्र में गहरी डुबकी लगाकर प्राप्त किया जाता है।

अगर कोई यह कहता है कि मैंने बिना मेहनत किए, बिना कष्ट उठाए सुख प्राप्त कर लिया है; परमात्मा को पा लिया है तो वह एक और कर्ज उठा रहा होता है। हमें सन्तों की जीवनियाँ पढ़कर पता चलता है कि उन्होंने कितना संयम रखा होता है, कितनी मेहनत की होती है, कितनी भूख-प्यास काटी होती है।

भाई गुरुदास जी बहुत श्रद्धालु और अच्छी कमाई वाले थे। आप अपनी वार में लिखते हैं:

रेत अक्क आहार कर रोड़ां दी गुरु करे बिछाई।

गुरु नानक साहब बेदी कुल में पैदा हुए थे। अब भी बहुत लोग बेदी कुल का आदर करते हैं। आपके माता-पिता आपको सब किस्म की सहूलियतें दे सकते थे। लेकिन आप ग्यारह साल तक अक्क के पत्ते उबालकर पीते रहे और आपने दुनिया के सब सुख आराम छोड़कर ईंट-पत्थरों का बिछोना किया।

गुरु नानकदेव जी की पूज्य माता ने आपसे पूछा कि, ''बेटा! 'नाम' जपना कितना मुश्किल है?'' आपने आँखें भरकर कहा:

आखण औखा सच्चा नाम।

सच्चा 'नाम' कह देना बहुत मुश्किल है। हम जितना नाम की तरफ आकर्षित होते हैं, मेहनत करते हैं; वह मालिक हमारे सामने उतनी ही मुश्किलें खड़ी कर देता है। वह देखता है कि क्या ये इन्हीं मुश्किलों में उलझ गए हैं या मुझसे मिलकर ही खुश होंगे? हमारे राजस्थान की कहावत है:

तेरे दुःखां दी बणूंगी दारू, ते सुख तेरे रोग होणगे।

आप कहते हैं, ''अगर हम यहाँ कष्ट सहते हैं, रातें जागते हैं, मेहनतें करते हैं, परमात्मा की भक्ति करते हैं तो परमात्मा में मिल जाते हैं। अगर हम विषय-विकारों में लगकर परमात्मा

को भूल जाते हैं तो हमारे अंदर परमात्मा से मिलने की इच्छा ही पैदा नहीं होती।'' कबीर साहब कहते हैंः

सुख में सिमरन ना किया, दुःख में किया याद।
दुःखी होय दास की, कौन सुने फरियाद॥

अगर हमारे दरवाजे पर कोई जोरावर दुश्मन आ जाए! हम उस समय बंदूक चलाना सीखें या प्यास लगने पर कुआँ खोदें तो हम कभी भी कामयाब नहीं हो सकते। जीवों की यही हालत है।

जब अन्त समय आता है, बीमारियाँ घेर लेती हैं, तब हम दान-पुण्य करते हैं। बहुत से समाजों में मौत के समय मरने वाले को गीता या किसी धर्म पुस्तक का पाठ सुनाते हैं। अगर उस समय मरने वाला सुन नहीं सकता तो उसके कान में आवाज देते हैं। हिन्दू लोग ज्योत जलाकर पूछते हैं, ''क्या ज्योत नजर आ रही है?'' यह सब कुछ हमें जीते जी करना था। अन्त समय में क्या हो सकता है? कबीर साहब कहते हैंः

अब ना भाजस भाजस कर भाई, आवे अन्त ना भजया जाई।

दुखु दारू सुख रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥
तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी ने होई॥

आप कहते हैं, ''सुख रोग है। दुःखों से छुटकारा पाने के लिए 'नाम' की कमाई करनी चाहिए।''

संसार रोगी नाम दारू , मैल लग्गे सच बिना।

तू करण-कारण और पतित पावन है जो चाहे सो करता है। कोई तुझे सलाह नहीं दे सकता। कबीर साहब कहते हैंः

अपना चितव्या हर करे, क्या मेरा चितव्या होए।

परमात्मा जो चाहे सो करता है। हमारे सोचने से क्या होता है? गुरु साहब प्यार से कहते हैंः

मता करे पूर्व के ताईं पश्चिम ही लै जात ॥

हम पूर्व की तरफ जाना चाहते हैं, वह पश्चिम की तरफ ले जाता है। हमें उसकी Planing का ज्ञान नहीं। जानवर प्यासे मरते हैं, वह एक पल में इतनी बारिश कर देता है कि जल-थल हो जाता है! राजा रात को सोता है; सुबह होते ही दूसरी पार्टी वाले उसे कैद करके जेल की कोठरी में डाल देते हैं। इसी तरह शेर जंगल में आजाद है। जब शिकारियों के हाथ में आ जाता है तो अपने आपको पिंजरे में पाता है।

सन्त वजीदा कहते हैं, ''एक के घर में बेटे हैं, आगे उनके बेटे भी हैं। एक के घर में बेटियाँ हैं आगे उनके भी दोहते हैं। एक के घर में सिर्फ एक ही बच्चा होता है, वह भी किसी एक्सीडेंट में मर जाता है। उस परमात्मा को कौन कह सकता है कि 'तू ऐसे नहीं, ऐसे कर'।''

बलिहारी कुदरति वसिआ॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ॥

अब आप कहते हैं, ''मैं तुझ पर बलिहार जाता हूँ। तू बहुत सुंदर तरीके से जीवों के अंदर बस रहा है। ज्योत रूप होकर सबको सतह दे रहा है। तेरा कोई अंत नहीं पा सका। बड़े-बड़े आलम-फाज़लों ने बहुत जोर लगाया। आखिर तुझे बेअंत कहकर चुप हो गए।''

जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ।

आप कहते हैं कि तू सारे जीवों में ज्योत रूप, शब्द रूप होकर विराजमान है। तू सबकी रक्षा कर रहा है। तू जीवों में इस तरह मिला हुआ है, जिस तरह पानी में पतासा मिल जाता है। कबीर साहब कहते हैं:

ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमें, जाग सके तो जाग॥

वह परमात्मा सबमें इस तरह समाया है, जिस तरह तिलों में तेल दिखाई नहीं देता लेकिन यत्न से निकाला जाता है। पत्थर में अग्नि है लेकिन युक्ति से रगड़कर निकाली जाती है। इसी तरह तेरा प्यारा प्रीतम तेरे अंदर है अगर तू हिम्मत करके उसे जगा सकता है तो जगा ले; मिलाप करना चाहे तो कर सकता है।

तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ॥

अब आप कहते हैं, ''तू सच्चा साहिब है; कभी फना नहीं होता। तू आदि-युगादि से चला आ रहा है। जिस भाग्यशाली जीव ने तेरी सिफत गाई, तेरी भक्ति की, वह सदा के लिए दुःखों से छुटकारा पा गया; इस संसार समुद्र से तर गया।''

कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ॥

जिन प्रेमियों ने आपसे सवाल किया था, आप उन्हें प्यार से कहते हैं, प्यारेओ! मैंने तुम्हें उस करण-कारण भगवान से मिलने के फायदे बताए हैं। वह भगवान ज्योत रूप होकर सबके अंदर विराजमान है। वह जो चाहे सो कर सकता है। उसे कोई सलाह देने वाला नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, कोई भाई-बंधु नहीं।

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह॥

किसी ने गुरु अंगददेव जी से सवाल किया कि यह दुनिया चार वर्णों-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में बँटी हुई है; क्या इनके धर्म अलग-अलग हैं? गुरु अंगददेव जी कहते हैं, ''प्यारेओ! परमात्मा से जुड़ने का नाम योग है। ब्राह्मण का धर्म 'शब्द-नाम' की कमाई करना और लोगों को भी 'शब्द-नाम' का ज्ञान देकर भक्ति में लगाना है।''

खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह॥

आप कहते हैं कि क्षत्रिय का धर्म बहादुरी करना और लोगों को भी बहादुरी के लिए प्रेरित करना है। देश की सेवा क्षत्रिय लोग ही करते हैं। शूद्र का धर्म है लोगों के घरों की सफाई करना, मेहनत करके अपनी रोजी-रोटी कमाना।

सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ॥

अब आप प्यार से कहते हैं, ''ब्राह्मण का धर्म यज्ञ करना और यज्ञ करवाना, विद्या पढ़नी और विद्या पढ़ानी, अतिथियों की सेवा करनी और करवानी है। सबका धर्म 'नाम' जपना है। परमात्मा का धर्म ही हमारी आत्मा का धर्म है।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

सगल धर्म में श्रेष्ठ धर्म, हर का नाम जप निर्मल कर्म।

महात्मा सच्चखंड से आते हैं। वे दुनिया में बंटवारा नहीं करते। पहले के बने हुए समाजों को नहीं तोड़ते और न ही कोई नया समाज बनाते हैं। वे आकर सच्चाई बताते हैं कि किस तरह परमात्मा की भक्ति करनी है। वह परमात्मा सबके अंदर है।

महात्मा हमें बताते हैं कि जिस तरह सूरज की कोई जाति नहीं, वह सबको एक समान रोशनी देता है। इसी तरह परमात्मा की भी कोई जाति-पाति नहीं। जो परमात्मा की भक्ति करता है, परमात्मा उसी का हो जाता है।

एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा॥
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ॥

आप कहते हैं कि एक कृष्ण जो सबसे बड़ा परमात्मा है, वही सबका देवता है। वही जीवित रूप में आत्मा होकर सब जीवों में विराजमान है। जो इस भेद को समझ लेता है वही जीते

जी देवता है और मैं उसका सेवक हूँ। यह मसला बातों से हल नहीं होता। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गल्ली किसे न पाया।

सन्त-महात्मा हमें अपना तजुर्बा बताते हैं कि हमें किस तरह अपने ख्यालों को पवित्र करना है, किस तरह सन्तों का दिया हुआ सिमरन करना है, किस तरह तीसरे तिल पर एकाग्र होना है। जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं फिर हमें कुछ समझ आती है क्योंकि यहीं से हमारे सफर की शुरुआत होती है। जब हम अपने अंदर परमात्मा को देख लेते हैं तब हमें सच्चाई का पता चलता है कि परमात्मा सबके अंदर विराजमान है।

ऐसा सतसंगी, ऐसा महात्मा जीते जी देवता है। ऐसा सतसंगी किसी के साथ द्वेष नहीं रखता। सबको परमात्मा का बच्चा समझता है। गुरु गोविंदसिंह जी महाराज कहते हैंः

साध कर्म जो पुरुष कमावे, नाम देवता जगत कहावे।

जिन लोगों ने नेक कर्म किए, सबको परमात्मा का जीव समझकर प्यार किया, किसी को कष्ट नहीं पहुँचाया, सबकी मदद की, लोग उन्हें देवता कहने लगे। जिन्होंने संसार में आकर परमात्मा के जीवों पर अत्याचार किए, उन्हें दैत्य कहकर बयान किया गया है।

कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होई॥

आप अपने प्यारों से कहते हैं कि घड़ा पानी के बिना नहीं बन सकता, उसकी उत्पत्ति पानी से हुई है। पानी घड़े में रहता है, नहीं तो पानी बिखर जाएगा।

आपका मन दुनिया में हिरण की तरह भटक रहा है उसे गुरु का 'नाम' ही थाम सकता है। मालिक के प्यारों की उत्पत्ति

परमात्मा में से हुई है, उनके अंदर भी परमात्मा है। सेवक को भी परमात्मा ने ही पैदा किया है।

महात्मा ने परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर लिया होता है और उस ताकत को संसार में काम करते हुए देख लिया होता है, लेकिन सेवक अभी उस कोशिश में है। जिस दिन सेवक उस ताकत को अपने अंदर प्रगट कर लेता है फिर गुरु और सेवक दोनों में कोई भिन्न-भेद नहीं रहता।

गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ॥
पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ॥

गुरु नानकदेव जी से आपके सेवकों ने विनती की, ''हमें यह बताओ कि पढ़ा-लिखा परमात्मा से मिल सकता है या अनपढ़ परमात्मा से मिल सकता है? अगर पढ़ा-लिखा गलती करे तो क्या उसकी गलती माफ हो सकती है या अनपढ़ की गलती माफ हो सकती है?''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अगर पढ़ा-लिखा गलती करता है तो उसकी जगह अनपढ़ साधु को सजा नहीं दी जा सकती। हम जानते हैं कि इस दुनिया में भी अगर कानून का जानकार गलती करता है तो उसे सजा मिलती है। यहाँ पढ़े-लिखे और अनपढ़ का सवाल नहीं। हमें अच्छे कर्मों का इनाम और बुरे कर्मों की सजा मिलती है।''

जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ॥

जो जैसे कर्म करता है, उसका वैसा ही नाम पड़ जाता है। नाम जपने वाले को सतसंगी, भक्त या सन्त कह देते हैं। बुरे कर्म करने वाले के कई तरह के नाम रख देते हैं।

ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥

हमें ऐसे कर्म नहीं करने चाहिए जिनकी वजह से हमें परमात्मा के दरबार में जाकर शर्मिन्दा होना पड़े और हमारी हार हो।

पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥

परमात्मा के दरबार में पढ़े-लिखे और अनपढ़ का विचार नहीं होता। जिसने जैसा कर्म किया होता है उसे वैसी ही सजा और इनाम मिलता है।

मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥ मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥

आप कहते हैं कि वह परमात्मा सांस-सांस का हिसाब लेता है। उसकी किसी के साथ दुश्मनी नहीं, किसी के साथ प्यार नहीं। वह हमारे कर्म, करतूत देखता है। अगर हम बुरे-खोटे कर्म करके जाते हैं तो यमदूत हमें पीटते हैं। फिर हम पछताते हैं।

हमें भी चाहिए कि हम गुरु नानक जी के कहे मुताबिक 'शब्द-नाम' की कमाई करें। सदा ही परमात्मा की भक्ति में लगे रहें और अपने जीवन को सफल बनाएँ।

❁❁❁

तेरह

अपनी इज्जत

नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥

गुरु नानकदेव जी से उनके सेवकों ने पूछा कि यह शरीर, जिसे रथ कहकर बयान किया गया है; क्या यह सदा एक जैसा रहता है या बदलता है और इसे चलाने वाला कौन है? गुरु नानकदेव जी प्यार से बताते हैं, ''मेरा शरीर रथ है। इसे चलाने वाला मन है। यह हर जन्म में बदल जाता है। लेकिन इस बात को अंदर पहुँचे हुए ज्ञानी ही जान सकते हैं।''

हर जन्म में शरीर बदलता है लेकिन इस शरीर को चलाने वाली आत्मा नहीं बदलती। आत्मा को न आग जला सकती है न पानी डुबो सकता है।

जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥
सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥

आप कहते हैं कि सतयुग में इस *रथ* - शरीर में रहने वाले लोग सन्तोषी थे। ज्यादा जरूरतों के पीछे नहीं भागते थे। जो मिल जाता, उसी में सन्तोष कर लेते थे। समाधियाँ लगाते और परमात्मा की भक्ति करते थे। सतयुग में लोग सदा धर्म में कायम रहते थे। श्रेष्ठ धर्म वही है, जिसमें हम नाम जपें और परमात्मा से मिलें। इस युग में लोग धर्म के सहारे थे। उनके ख्याल दुनिया में ज्यादा फैले हुए नहीं थे।

सतयुग में आयु एक लाख वर्ष और मन की ताकत हाथी जैसी मजबूत लिखी है।

त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥

आप कहते हैं, ''त्रेता युग में लोग जति, सति और जोरावर थे। ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करते थे। त्रेता युग में आयु सतयुग का दसवाँ हिस्सा - दस हजार वर्ष रह गई।''

दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥

द्वापर युग में लोग जप-तप करते थे। मुँह से जो वचन निकालते, उसे पूरा करते थे; सत्यवादी थे। इस युग में आयु त्रेता युग का दसवाँ हिस्सा - एक हजार वर्ष रह गई।

सतयुग में मन की ताकत को हाथी जितना, त्रेता युग में घोड़े जितना और द्वापर युग में बकरी जितना लिखा है।

कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥

आप कहते हैं, ''कलियुग का *रथ* - शरीर क्रोधमय है। क्रोध का दूसरा नाम आग है। इसे चलाने वाला झूठ है और झूठ का ही पसारा हो रहा है।''

साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज प्यार से कहते हैं कि सतयुग में सामवेद हुआ है। उस युग का अवतार सफेद कपड़ों वाला हंस हुआ है। उस युग के लोग सत्यवादी थे। सच बयान करते थे। आखिर सच में ही जाकर समा जाते थे।

सभु को सचि समावै ॥ सभु को सचि समावै ॥

ऐसा नहीं कि एक दो लोग ही सच - परमात्मा का प्रचार करते थे। सारी प्रजा अच्छी थी, सच बोलती थी। सच से आती थी और आखिर *सच* - परमात्मा में जाकर ही समा जाती थी।

रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥

त्रेता युग का ऋग्वेद बयान करता है कि परमात्मा का नाम सब देवताओं का शिरोमणि है। वह भरपूर है। हर जीव उसके सहारे चल रहा है। कबीर साहब भी कहते हैं:

जबहि नाम हृदय धरयो, भयो पाप का नाश।
मानो चिड़ंगी आग की, पड़ी पुरानी घास॥

नाइ लइऐ पराछत जाहि॥ नानक तउ मोखंतरु पाहि॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि ऋग्वेद के अंदर नाम की महिमा है। जो नाम प्राप्त कर लेता है, 'नाम' को प्रगट कर लेता है; वह पापों से छुटकारा पा लेता है। नाम ही मुक्ति प्राप्त करने की दवाई है।

जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ॥

चंद्रावली गोपी को अपने प्यार से छलने वाला कृष्ण था। कृष्ण यादवों के कुल में पैदा हुए। बचपन में उन्हें कान्ह कहते थे बड़ा होने पर उन्हें कृष्ण भगवान कहने लगे।

पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ॥

आप कहते हैं कि कृष्ण ने गोपियों को अपने प्रेम के बस में करके उनके साथ बृन्दावन में खुशी मनाई। पुराणों में, पारिजात वृक्ष की बहुत महिमा की गई है। यह वृक्ष स्वर्गों में है। इस वृक्ष के नीचे जाने वाले की सब इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं। लेकिन गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि सच्चा पारिजात वृक्ष - *नाम* है। शब्द-नाम की कमाई करके हम सब इच्छाओं से मुक्त हो जाते हैं।

कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ॥

आप कहते हैं कि कलियुग का वेद अथर्ववेद है। जिस वक्त गुरु नानकदेव जी ने इस बानी को लिखा, उस समय हिन्दुस्तान

में मुगलों की हुकूमत थी। मुगलों ने काफी समय हिन्दुस्तान पर हुकूमत की। मुगलों के डर की वजह से लोग परमात्मा को खुदा या अल्लाह कहने लग गए थे। ये लोग जिस धर्म में पैदा हुए थे, उसकी परवाह न करते हुए हुकूमत के लोगों को खुश करने के लिए उनकी ही बोली बोलने लग गए।

नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ॥

मुसलमान आमतौर पर नीले कपड़े पहनते हैं। खासकर जो मक्के से हज करके आते हैं वे तो जरूर ही नीले कपड़े पहनते हैं ताकि लोगों को पता लग जाए कि यह हाजी है। उस समय हिन्दुस्तान की जनता भी पठानों और तुर्कों के हुक्म पर अमल करके वैसे ही कपड़े पहनने लग गई कि कहीं हुकूमत करने वाले हमसे नाराज न हो जाएँ।

उस समय गुरु गोविंदसिंह जी ने हिन्दुस्तान वासियों में जागृति पैदा की कि जिस धर्म में परमात्मा ने आपको पैदा किया है उसे क्यों छोड़ें? आप कोई भी धर्म धारण कर लो, मौत अवश्य आएगी। सच्चा धर्म परमात्मा की भक्ति, परमात्मा का नाम है। बेशक गुरु गोविंदसिंह जी को ज्यादा से ज्यादा कष्ट सहन करने पड़े। बहुत कुर्बानी देनी पड़ी। उस समय उत्तरी भारत से एक ऐसा योद्धा सन्त सिपाही उठा, जिसने मुगलों की जड़ें हिला दी, जो दोबारा हिन्दुस्तान में नहीं लग पाई।

गुरु गोविंदसिंह जी ने किसी राज्य को प्राप्त करने के लिए जंग नहीं की थी। उस समय की हुकूमत ने हिन्दुस्तान की ऐसी दुर्दशा कर रखी थी कि किसी की भी इज्जत सुरक्षित नहीं थी।

चारे वेद होए सचिआर॥ पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''चारों वेद अपनी-अपनी जगह 'नाम' की महिमा करते हुए सच्चे हो गए हैं कि मुक्ति नाम में है। जो

लोग इन्हें पढ़कर विचारते हैं उनके विचार सुंदर हो जाते हैं।''

भाउ भगति करि नीचु सदाए॥ तउ नानक मोखंतरु पाए॥

आप कहते हैं, ''जो परमात्मा के साथ प्यार करके भक्ति करते हैं, अपने आपको छोटा समझते हैं, अपने गुणों का गुणगान नहीं करते, वे जब तक शरीर में रहते हैं; यह नहीं कहते कि 'हम हैं कुछ।' वे साधारण जिंदगी जीते हैं। सच्ची मुक्ति उन्हीं के पास होती है। वे जीते जी मुक्त हैं।'' तुलसी साहब कहते हैंः

तुलसी या संसार में, तीन वस्तु हैं सार।
मिट्ठा बोलण न्यों चल्लण, करन परोपकार॥

सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिए खसमु समालिआ॥

अब गुरु नानकदेव जी अपने सतगुरु की महिमा बयान करते हुए कहते हैं कि मैं अपने गुरु पर बलिहार जाता हूँ। फिर खुद ही कहते हैं, ''मैं गुरु के मिलने पर ही परमात्मा की भक्ति कर सका, उसके साथ जुड़ सका।''

सन्त-सतगुरु जब तक देह में रहते हैं, यह नहीं कहते कि हमें सन्त, सतगुरु या महाराज कहो। वे कहते हैं कि बाहर के किसी भी नाम से कोई फर्क नहीं पड़ता। आप हमें भाई कह लो, दोस्त कह लो! लेकिन सच्चाई को हमारे कहे मुताबिक खुद अपनी आँखों से देखो! फिर आपको यकीन हो जाएगा कि वह दिन-रात हमारे लिए क्या सोच रहा है, क्या कुछ कर रहा है और हमसे क्या करवाना चाहता है।

जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ॥

जिसने नाम-रूपी उपदेश देकर, ज्ञान का सुरमा देकर इन आँखों से ही संसार की असलियत दिखा दी और उस परमात्मा के सामने भी खड़ा कर दिया। जब हम ज्ञान-रूपी सुरमा आँखों

में डालते हैं तो हमारे अंदर से अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है। नूर और प्रकाश प्रगट हो जाता है।

खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ॥

आप कहते हैं कि जो खसम-परमात्मा को छोड़कर देवी-देवताओं की, पत्थर और पानी की उपासना में लगे हुए हैं; वे जिस 'नाम' का व्यापार करने आए थे, वह नहीं कर सके। जिस संसार-समुद्र के किनारे का पता ही नहीं, उसमें अपने आपको डुबो बैठे हैं।

सतिगुरु है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि सतगुरु नाम का जहाज है। 'करोड़ों में एक-आधा ही है जिसने उसे पहचाना। *जग में उत्तम कढिए विरले केइ के*। वह जिन पर कृपा करता है, उन्हें सहज-स्वभाव ही इस संसार-समुद्र से पार कर देता है।

करि किरपा पारि उतारिआ॥ करि किरपा पारि उतारिआ॥

मैं बताया करता हूँ कि जिन्होंने भजन-अभ्यास किया, सच्चाई को देखा, अपने जीवनकाल में ही पूर्ण हुए, उन्होंने गुरु को उज्ज्वल और खुद को मैला कहा। उन्हें उज्ज्वल करने वाला उनका गुरु ही था। उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि हमारे अंदर कोई ताकत थी। हमें हमारे गुरुदेव ने 'नाम' दिया। गुरु की दया से ही हम नाम की कमाई करके संसार समुद्र से पार हो सके।

सिंमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु॥

गुरु नानकदेव जी महाराज से उनके शिष्यों ने पूछा, क्या पाखंडी लोग तर जाते हैं? गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''नहीं प्यारेओ! सबका हिसाब-किताब होता है। आप बाहरी मिसाल देकर समझाते हैं कि जिस तरह सिंमल का पेड़ बहुत ऊँचा,

भारी और दिखने में अच्छा लगता है। पक्षी उस पेड़ पर यह आशा रखकर आते हैं कि यह बहुत बड़ा पेड़ है, हम इसके फल खाएंगे। लेकिन इसके फल बकबके होते हैं, पत्ते दिखने में तो सुंदर होते हैं लेकिन अच्छे नहीं होते; इसके फूल भी अच्छे नहीं होते। पक्षी निराश होकर उड़ जाते हैं कि हमने ऐसे ही समय बेकार किया। इसी तरह जब पाखंडियों से कुछ नहीं मिलता तो उनसे कुछ पाने की आशा रखने वाले निराश हो जाते हैं।''

ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु॥
फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत॥
मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि अगर सिंमल के बड़े-बड़े पेड़ों के नजदीक फलों का बाग लगा हो तो पक्षी वहाँ जाकर अपना पेट भर लेते हैं। गुणों की तरफ देखें तो सिंमल के पेड़ से वे छोटे पेड़ कई गुणा अच्छे हैं। इसलिए आप गुणों को ग्रहण करो।

आपके कहने का भाव कि आप शरीर की तरफ मत देखो। आमतौर पर पढ़े-लिखे लोग बहुत अच्छे तरीके से बातें पेश करते हैं लेकिन उनकी कमाई नहीं होती। कबीर साहब कहते हैं, ''एक मण कथनी से एक रत्ती करनी भारी है।''

उनके पास जीव दूर-दूर से चलकर आते हैं कि यह महात्मा बहुत मशहूर है, अच्छा पढ़ा-लिखा है। जब जीव वहाँ कुछ समय ठहरते हैं तो ऐसे लोगों की हरकतें देखकर उन्हें शर्म आती है। उनके कार्यक्रम फीके होते हैं, उनके मार्ग पर चलकर कुछ भी नहीं मिलता।

दूसरी तरफ कमाई वाला महात्मा, जिसने कमाई की हो, अंदर जाता हो, अगर हमें दर्शन ही दे दे तो वह हमें अंदर ले जाएगा। वह खुद तरा हुआ है हमें भी तार देगा।

कमाई वाले महात्मा पढ़े-लिखे की तारीफ नहीं करते और अनपढ़ को बुरा नहीं कहते। उनके कहने का भाव, मुक्ति कमाई करने से है। बातों से कुछ नहीं बनता। कबीर साहब कहते हैंः

वेद कतेब इफ्तरा भाई, दिल का फिकर न जाई।

आप कहते हैं कि पढ़-पढ़ाई से दिमाग में खुलापन आ जाएगा, अहंकार हो जाएगा लेकिन हम बेफिक्र नहीं हो सकते। हमेशा हमारे दिल में यह डर लगा रहेगा कि पता नहीं आगे दरबार में जाकर क्या होगा?

सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ॥
धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ॥

अब गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि प्रेम-भक्ति में झुकना ही बताया जाता है, अहंकार करना नहीं। अगर हम किसी को सलाम, दुआ या नमस्ते करते हैं तो हम अपनी ही इज्ज़त कर रहे हैं। अपने सामने ही झुक रहे हैं। परमात्मा सबमें है। इतनी नम्रता महात्मा में ही होती है। तराजू का भारी पलड़ा ही झुकता है। असली सन्त वही है जो सेवकों को भी नमस्कार करता है। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु निवै जो सिख को, साध कहावे सोए।

अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि॥
सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि॥

अब आप कहते हैं कि झुकने में बड़ा फर्क है। दिल के अंदर अपराध रखकर जगत दिखावे की ओर नहीं झुकना चाहिए। ऐसा झुकना भी बुरा है कि जिस तरह चीता झुककर शिकार मारता है। शिकारी भी झुककर हिरन का शिकार करता है। हम जैसे अंदर से हैं वैसे ही बाहर से होने चाहिए।

पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥

उन दिनों पंडित आमतौर पर ऐसे कर्म करते थे, पत्थर की शिलाओं को पूजते थे। सुबह-शाम संध्या करते थे। गुरु साहब कहते हैं कि आप चाहे रोजाना संध्या करो, पोथियाँ पढ़ो, पत्थरों को पूजो, चाहे उसे बगल में रखकर समाधि लगा लो। लेकिन पत्थर किसी को पार नहीं करता। खुद डूब जाता है और जो उसका साथ लेता है उसे भी डुबो देता है।

मुखि झूठ बिभूखणं सारं ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥

शिला को पूजने, पोथी पढ़ने और संध्या करने का क्या फायदा, अगर आपने झूठ बोलना और झगड़ा करना नहीं छोड़ा? आमतौर ऐसे लोग परमात्मा को जानने की बजाय दिन में तीन बार गायत्री मंत्र पढ़ने में ही मुक्ति समझते हैं। वह तीनों लोकों का मालिक परमात्मा सबके दिलों की जानता है।

ऐसे लोग झूठ बोलने में बहुत पक्के होते हैं। झूठ को सच करके दिखा देते हैं। एक बादशाह ने अपने वजीर से पूछा, ''मेरी हथेलियों पर बाल नहीं हैं?'' वजीर ने कहा, ''आप दान करते रहते हो इसलिए आपकी हथेलियों के बाल कम हो गए हैं।'' बादशाह ने वजीर से कहा, ''तुम्हारी हथेलियों पर भी बाल नहीं हैं?'' वजीर ने जवाब दिया, ''हम आपके दिए हुए दान को हाथ लगाते रहते हैं इसलिए हमारी हथेलियों के बाल भी कम हो गए हैं।'' फिर बादशाह ने कहा, ''ये जो और जनता बैठी है इनकी हथेलियों पर भी बाल नहीं हैं?'' वजीर ने कहा, ''इनको कुछ नहीं मिलता ये लोग ऐसे ही हाथ मलते रहते हैं इसलिए इनकी हथेलियों पर भी बाल नहीं।'' अब आप देख सकते हो! यह बिल्कुल ही झूठ है लेकिन वजीर ने इसे सच करके दिखा दिया।

गलि माला तिलकु लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥

गुरु नानकदेव जी की पंडितों से चर्चा हुई। आपने उनसे कहा, ''आप चाहे गले में एक नहीं, कितनी भी मालाएँ पहन लो, चाहे माथे पर तिलक लगाकर सिद्ध-पुरुष बन जाओ। चाहे दो धोतियाँ तैयार रखो कि फिर कब नहाना पड़ जाए! बाहर के पहनावे से कुछ नहीं होता।''

जे जाणसि ब्रहमं करमं॥ सभि फोकट निसचउ करमं॥

गुरु नानक जी कहते हैं, ''देखो प्यारेओ! जो ब्रह्म का वाकिफ हो जाता है, अंदर चला जाता है सच्चाई को देख लेता है। उसके लिए ये सब कर्म फोकट हैं; इनका कोई मूल्य नहीं।''

कहु नानक निहचउ धिआवै॥ विणु सतिगुर वाट न पावै॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''हम पक्के निश्चय से कहते हैं कि हम उन पड़ावों को, जो हमारे रास्ते में आते हैं, गुरु के बिना तय नहीं कर सकते और अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच सकते।''

कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा॥
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा॥

इस शरीर रूपी कपड़े पर जो रंग है ये सब यहीं छोड़ जाने हैं। हम दुनिया का जो सामान इकट्ठा कर रहे हैं, ये भी यहीं छोड़ जाना है। हम जो अच्छे या बुरे कर्म करते हैं आगे जाकर उन कर्मों का भुगतान हमें खुद ही करना है।

हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा॥

हम इस संसार में बड़े-बड़े ओहदों पर पहुँचकर मनमर्जी के हुक्म चलाते हैं। उस रास्ते को भूल जाते हैं जो बाल के दसवें हिस्से से भी बारीक है। हमारी पापों से लताड़ी हुई आत्मा को

उसी रास्ते से निकलना है। सिर पर पापों का बोझ है और धर्मराज के दूत पीछे से डंडे मारते हैं।

उस समय यह जीवात्मा अपने किए हुए बुरे कर्मों को याद कर करके रोती है। फिर चीख पुकार को कौन सुनता है।

नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा॥
करि अउगण पछोतावणा॥ करि अउगण पछोतावणा॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''देखो प्यारेओ! यहाँ का सामान यहीं रह जाएगा। यह शरीर भी साथ नहीं जाएगा। आत्मा को वहाँ नंगे ही पेश होना पड़ता है। धर्मराज हमारे कर्मों के मुताबिक हमें नर्कों में भेज देता है। उस समय जीव डरा हुआ होता है, क्योंकि इसे मार पड़ती है, सजा मिलती है।''

गुरु नानकदेव जी हमें प्यार से समझाते हैं कि हमें 'नाम' की कमाई करनी चाहिए। हमें अपने अवगुण और गुरु के गुण देखने चाहिए। हमने अपना किया हुआ खुद ही भुगतना है। हमें किसी को यह नहीं कहना चाहिए कि यह पापी है क्योंकि उसे दंड या इनाम देने वाला परमात्मा ही है। हम उसकी फिक्र क्यों करें?

❁❁❁

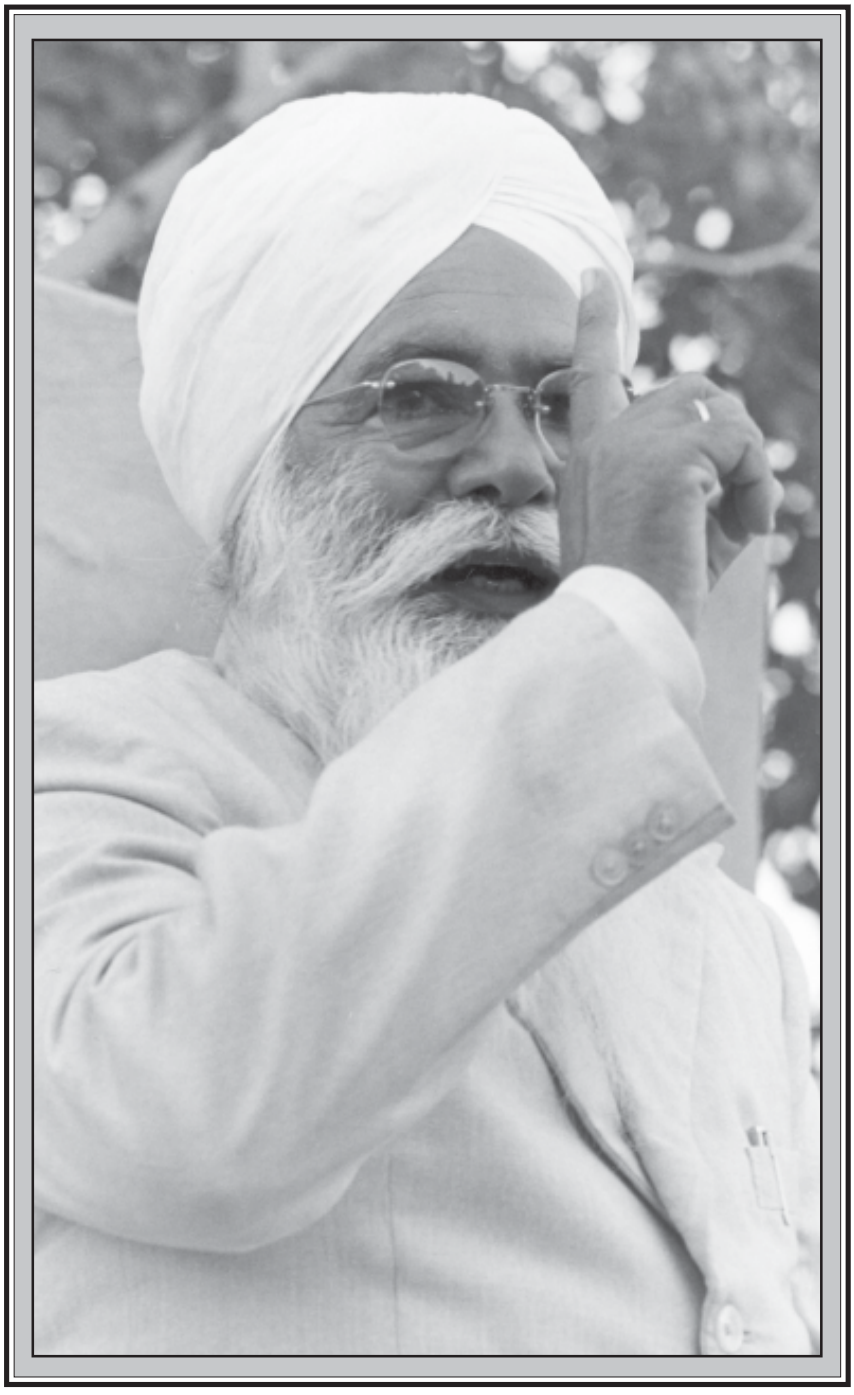

चौदह

जनेऊ

संसार में चलने के लिए हमारे पास दो ही रास्ते हैं। एक *मनमत* और दूसरा *गुरुमत*। मनमत में हम मन के कहने पर चलकर इन्द्रियों के भोगों में फँसकर परेशानियाँ खड़ी कर लेते हैं। मन के कहने पर ऐसे-ऐसे कर्म करते हैं, जिससे हमें बार-बार फिर इस संसार में जन्म लेना पड़ता है।

गुरुमत में हमने अपने आपको सुधारना है। सन्तों-महात्माओं के कहे मुताबिक नौ द्वारों को खाली करके आँखों के पीछे आकर 'शब्द-नाम' के साथ जुड़ना है। सन्त-महात्मा बताते हैं कि सन्तमत मीठा, अदभुत और प्यारा है, इसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता।

सन्त-महात्मा किसी समाज को बुरा नहीं कहते। किसी का किसी समाज में दाखिल होना मुबारक है। समाज हमारे लिए स्कूलों कालेजों का काम करते हैं। लेकिन समाजों में दाखिल होकर हम अपने असली मकसद को भूल जाते हैं। आमतौर पर हम रीति-रिवाजों से ही मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। हर समाज की हकीकत 'सुरत-शब्द' का अभ्यास ही है। लेकिन इन समाजों में आमिल लोग कमाई वाले नहीं होते, इसलिए हम रीति-रिवाजों को ही परमात्मा की भक्ति और परमात्मा का मिलाप समझते हैं।

ईसाई लोग बिपतिसमा लेना और चर्च में जाकर प्रार्थना करने को ही मुक्ति समझते हैं, लेकिन ये ईसा के उपदेश को भूल गए हैं। ईसा का उपदेश 'शब्द-नाम' की कमाई करना और हर एक के साथ प्यार करना है।

इसी तरह सिक्ख समाज में कड़ा, कच्छ, कृपाण, केश, कंघा धारण करने को ही गुरुमत समझा जाता है। इन पाँच चिह्नों को धारण किए बिना सिक्ख नहीं कहलवा सकते।

दसों गुरुओं का उपदेश है कि सुरत को शब्द के साथ जोड़ो, नाम की कमाई करो, अंदर जाओ और सच्चाई को खुद देखो! आजकल कोई इन उपदेशों को नहीं मान रहा। बाहरी रीति-रिवाज को ही गुरुमत समझते हैं।

इसी तरह मुसलमान भाई साल में एक महीना व्रत रखना, नमाज पढ़ना, मक्के का हज करना, दान-पुण्य करना और सुन्नत करने को ही गुरुमत समझते हैं। ऐसे रीति-रिवाज करने वाले अपने आपको मुसलमान कहलवाते हैं।

इसी तरह योगी लोग धोती, नेती और छह चक्रों को खाली करने को ही गुरुमत समझते हैं। अपना समय इसी में लगाते हैं।

इसी तरह हिन्दू समाज में **जनेऊ** पहनना, गीता पढ़ना, गायत्री मंत्र का जाप करना, तीर्थयात्रा करना, दान-पुण्य करना, यज्ञ करना व करवाना, विद्या पढ़ना व पढ़ाना और खट्कर्म करने को ही गुरुमत समझते हैं।

हम सब किसी न किसी समाज में पैदा हुए हैं। सन्त-महात्मा भी किसी न किसी समाज में आकर ही उपदेश देते हैं। हम जानते हैं कि समाजों वाले बाहर के रीति-रिवाजों में लगे हुए हैं। कोई भी 'शब्द-नाम' की कमाई करके नाम-रूपी गिरी को प्राप्त नहीं करना चाहता।

सन्त-महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि देखो प्यारेओ! 'शब्द-नाम' की कमाई करने के लिए किसी समाज को बदलने की, घर-बार छोड़ने की जरूरत नहीं। महात्मा कहते हैं, ''अगर गुरुमत धारण करना चाहते हो तो आप हमारे कहे मुताबिक करो और सच्चाई को देखो।''

ये पाँचों डाकू काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हमारे शरीर को लगे हुए हैं; ये आनन्द लेने के हथियार हैं लेकिन इनके पल्ले कुछ नहीं होता। आनन्द तो हमारी सुरत की धारा ही प्राप्त करती है। महात्मा हमें बताते हैं कि तीसरे तिल पर ध्यान रखकर सिमरन करो। अपने ख्यालों को नौ द्वारों में से निकालकर आँखों के पीछे आकर जहाँ सच्चखंड से शब्द आ रहा है, उसके साथ जुड़ो। अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म, कारण के तीनों परदे उतारकर दसवें द्वार में पहुँचो। गुरुमत वहाँ से शुरु होती है।

महात्मा हमें बतातें हैं कि हम जब तक मनबुद्धि के दायरे में हैं, स्थूल पर्दा नहीं उतारते, तब तक स्थूल भोगों काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से नहीं बच सकते। अगर कोई आरजी जीत प्राप्त कर लेता है तो मौका मिलते ही मन उसे फिर गिरा देता है।

हमें बहुत से त्यागी भी मिल जाते हैं, लेकिन उनमें अभिमान होता है कि हम त्यागी हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मोटी माया सब तजे, झीनी तजे न कोए।
मान मुनि मन वरगले, मान सभे को खाए॥

जब हम स्थूल दुनिया में हैं, तब स्थूल माया के भोग हमें दबाए रखते हैं, पागल किए रखते हैं। जब हम सूक्ष्म में जाते हैं वहाँ सूक्ष्म भोग और सूक्ष्म माया है, वे हमें वहीं भटका देते हैं।

सन्त-महात्मा हमें समझाते हैं कि ऋषि-मुनि अच्छे थे। उन्होंने बहुत मेहनत की। सन्तों के दिल में उनके लिए कद्र है। लेकिन पूरा रास्ता न मिलने के कारण वे माया के घेरे में आ गए और माया ने उन्हें बाहर भटका दिया। पुराणों में कहानियाँ आती हैं कि माया ने ऋषियों को किस तरह गिराया।

हिन्दुओं में आम रिवाज हैं कि जिस दिन **जनेऊ** पहनाते हैं, उस दिन समाज वालों को बकरे भी काटकर खिलाते हैं। गुरु नानक साहब क्षत्रियों के घराने बेदी परिवार में पैदा हुए। आपके

पिता ने बहुत संघर्ष करके आपको मनाया कि बेटा! समाज के रीति-रिवाज जरूरी हैं। उनके पुरोहित पंडित हरदयाल ने कहा कि आपको **जनेऊ** पहनाना है। गुरु नानक जी ने कहा, ''पंडित जी! पहले आप मेरे विचार सुन लें! अगर आपके पास वैसा **जनेऊ** है तो मैं पहनने के लिए तैयार हूँ।''

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु॥

आमतौर पर **जनेऊ** सूत का होता है और सूत कपास से पैदा होता है। गुरु नानक जी ने पंडित से कहा, ''तेरा यह जनेऊ किसी काम का नहीं, क्योंकि यह टूट जाएगा, पुराना हो जाएगा या जल जाएगा। यह **जनेऊ** जीव के साथ आगे दरगाह में नहीं जाएगा।''

इन्सान का दयावान होना, कपास है। उसमें संतोष का होना, सूत है। जितेन्द्रिय होना, जप है। पवित्र होना, सत है। अगर तेरे पास ऐसे बट वाला **जनेऊ** है तो मैं उसे पहनने के लिए तैयार हूँ। तुलसी साहब कहते हैं:

दया धर्म का मूल है, नरक मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लग घट में प्रान॥

एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु॥
ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ॥

गुरु नानक जी कहते हैं, ''मैं जिस **जनेऊ** के बारे में बता रहा हूँ वह **जनेऊ** टूटता नहीं। उसे आग नहीं लगती और वह गलता नहीं। वह **जनेऊ** जीव के साथ सच्चे दरबार तक जाता है।''

धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ॥

आप पंडित को प्यार से कहते हैं कि वे इन्सान धन्य हैं, पूजने के काबिल हैं जो ऐसा जनेऊ पहनकर मालिक के दरबार में जाते हैं।

अगर सतसंगी अपने अंदर ऐसे गुण धारण कर ले कि वह दयावान हो, सन्तोषी हो, जितेन्द्रिय हो, जो अपने जीवन में ऐसा **जनेऊ** धारण कर लेता है वह पूजा के काबिल है।

उस समय गुरु नानक जी छोटी उम्र के थे, फिर भी आपने विद्वान पंडित को इतनी गूढ़ बातें समझाई क्योंकि पंडित सूत के धागे पहनाने में ही मुक्ति समझता था।

चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ॥
सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ॥

उन दिनों **जनेऊ** चार कौड़ियों का आता था। पंडित चौके पर बैठकर **जनेऊ** पहनाता था और कान में यह मंत्र सिखाता था कि देख! जब टट्टी-पेशाब जाना हो तो इसे कान में टांग लेना। यह तभी उतारना है जब दूसरा पहन ले। अब तेरा गुरु ब्राह्मण हो गया, तुझे और गुरु धारण करने की जरूरत नहीं। यह **जनेऊ** ही तुझे मुक्ति देगा।

अभी भी भारत में कई ऐसे घराने हैं, जो ब्राह्मणों को ही गुरु मानते हैं। महाराज सावन सिंह जी अपने बचपन की बात बताया करते थे कि उनके घर में भी एक ऐसा ही गुरु आया करता था। वह छह महीने बाद आता और चढ़ावा लेकर चला जाता। जब महाराज सावन सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह जी से 'नाम' लिया, तब वह गुरु फिर आया। आप पहले तो उसे एक रुपये का मत्था टेका करते थे। उस दिन आपने उसे दस रुपये देकर कहा, ''अब तू हमसे छूटा और हम तुझसे छूटे। मुझे पूरा गुरु मिल गया है। अब तुझे आने की जरूरत नहीं।''

ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ॥

गुरु नानक साहब कहने लगे, ''देखो पंडित जी! चाहे बन्दा जिंदगी भर **जनेऊ** न उतारे, लेकिन जब वह मरता है, शरीर

जल जाता है तो साथ में धागा भी जल जाता है।'' जहाँ जाकर हिसाब-किताब होना है वहाँ तो यह बे-धागा ही गया।

लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''देखो पंडित जी! जीव **जनेऊ** पहनकर रात-दिन लाखों ठग्गियाँ करता है, लाखों चोरियाँ करता है, लाखों निन्दा करता है, हरामखोरियाँ करता है और भोग भोगता है। आप किसी को इन बुराइयों से बचने के लिए मना नहीं करते, क्योंकि बुराई का मुँह नीचे की तरफ है।''

लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि॥
तगु कपाहहु कतीऐ बाह्मणु वटे आइ॥
कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ॥

अब आप प्यार से कहते हैं कि लड़कियाँ कपास को कातकर सूत बनाती हैं। पंडित उस सूत को बट दे देता है। उस समय बकरों को कत्ल करके उसकी बोटी-बोटी कर देते हैं, मसाले लगाकर भूनते हैं। स्वादू रिश्तेदार खाकर खुशियाँ मनाते हैं और कहते हैं कि अब इसे जनेऊ पहनाओ।

गुरु नानकदेव जी पंडित को इस रस्म के बारे में समझाते हैं कि देख प्यारेआ! हम तो दुनिया को यह सिखाने के लिए आए हैं कि पशु-पक्षियों से भी उतना प्यार करो, जितना एक इन्सान के साथ करते हो। जितना इन्सान को इस धरती पर जीने का हक है उतना ही पशु-पक्षियों को भी है।

एक बार गुरु अंगददेव जी गोइन्दवाल जा रहे थे। रास्ते में उन्हें शिहा उप्पल मिला जो बकरे लेकर जा रहा था। गुरु अंगददेव जी ने उससे पूछा, ''शिहा उप्पल! तू इतने बकरे लेकर कहाँ जा रहा है?'' उसने कहा, ''मेरे लड़के का मुन्डन है। समाज के लोग इकट्ठे होंगे उनके लिए खाना बनेगा।'' गुरु अंगददेव ने

कहा, ''बहुत अफसोस की बात है! तू इतने बकरे मारेगा! क्या इनकी आत्माएँ तुझे आशीष देंगी?'' जब शिहा उप्पल ने गुरु अंगददेव की बात को समझा तो उसका दिल पिघल गया, उसे सच्चाई का पता लगा। उसने बकरों को वही छोड़ दिया और 'नाम' ले लिया। वह गुरु अंगददेव का अच्छी कमाई वाला शिष्य बना।

भाई गुरुदास जी कहते हैं कि एक दिन जंगल में शेर बहुत से जानवरों को खा रहा था। जब बकरी की बारी आई तो वह कह-कहाकर हँसी। शेर को बहुत आश्चर्य हुआ उसने कहा, ''तू हँस क्यों रही है? मैं अभी तुझे खाने लगा हूँ।'' बकरी ने कहा, ''मैं इसलिए हँस रही हूँ, अगर कोई सुनता हो तो वह हमारे बच्चों को खस्सी कर दे ताकि वे औलाद पैदा न कर सकें। अफसोस इस बात का है कि हम घास-फूस खाने वालों की यह हालत होती है तो माँस खाने वालों की क्या हालत होगी?'' कबीर साहब भी कहते हैं:

बकरी पाती खात है, ताँकी काड्डी खाल।
जो बकरी को खात है, तिनका कौन हवाल॥

माँस माँस सब एक है, मुर्गी हिरनी गाय।
आँख देख नर खात है, ते बाध्धे जमपुर जाय॥

सूफी सन्त बुल्लेशाह के साथ भी ऐसी ही घटना घटी थी। मुसलमान लोग जब बच्चे की सुन्नत करते हैं; इसी तरह बकरों को कत्ल करते हैं। जब बुल्लेशाह की यह रस्म करने लगे तो आपने बकरों को देखकर कहा:

इकना दे मन खुशी ते गोश्त खाँगें।
इकना दे मन गमी जहानों जाँगें॥

बुल्लेशाह कहते हैं, ''आप खुशी मनाते हो कि आपको खाने के लिए गोश्त मिल गया। ये बेचारे गम में आँखों से आँसू निकाल रहे हैं कि अब हम जहान से जाने लगे हैं।''

होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु॥
नानक तगु न तुटई जे तगि जोवै जोरु॥

आप कहते हैं कि जब यह धागा पुराना हो जाता है तो इसे फेंककर नया धागा पहन लेते हैं। अगर इस धागे में जोर होता तो यह टूटता ही नहीं।

नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु॥
दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत॥

आप कहने लगे ''पंडित जी! यह सच्चा धागा है। यही दरगाह में आपके साथ जाएगा। यह टूटता नहीं, मैला नहीं होता, आग से नहीं जलता।'' आप खुद 'नाम' की कमाई करो और अपने संगी-साथियों को भी इसके फायदे बताओ कि नाम की कमाई करने से हमें दरगाह में जगह मिलती है।

तगु न इंद्री तगु न नारी॥ भलके थुक पवै नित दाड़ी॥
तगु न पैरी तगु न हथी॥ तगु न जिहवा तगु न अखी॥

अब आप कहते हैं कि यह धागा न आँखों को पराया रूप देखने से रोक सका। न कानों को पराई निन्दा सुनने से रोक सका। न जुबान को लोगों की निन्दा करने से रोक सका। न पैरों को बुरी तरफ जाने से रोक सका। न हाथों को बुरी कमाई करने से रोक सका। न काम इन्द्री को भोग भोगने से रोक सका।

वेतगा आपे वतै॥ वटि धागे अवरा घतै॥

आप कहते हैं, ''पंडित जी! आप खुद तो बे-धागा हो। लोगों के गले में धागे बटकर **जनेऊ** पहनाते हो। खुद भ्रम में हो और आत्माओं को भी भ्रम में डाल रहे हो।''

लै भाड़ि करे वीआहु॥ कढि कागलु दसे राहु॥

आप कहते हैं, ''तू भाड़े के बिना किसी की रस्म अदा नहीं करता। लोगों की बहन-बेटी की शादी करने का भाड़ा लेता है। पत्री खोलकर राहु-केतु बताता है कि इस तिथि पर विवाह करना ठीक रहेगा।''

हमारे हिन्दुस्तान में लड़की की बहुत इज्जत करते हैं। अमीर आदमी भी गरीब की लड़की को अपनी ही लड़की समझते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं,''वह तेरी भी बच्ची है लेकिन तू उसे भी माफ नहीं करता। भाड़ा लेकर ही रस्म अदा करता है।''

सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु॥ मनि अंधा नाउ सुजाणु॥

गुरु नानक जी ने पंडित के नज़दीक बैठे हुए लोगों से कहा, ''प्यारेओ! आपका यह पंडित मन से अंधा है, अज्ञानी है। यह नहीं जानता कि परमात्मा ने अंदर क्या रखा हुआ है। आश्चर्य की बात है कि आप इसे सुजाखा कहते हो।'' आप कहते हैं:

ओह मूर्ख आखिए जिस लभ लोभ अंहकार।

साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी॥

गुरु नानकदेव जी महाराज उस परमात्मा की उपमा करते हुए कहते हैं कि वह परमात्मा जिस पर दयालु हो जाता है, जिसे अपने साथ मिलाना चाहता है उसे 'शब्द-नाम' की कमाई में लगा देता है। ऐसी आत्माओं का झुकाव शुरु से ही पूरे गुरु की खोज और परमात्मा की भक्ति की तरफ होता है।

सो सेवकु सेवा करे जिसनो हुकमु मनाइसी॥

वही सेवक कहलवा सकता है जो शब्द-नाम की कमाई करता है। उसे परमात्मा अपने हुक्म की पहचान देता है। ऐसा सेवक अपने आपको परमात्मा, शब्द-गुरु के हवाले कर देता है।

हुकमु मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी॥

आप कहते हैं कि उस हुक्म को मानने वाले को, नाम की कमाई करने वाले को परमात्मा गले लगाता है, अपने घर *सच्चखंड* में जगह देता है।

हम परमात्मा से, शब्द-गुरु से दुनिया की चीजें तब तक ही माँगते हैं जब तक हम शब्द-नाम की कमाई करके अंदर नहीं जाते। लेकिन हमारी आत्मा की माँग तो परमात्मा से मिलने की होती है। अंदर जाकर ही पता चलता है कि हमारी चाह परमात्मा के साथ मिलाप करना और सच्चखंड पहुँचना ही था।

खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी॥
ता दरगह पैधा जाइसी॥ ता दरगह पैधा जाइसी॥

आप कहते हैं, ''मालिक को जो सेवक पसंद आ जाता है वही सेवक परवान है। सेवक की इच्छा के मुताबिक उसे सच्चखंड पहुँचने का फल मिल जाता है। काल की कोई भी ताकत उसके रास्ते में रुकावट नहीं डालती।''

गुरु नानकदेव जी महाराज ने हमें प्यार से बताया कि कौन सा **जनेऊ** जीव के साथ जाता है। हमें अपने जीवन में कौन से गुण धारण करने चाहिए। हमारा भी फर्ज बनता है कि बाहर के रीति-रिवाजों से ख्याल हटाकर अंदर 'शब्द-नाम' की कमाई करें। सब समाजों की इज्ज़त करें। किसी की निन्दा न करें।

❁❁❁

पन्द्रह

भ्रम

जब परमात्मा आत्माओं पर दया-मेहर करता है तब संसार में अपने प्यारे बच्चे सन्तों को भेजता है। जो आत्माएँ परमात्मा की तरफ से सो जाती हैं, अपने घर की याद को भूल जाती हैं, सन्त उस याद को ताजा करने के लिए आते हैं।

एक महात्मा हमारे अंदर से दो-चार **भ्रम** निकाल देता है। लेकिन हम अजीब ही किस्म के मालिक हैं कि उस महात्मा के जाने के बाद बीस-पच्चीस **भ्रम** और डालकर बैठ जाते हैं। उस परमात्मा को शरीर के अंदर ढूँढने की बजाय बाहर पत्थरों और पानी में ढूँढने लग जाते हैं।

महात्माओं को सदा ही रीति-रिवाज करने वालों का विरोध सहना पड़ता है। अगर वे भी लोगों की तरह रीति-रिवाजों में लग जाएँ तो हमें कोई भी परमात्मा की जानकारी नहीं दे सकता। महात्मा सच्चाई बताने के लिए आते हैं।

सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैं, ''अगर मैं सच कहता हूँ तो भाँबड़ मचता है। अगर झूठ कहता हूँ तो कुछ भी नहीं बचता।'' वे दुनिया को सच बताते हैं। 'सच आखिर कड़वा होता है।'

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर मैं सच कहता हूँ तो कोई मानने के लिए तैयार नहीं। झूठ मैं कह नहीं सकता। झूठ बोलने से दिमाग की हड्डियाँ सड़ती हैं।''

मैं बताया करता हूँ कि सच्चे और झूठे का मेल नहीं हो सकता जिस तरह पानी और तेल का मेल नहीं होता। सच्चा तार देता है, झूठा डुबो देता है। हम सब उस परमात्मा के बच्चे हैं।

एक आत्मा इस संसार से पार होकर चली जाती है और दूसरी आत्मा अपना मूल भी खोकर चली जाती है।

जिस समय गुरु नानकदेव जी और कबीर साहब आए उन्हें ब्राह्मण और मुसलमान, दो ही फिरकों का सामना करना पड़ा। महाराज कृपाल कहा करते थे कि आज पाँच-छह सौ फिरके हैं। आज के सन्तों के लिए मालिक का सन्देश देना आसान नहीं।

गुरु नानकदेव जी के समय में हिन्दुस्तान में ब्राह्मण मत का ज्यादा जोर था। आप पंजाब में सुल्तानपुर लोदी में रह रहे थे, बेई नदी इसके नजदीक से बहती थी। आप सुबह तीन बजे उठकर उस नदी में स्नान करके परमात्मा की भक्ति में जुड़ जाते थे।

एक दिन ऐसा कौतुक हुआ कि आप मालिक की याद में बैठे। काफी समय बीत गया लेकिन आप समाधि में ही रहे। जब आप समाधि से उठे तो आपने देखा कि एक गरीब ब्राह्मण गाय लेकर जा रहा था। वहाँ बेड़ियों का पुल था। लाहौर जाने के लिए लोग उसी पुल से गुजरते थे। वहाँ एक क्षत्रिय सिपाही चुंगी वसूल करने के लिए खड़ा था। उसने ब्राह्मण से कहा, ''पुल पार करने के लिए तुझे चुंगी देनी पड़ेगी।'' ब्राह्मण ने कहा, ''मैं बहुत गरीब हूँ मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है।'' सिपाही ने कहा, ''मैं चुंगी लिए बगैर तुझे इस पुल से गुजरने नहीं दूँगा।''

वह गरीब ब्राह्मण वहीं नदी के किनारे बैठ गया। काफी समय बीत जाने पर गाय ने गोबर किया तो क्षत्रिय सिपाही ने उसी गोबर से अपने बैठने की जगह को लीप लिया और अपना खाना बना लिया। आमतौर पर क्षत्रिय लोग गाय के गोबर से जगह लीपने को पवित्र मानते हैं। ब्राह्मण ने सिपाही की मिन्नतें की, लेकिन सिपाही ने कहा, ''मैं चुंगी लिए बगैर तुझे पुल से नहीं जाने दूँगा।'' तब गुरु नानकदेव जी ने यह शब्द उचाराः

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई॥

धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई॥

गुरु नानकदेव जी उस क्षत्रिय से कहते हैं, ''प्यारेआ! तू गाय और ब्राह्मण से भी चुंगी माँगता है। उसी गाय के गोबर से चौका पवित्र करता है। क्या ऐसा करने से तू तर जाएगा?''

आप उस क्षत्रिय से कहते हैं कि देख प्यारेआ! तूने सिद्ध पुरुष की तरह माथे पर टीका लगाया हुआ है। गले में मालाएँ पहनी हुई हैं और धोती पहनकर अपना अच्छा रूप बनाया हुआ है। उस समय मुसलमान लोग हिन्दुस्तान पर सख्ती कर रहे थे और हिन्दुओं को ज्यादा से ज्यादा कष्ट दे रहे थे। गुरु नानक जी ने मुसलमानों को मैली बुद्धि वाला कहकर बयान किया है।

आप कहते हैं, ''अफसोस की बात है कि तू मैली बुद्धि वालों का धान खाता है। अगर बुद्धि अच्छी हो तो सबके अंदर आत्मा समझकर सबसे प्यार करे और सबको एक समान समझे।''

अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई॥

उस समय मुसलमान बादशाह हिन्दुओं को हिन्दुओं के खिलाफ ही इस्तेमाल करते थे। क्षत्रिय अपने घरों में हिन्दू रीति-रिवाज के मुताबिक पूजा करते थे लेकिन बाहर अपनी नौकरी बचाने के लिए और मुसलमान हाकिमों को खुश रखने के लिए उनके कहे मुताबिक कार्यक्रम करते थे। मुसलमानों की किताबें और ग्रन्थ पढ़ते थे।

छोडीले पाखंडा॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा॥

गुरु नानक साहब उसे प्यार से समझाते हैं, ''प्यारेआ! परमात्मा को ये पाखंड मंजूर नहीं। तू ये पाखंड छोड़कर 'नाम' ले। 'नाम' की कमाई कर, 'नाम' ही तुझे तारेगा।''

माणस खाणे करहि निवाज॥ छुरी वगाइनि तिन गलि ताग॥

उस समय मुसलमानों ने हुकूमत के नशे में हिन्दू जनता को ज्यादा से ज्यादा कष्ट पहुँचाए। ये सब कुछ करने के बाद वे नमाज पढ़ते थे। यह सब धर्म की आड़ में किया गया। जो हिन्दू ऊँचे पदों पर थे, वे न्याय करते और अपने जनेऊ पहने हुए भाइयों को ही सजा दे देते थे।

तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद॥ उन्हा भि आवहि ओई साद॥

बन्दा जैसा अन्न खाता है उस पर वैसा ही असर होता है। मैली बुद्धि वालों का धान खाने से ब्राह्मणों की बुद्धि भी वैसी ही हो गई थी। ये ब्राह्मण जिसके घर जाकर पूजा-पाठ करते थे, उन घरवालों के ऊपर भी वैसा ही असर होता था।

कूड़ी रासि कूड़ा वापारु॥ कूड़ु बोलि करहि आहारु॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि बाहर के रीति-रिवाजों के बारे में बताने वाला सारा साहित्य कूड़ा है। हम जो व्यापार करते हैं कि हमें स्वर्ग मिलेंगे या परमात्मा मिलेगा, हमारे ये ख्याल भी गलत हैं।

जो ये कहते हैं कि हमने मूर्ति को भोग लगवा दिया, यह प्रसाद बन गया है। आप कहते हैं, ''ऐसे लोग झूठ बोलकर आहार करते हैं, अपना पेट पालते हैं। इन्हें अंदर अंधेरे के सिवाय कुछ नहीं दिखता।''

सरम धरम का डेरा दूरि॥ नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि जहाँ से आत्मा को ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है, ये लोग वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकते। सब जगह कूड़ का पसारा है और लोगों को कूड़ ही पसंद आ रहा है।

मथै टिका तेड़ि धोती कखाई॥ हथि छुरी जगत कासाई॥

आप कहते हैं कि माथे पर तिलक है, सिद्ध पुरुष ब्राह्मण

है और हाथ में छुरी रूपी कलम पकड़ी हुई है। ये लोग जगत के कसाई हैं। रिश्वत लेकर सच्चा न्याय नहीं करते। जिसने पैसे दे दिए उसके हक में न्याय करते हैं।

बाबा बिशनदास जी उस समय की एक कहानी सुनाया करते थे कि एक गुर्जर और एक गरीब जुलाहा था। गुर्जर ने जुलाहे के घर पर नाज़ायज कब्जा कर लिया। जुलाहा अदालत में गया। उस समय न्याय मौलवियों के हाथ में था, जो अपने आपको धर्माचार्य कहलवाते थे। जुलाहे ने उनसे कहा, ''मैं सच कहता हूँ कि जगह मेरी है। मैं एक गरीब आदमी हूँ, आप मेरे हक में न्याय करना। मैं अपनी पगड़ी आपको देता हूँ।''

गुर्जर अमीर आदमी था, उसने मौलवी को रिश्वत में बैल दे दिया। मौलवी न्याय करते हुए गुर्जर के हक में बोलने लगा। गरीब जुलाहा अपने सिर पर हाथ रखकर मौलवी को पगड़ी की याद दिलाने लगा। मौलवी ने जुलाहे की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और फैसला गुर्जर के हक में कर दिया। नज़दीक खड़े पेशकार को सारी कहानी का पता था। उसने कहा, ''मूर्ख! तेरी पगड़ी को बैल खा गया।'' उस समय मौलवी इसी तरह के न्याय किया करते थे।

गुरु नानकदेव जी किसी की निन्दा नहीं करते, सच बताते हैं। उस समय ये लोग न्याय नहीं करते थे, इसलिए आपने कलम को छुरी और इन्हें जगत का कसाई कहकर बयान किया है।

नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु॥

उस समय मुसलमानों ने यह कानून बनाया हुआ था कि जिसे अदालत में आना है, वह नीले कपड़े पहनकर आए। मुसलमान नीले कपड़ों को पसंद करते थे। उस समय के ब्राह्मण अपने अफसरों को खुश रखने के लिए नीले कपड़े पहनते थे। उन्हीं से पैसे लेकर पुराणों को पूजते थे।

अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥

आप कहते हैं कि ये लोग नाज़ायज तरीके से बकरे को मारकर खाते हैं फिर कहते हैं कि कोई भी हमारे चौके (रसोई) की तरफ न आए। अगर कोई हमारी रसोई की तरफ आएगा तो हमारी रसोई भ्रष्ट हो जाएगी।

दे कै चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥

आप कहते हैं कि ब्राह्मण लोग खाना तैयार करने से पहले रसोई के आगे एक लकीर खींच देते थे। वे ऐसा अब भी करते हैं कि कोई हमारी रसोई की तरफ न आए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि तुम्हारी खींची हुई लकीरें क्या करेंगी? तुम लोग झूठे हो। चौका तो तुम लोगों ने खुद ही भ्रष्ट कर रखा है। कबीर साहब कहते हैंः

दिन को रोजा रखत है रात हनत है गाय।
वो खून वो बंदगी क्यों खुश होए खुदाय॥

भतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु असाडा फिटै ॥
तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जुठै चुली भरेनि ॥

वे कहते हैं कि अगर कोई हमारी रसोई में आ जाए तो हमारा अन्न भ्रष्ट हो जाएगा। लेकिन गुरु नानक साहब कहते हैं, ''आपने नाज़ायज तरीके से कत्ल करके माँस खाया है, इसलिए आप लोग खुद ही भ्रष्ट हो।''

जिस तरह आजकल हम स्टाम्प पेपर पर लिखते हैं, उसी तरह उस जमाने में ब्राह्मणी-मत के अनुसार चुली भरी जाती थी, लोग उसी को सच मानते थे। आप कहते हैं कि अफसोस की बात है! आप मन से तो झूठे हो, आपकी चुलियाँ कैसे सच हो सकती हैं?

कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥

आप कहते हैं कि वह परमात्मा सच्चखंड में रहता है, उसका कभी नाश नहीं होता। अगर हम तन, मन और ख्यालों से सच्चे हों, पवित्र जीवन व्यतीत करते हों तभी उस परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सच्चो ओरे सबको ऊपर सच उचार।

बेशक सब चीजें परमात्मा से नीचे हैं लेकिन सच्चा-सुच्चा जीवन इससे भी ऊपर है। कबीर साहब कहते हैंः

माथे तिलक हथ माला बाना, लोगन राम खिलौना जाना।

हम परमात्मा को एक खिलौने की तरह समझते हैं। अगर हम परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो हमें भी उस परमात्मा जितना पवित्र बनने की जरूरत है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पश्चिम के लोगों को फल प्राप्त करने की बहुत जल्दी होती है। लेकिन वे अपने आपसे यह सवाल नहीं करते कि हम अंदर से कितने सच्चे हैं, कितनी मेहनत करते हैं? हमने अपना कितना सुधार किया है?''

मेरा अपना तर्जुबा है हम ज्यादा सवाल तभी करते हैं, जब हम अभ्यास छोड़ देते हैं, सच्चा जीवन जीने की आदत छोड़ देते हैं। हमें हमेशा डायरी द्वारा अपने जीवन की पड़ताल करनी चाहिए। जो गलती आज की है, उसे दोहराना नहीं चाहिए। तभी हमारा डायरी भरने का फायदा है।

चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा॥

गुरु नानकदेव जी महाराज अब उस परमात्मा की महिमा गाते हुए कहते हैं कि प्यारेओ! आप अपने दिमाग से यह निकाल दो कि परमात्मा हमें भूल चुका है। उसने हम सबको अपने दिल में बिठाया हुआ है और याद करता है। उसने हमारे कर्मों के मुताबिक ही हमें काम में लगा रखा है।

यह हमारी भूल है जो हम यह समझते हैं कि परमात्मा हमें बुराई करते हुए नहीं देखता। आप सोचकर देखो! कोई भी पाप नहीं करना चाहता लेकिन पाप करता है। पुण्य हर कोई करना चाहता है लेकिन कर नहीं सकता।

जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती हैं, वे हमें बताते हैं कि परमात्मा पहाड़ की चोटी पर बैठे हुए को भी देखता है और समुद्र की तह में बैठे हुए को भी देखता है। वह पत्थर में बैठे कीड़ों का भी ध्यान रखता है। चाहे कोई कहीं भी बैठा है, वह सबके लिए खाना पहुँचाता है। उसका किसी से कोई भेदभाव नहीं।

आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा॥

परमात्मा आप ही गुरुमुखों को अपनी खोज में लगाता है। आप ही भक्ति मार्ग की तरफ प्रेरित करता है, आप ही भक्ति करवाता है। आप ही उन्हें बड़ाई देता है कि तूने अच्छा कर्म किया है। वह जिसे चाहे मनमुख बना देता है।

कुछ प्रेमियों ने गुरु नानक जी से विनती कि जब सब कुछ परमात्मा के हाथ में है तो जीव नर्कों-स्वर्गों में क्यों फिरता है, क्यों बीमारियाँ सहता है? गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''यह एक अजीब ही खेल है कि जब कोई अच्छा काम हो जाता है तो जीव कहता है, ''यह काम मैंने किया है, मैं समझदार हूँ। इसकी 'मैं' ही इसे फँसाती है। जब बुरे कर्मों का प्रभाव आता है तब यह परमात्मा को दोष देता है।'' कहता है, ''मैं इतना बड़ा भक्त हूँ फिर भी परमात्मा ने मुझे कष्ट दिया है!''

वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा॥

आप कहते हैं कि वह परमात्मा सबसे बड़ा है उसकी बनाई हुई दुनिया भी बड़ी है। उसने सबको रोज़ी कमाने में लगाया हुआ है। सबको उनके कर्मों के मुताबिक बुद्धि बख्शता है।

नदरी उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा॥
दरि मंगनि भिख न पाइदा॥ दरि मंगनि भिख न पाइदा॥

आप कहते हैं कि वह परमात्मा बेअंत है। कोई उसकी महिमा बयान नहीं कर सकता। वह जिसकी तरफ से अपनी आँखें फेर लेता है, चाहे वह सारी दुनिया का बादशाह हो, उसे भी घास खोदने में लगा देता है, उसे गरीब बना देता है। दुनिया की नज़रों में गिरा देता है। बेशक वह लोगों के दरवाजे पर जाकर भीख माँगे, उसे कोई भीख नहीं देता।

शाहजहाँ का बड़ा बेटा दाराशिकोह, सूफी सन्त शर्मद का सेवक था। दाराशिकोह अच्छी कमाई वाला था, अंदर जाता था। जब महात्मा शर्मद ने दाराशिकोह को गुरु नानक जी की यह बानी सुनाई तो वह कहने लगा, ''यह कैसे हो सकता है कि एक बादशाह को घास खाना पड़े, वह माँगने जाए तो कोई उसे भीख न दे!'' महात्मा शर्मद समझदार थे चुप रहे।

शाहजहाँ अपने प्यारे बेटे दाराशिकोह को गद्दी देना चाहता था। पब्लिक भी दाराशिकोह के हक में थी क्योंकि दाराशिकोह अच्छा आदमी था। लेकिन शाहजहाँ का छोटा बेटा औरंगजेब गद्दी हासिल करना चाहता था। आखिर उसने अपने जोर से गद्दी प्राप्त कर ली। आप जानते ही हैं कि सियासत में लोग अपना मतलब ही हल करते हैं। वहाँ कोई भाई-बहन का लिहाज नहीं करता।

औरंगजेब ने शाहजहाँ को कैद कर लिया और दाराशिकोह को गद्दी पर बैठने नहीं दिया। दाराशिकोह वहाँ से भागकर सिक्खों के सातवें गुरु हरिराय के पास करतारपुर पहुँचा और उनसे विनती की कि मुझे किसी न किसी तरह सही सलामत लाहौर पहुँचाओ। गुरु हरिराय ने उसकी मदद की।

आगे जाकर दाराशिकोह ने जब खाना बनाने के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी करके आग जलानी चाही तो उसके मुँह पर

राख पड़ गई। उसके साथ जो नौकर था उसने कहा, ''देखो जी! आप फकीरों की संगत करते हो, इसलिए आपके मुँह पर राख पड़ी है।'' दाराशिकोह ने कहा, ''तुझे फकीरों की संगत के बारे में क्या पता है? मेरा कितना बड़ा राज्य छिन गया, यह फकीरों की संगत ही है कि मुझे इसका कोई दुःख नहीं।'' दाराशिकोह के पास जो भी धन-पदार्थ था, उसने वह नौकर को देकर उसे विदा कर दिया।

दाराशिकोह कुछ दिन जंगलों में फिरता रहा। फिर उसने सोचा कि तू इस शरीर की खातिर छिपता फिर रहा है! इस शरीर ने सदा नहीं रहना। क्यों इतनी परेशानियाँ उठा रहा है? वह फिर दिल्ली वापिस आ गया। औरंगजेब के वजीरों को पता लगा तो उन्होंने दाराशिकोह को पकड़ लिया। औरंगजेब चाहता था कि इसे गधे पर बिठाकर शहर में घुमाया जाए, फिर इसका कत्ल किया जाए। वजीरों ने सलाह दी कि बादशाह सलामत! आपने इसका कत्ल तो करना ही है, फिर भी यह आपका भाई है। आप इसे गधे की बजाय हाथी पर बिठाकर शहर में घुमाओ।

जब दाराशिकोह को हाथी पर बिठाया गया, वह बहुत कमजोर हो चुका था। औरंगजेब के सिपाही उसे खाने-पीने के लिए कुछ नहीं देते थे। रास्ते में चने के खेत थे, दाराशिकोह ने चने तोड़कर अपनी भूख मिटानी चाही। नौकरों को बादशाह के कानून का पता था इसलिए उन्होंने उसे चने नहीं तोड़ने दिए। तब उसे गुरु नानकदेव जी की बानी याद आई कि जिससे परमात्मा नज़र फेर लेता है, चाहे वह बादशाह हो, उसे भी घास खाने पर मजबूर कर देता है।

जब दाराशिकोह और आगे गया तो उसने देखा कि एक औरत खाना बना रही है। दाराशिकोह ने उससे कहा, ''मैं बहुत भूखा हूँ तू मुझे खाना दे।'' उस औरत ने कहा, ''तेरे भाई बादशाह औरंगजेब का हुक्म है कि अगर किसी ने तुझे खाना

दिया तो वह सोच ले!'' तब उसे सन्तों-फकीरों की बात याद आई कि जब मालिक नज़र फेर ले तो कोई उसे खाने के लिए रोटी का एक टुकड़ा भी भीख में नहीं देता।

औरंगजेब ने सूफी सन्त शर्मद को भी कैद किया हुआ था। शर्मद पर यह इल्जाम था कि वह दाराशिकोह को गद्दी पर बिठाने में उसकी मदद करता है। शर्मद अंदरूनी राज का वाकिफ था। हाथी पर बैठा हुआ दाराशिकोह जब जेल में बंद शर्मद के आगे से गुजरा तो शर्मद ने उससे कहा, ''इस समय सच्चखंड का दरवाजा खुला है, परमात्मा तुझे गले लगाएगा। तू अपने सिर का त्याग कर दे। तेरे कर्मों का हिसाब खत्म हो जाएगा।'' दाराशिकोह ने हँसकर अपने सिर का त्याग कर दिया।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि परमात्मा एक अभूल शक्ति है जो अपनी आत्माओं को संसार में भेजकर भूलता नहीं। परमात्मा जिसकी तरफ से अपनी नज़र फेर लेता है, चाहे वह दुनिया के तख्त का मालिक हो, उसे भी रुला देता है। अगर वह गरीब पर नजर करे तो उसे बादशाह बना देता है।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने किसी की निन्दा नहीं की, न ही हमारा यह भाव है कि हम इसे निन्दा समझें। इस बानी में आपने उस समय के समाज की दशा को पेश किया है।

❁❁❁

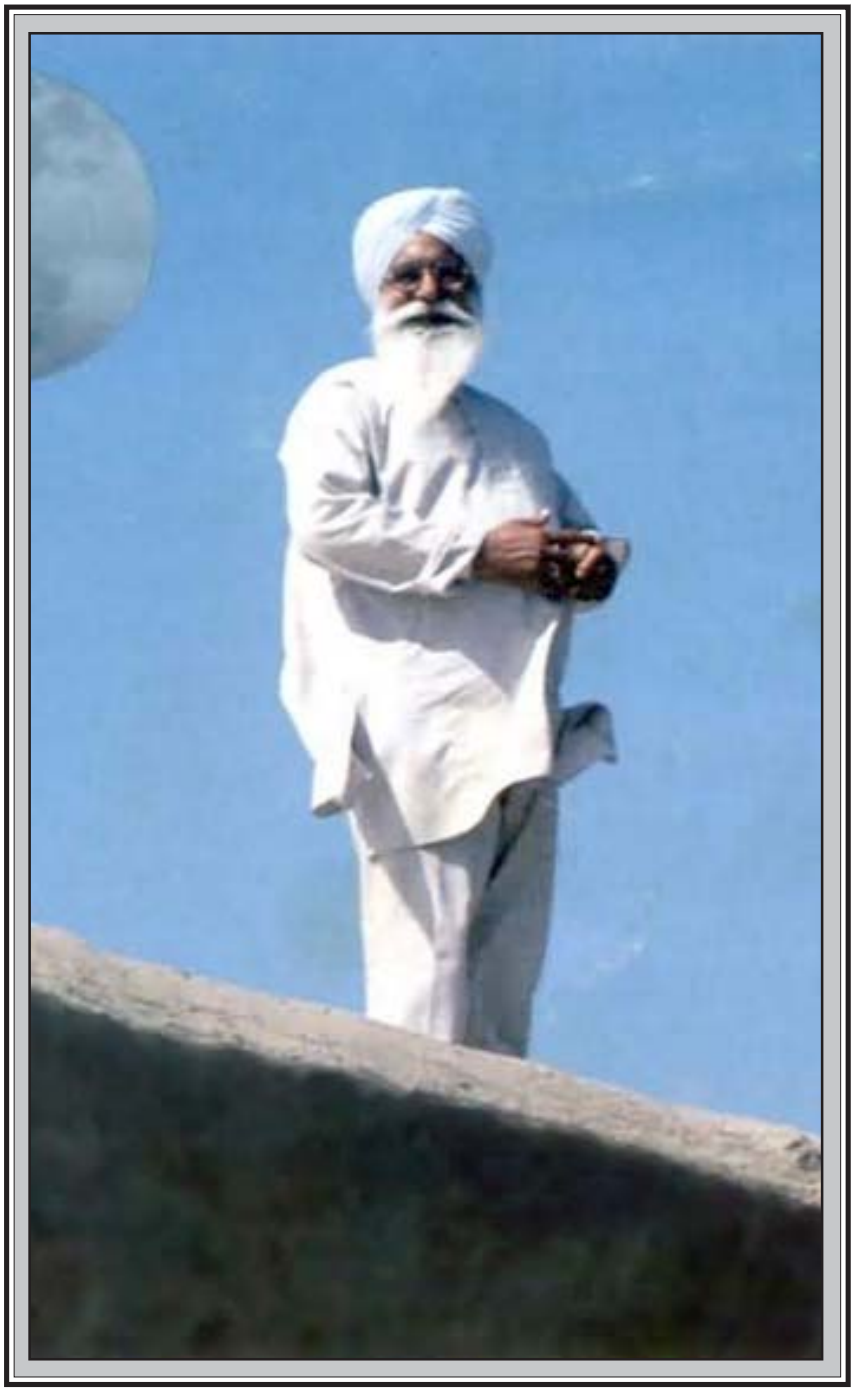

सोलह

सूतक और पातक

हिन्दुस्तान में आज भी हिन्दू परिवारों में श्राद्ध का रिवाज़ है। यह समझा जाता है कि जो बड़े बुजुर्ग संसार छोड़ गए हैं उनके निमित अगर ब्राह्मणों को खाना खिलाया जाए, दान दिया जाए या कोई श्रेष्ठ कर्म किया जाए तो वह पितरों को पहुँचता है।

श्राद्ध का मतलब है कि जो काम श्रद्धा और प्यार से किया जाए। आमतौर पर श्राद्ध अगस्त के आखिर और सितम्बर के शुरू में पन्द्रह दिन किए जाते हैं।

सन्तमत में इन भ्रमों को नहीं माना जाता। सन्तमत में हमेशा बताया जाता है कि जब आपके माता-पिता, दादा-पड़दादा जीवित हों उस समय उनकी सेवा और देखभाल करो; यही आपके लिए फायदेमंद है। अगर आप यह समझते हैं कि ब्राह्मणों को खिलाया हुआ खाना आपके पितरों को मिलेगा तो यह गलत है। अगर हम किसी के नाम का खाना खाएँ, चाहे वह नज़दीक बैठा हो, उसके पेट पर कोई असर नहीं होता। जिन्हें हम देख ही नहीं रहे, जानते ही नहीं कि वे किस योनि में है, उनकी क्या खुराक है, उन्हें खाना पहुँचा या नहीं?

बाबा बिशनदास जी कहते थे कि यह रस्म किसी लोभी पुरुष द्वारा चलाई हुई है। जब पते के बिना पत्र नहीं पहुँच सकता तो कोई आदमी हमसे चीज़ लेकर हमारे पितरों तक कैसे पहुँचा सकता है? क्या हमारे पितर हमें अपना पता लिखवाकर गए हैं कि वे किस योनि में हैं और उनकी खुराक क्या है?

लाहौर में दो गरीब खत्री प्रेमी थे। साल में एक बार श्राद्ध

की रस्म करवानी पड़ती है। उन्होंने ब्राह्मण से विनती की कि हमारे पास ज्यादा धन-पदार्थ नहीं है। ब्राह्मण ने उनसे कहा, ''चाहे तुम चोरी करो, लेकिन अपने पितरों के निमित खाना जरूर खिलाओ।'' उन खत्रियों ने वैसा ही किया। गुरु नानकदेव जी भी वहाँ पहुँच गए। आप इस बानी में उस ब्राह्मण को उपदेश करते हैं।

गुरु नानकदेव जी का एक खत्री सेवक दुनीचन्द था। उसने भी श्राद्ध का कार्यक्रम आरम्भ किया हुआ था। गुरु नानकदेव जी ने दुनीचन्द से पूछा, ''प्यारे आ! तू यह आडम्बर किसलिए कर रहा है?'' उसने बताया, ''आज मेरे पिता का श्राद्ध है।'' गुरु नानक जी घट-घट की जानने वाले थे। आपने कहा, ''दुनीचन्द! तूने खीर और हलवा बनाया हुआ है लेकिन तेरा पिता इस समय बघियाड़ की योनि में है; उसका तो यह खाना ही नहीं है।''

दुनीचन्द ने आपके आगे विनती की, ''महाराज जी! आप अपनी दया-दृष्टि से यह भी बता दो कि मेरा पिता किस जगह है। आपने उसे बताया कि इस समय तेरा पिता उस झाड़ी में है। वह दो दिन से भूखा है। बीमार और बुजुर्ग होने की वजह से कोई शिकार नहीं कर सका। तू उस पर यह पानी छिड़क दे, वह देह छोड़ देगा। इस तरह सन्त-महात्मा हमारा वहम और भ्रम दूर करने के लिए संसार में आते हैं।

गुरु नानक जी ने सिख समाज में दस जामे धारण किए। लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि इन महात्माओं ने दो-चार भ्रम निकाले तो हमने और ज्यादा भ्रम पैदा कर लिए। आज सिक्ख समाज में भी इसी रस्म को पूरा करने के लिए ब्राह्मणों की बजाय ग्रन्थियों को बुलाया जाता है। पाँच सिक्ख बुलाए जाते हैं। खीर की जगह देग (हलवा) तैयार किया जाता है।

मैं जब 77 आर. बी. में गया, वहाँ पाठी के पड़ोसी मुझे

न्योता देने आए कि आज आपकी रोटी है, हम पाँच सिक्खों को खाना खिलाते हैं। मैंने उनसे कहा, ''हम तो छह-सात हैं।'' पाठी मुझे समझाने लगा कि पाँच सिक्खों को खाना खिलाने से ही इनकी रस्म पूरी होती है। जब मैंने उस प्रेमी को समझाया तो वह समझ गया। कबीर साहब कहते हैं:

जीवित पितर न माने कोई, मुए श्राद्ध कराही।
पितर भी बपरे को को पावे, कौआ कूकर खाही॥

हिन्दुस्तान में गांव के लोग बूढ़े बैल को भी घर से नहीं निकालते। लेकिन अब पश्चिम के रिवाज़ यहाँ भी आ रहे हैं। वृद्धाश्रम बन रहे हैं। जब बच्चा असहाय होता है माता-पिता उसे पालते हैं, पढ़ाते-लिखाते हैं और उसकी हर जरूरत को पूरा करते हैं लेकिन वही बच्चे, बूढ़े माँ-बाप को वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं। बुजुर्ग के मरने के बाद वही बच्चे अपना नाम ऊँचा करने के लिए अच्छी-अच्छी क्रियाएँ करते हैं ताकि लोग उन्हें अच्छा कहें।

जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ॥
अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ॥

जिस ब्राह्मण ने खत्रियों से कहा था कि चाहे तुम चोरी ठगी करो, लेकिन पितरों के निमित श्राद्ध जरूर करो। गुरु नानक जी उस ब्राह्मण से कहते हैं कि अगर कोई किसी की चीज़ चोरी करके पितरों के निमित किसी को खिलाता है। आगे उनके पितर उस चुराए हुए धन, वस्तु को पहचान लेते हैं और कहते हैं कि ''ये तो हमारी वस्तु है।''

वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ॥
नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ॥

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''देख प्यारेआ! दस नाखूनों की मेहनत से कमाया हुआ अन्न, दान ही पितरों को पहुँचता है। परमात्मा ने धर्मराज को मुनसिफ बनाया है। वह न्याय करता है। जिसने यह प्रेरणा दी कि चाहे चोरी करके लाओ लेकिन दान जरूर करो, उसके हाथ काटे जाते हैं क्योंकि उसने ही इस दलाली के लिए प्रेरित किया था।'' सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैंः

आरन दियां चोरियां सुई करदे दान।
कोठे चढ़के देखदे औन्दे कदों बवान॥

जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार॥
जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु॥

पिछले जमाने में औरत को पैर की जूती और गुलाम समझा जाता था। बेशक औरत कितनी भी अच्छी क्यों न हो, वह बेचारी चार दीवारी में ही कैद होकर रह जाती थी। आमतौर पर लेखक आलम-फाज़ल मर्द ही हुए हैं लेकिन सन्त जब भी संसार में आए उन्होंने औरत को भी मर्द के बराबर दर्जा दिया। सन्तों ने समझाया कि सबके अंदर एक ही आत्मा है, वह न औरत है न मर्द है।

गुरु नानक जी के साथ बहुत सारे पंडितों ने बहस की कि औरत को हर महीने ऋतु आते हैं तो यह किस तरह सुच्ची है? आपने उन लोगों को बहुत प्यार से समझाया कि हाँ प्यारेओ! इसे हर महीने ऋतु तो जरूर आते हैं लेकिन यह नहीं कह सकते कि औरत सुच्ची नहीं हैं। हम 'नाम' को जपकर ही सुच्चे हो सकते हैं। जब हम अपना मुँह परमात्मा की तरफ से हटाकर दूसरी तरफ कर लेते हैं तो हमारा मुँह भी जूठा और तन भी जूठा। हम जहाँ भी जाकर जन्म लेते हैं वहाँ भी जूठे होते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

कहत कबीर सेई नर सूचे साची पढे विचारे ॥

सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥
सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥

पंडितों ने कहा कि महाराज जी! हम रोज सुबह तीन बजे उठकर स्नान करते हैं। दो धोतियाँ रखते हैं। हर रोज नई धोती बदलते हैं। हम तो सुच्चे हैं लेकिन आप हमें भी जूठा कहते हो। गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''प्यारेओ! पानी बदन की मैल उतारता है लेकिन 'नाम' आत्मा की मैल उतारता है। असली सुच्चे वही हैं जिनमें सोते-जागते, उठते-बैठते 'नाम' बस जाता है। जो प्रभु के शब्द से जुड़ जाते हैं।''

तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥

अब गुरु नानकदेव जी इस संसार की हालत बयान करते हुए कहते हैं कि उस वक्त संसार में आज की तरह हवाई जहाज, कार और ट्रेनों के साधन नहीं थे। आमतौर पर हाथी, घोड़ों और ऊँटों को ही अच्छी और तेज सवारी माना जाता था। इन्हें बहुत सुंदर कपड़ों से सजाया जाता था।

वे राजा भी संसार को छोड़कर चले गए जिनके पास पवन की तरह चलने वाले हाथी, घोड़े थे। अच्छी-अच्छी रानियाँ थी। रानियाँ राजाओं को हर तरह से खुश करती थी।

कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥

वहाँ बहुत ऊँची-ऊँची बिल्डिंगें थी, नौकर थे जिन पर उनका हुक्म चलता था। राजा अपने महलों को छोड़कर बागों में, जंगलों में कोठियाँ बना लेते थे। वहाँ अपने दिल को खुश करने के लिए शिकार खेलते और कई किस्म की रंगरलियाँ मनाते थे।

चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥

दुनिया में उनकी बहुत हुकूमत चलती थी। उनके मन में जो आता था, वे वही करते थे। नौकर उनका हुक्म बजाते थे उन्होंने इन्सानी जामे में परमात्मा को नहीं पहचाना कि यह सब परमात्मा की देन है। आखिर हारकर दरगाह में चले गए। सारा साजो-सामान यहीं छोड़ गए।

करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ॥
जरु आई जोबनि हारिआ॥ जरु आई जोबनि हारिआ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''राजा-महाराजाओं ने पैसा अपनी मेहनत की कमाई से नहीं बनाया होता। लोगों पर टैक्स लगाकर, जुर्माने लगाकर वसूल किया होता है। ये उस पैसे से ऐश-इशरतें करते हैं; हर एक पर हुक्म चलाते हैं। जवानी चली जाती है, बुढ़ापा आ जाता है और मौत किसी का इंतजार नहीं करती।''

गुरु नानकदेव जी महाराज का मकसद हम गफलत की नींद में सोए हुओं को जगाने का है कि परमात्मा ने हमें इन्सानी जामा 'नाम' जपने के लिए दिया है।

जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ॥
गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ॥

आमतौर पर हिन्दुओं में जब किसी के घर बच्चा पैदा हो तो उसे **सूतक** कहते हैं। किसी के घर में मौत हो जाए तो उसे **पातक** कहते हैं। उस समय उस घर को अपवित्र माना जाता है।

दिल्ली में दो खत्रियों ने पंडित को न्योता दिया कि हमारे घर श्राद्ध है; आप आओ। मालिक की मौज उनके घर बच्चा पैदा हो गया। ब्राह्मणों ने कहा कि अब हम यहाँ खाना नहीं खा सकते। खत्रियों का बनाया हुआ अन्न-पानी वैसे ही रखा रह

गया। उन खत्रियों को पता चला कि गुरु नानकदेव जी यहाँ आए हुए हैं। उन्होंने गुरु नानक जी से विनती की, ''महाराज जी! हमने बहुत अच्छे-अच्छे खाने बनाए हैं। लेकिन पंडित उन खानों को नहीं खा रहे; कहते हैं कि आपके घर में **सूतक** हो गया है।''

उन खत्रियों के दिल को ठेस लगते हुए देखकर गुरु नानक जी ने कहा, ''प्यारेओ! हम अपनी संगत के प्रेमियों को भेज देते हैं। वे तुम्हारा अन्न-पानी लेखे लगा देगें।'' गुरु नानक जी इस शब्द में उस पंडित को बताते हैं कि **सूतक और पातक** क्या है?

गुरु नानक जी ने कहा, ''प्यारेओ! अगर आप ठंडे दिल से **सूतक** को विचारो तो हर जगह ही **सूतक** है। गोबर के अंदर, लकड़ी के अंदर कीड़े हैं। आप इन्हें रोज ही जलाते हैं। आपके घर में कीड़े पैदा भी होते हैं, मरते भी हैं।''

जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ॥

आप कहते हैं, ''अन्न के दाने जीव के बिना नहीं हैं। सूरज, चंद्रमा की किरणों द्वारा आत्मा फलों में प्रवेश करती है तभी फल पकते हैं। जब हम अग्नि में दाने भूनते हैं तो वे तड़-तड़कर भुजते हैं। जिन दानों को आप रोज खाते हो उनमें कोई भी दाना जीव के बिना नहीं है। इसलिए अगर आप इसे **सूतक** मानते हो तो इन्हें भी खाना छोड़ दो।''

पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ॥

आप कहते हैं, ''पानी पीकर ही सब जीव जीवित रहते हैं। पानी में जीव पैदा होते हैं मरते हैं और वहीं भोग भोगते हैं। अगर जीव करके **सूतक** है तो पंडित जी! आप पानी क्यों पीते हैं?''

सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ॥
नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ॥

गुरु नानक जी कहते हैं कि हम घर में रसोई बनाते हैं, वह भी **सूतक** है, क्योंकि उन चीजों में भी जीव हैं। सूतक इन चीजों को छोड़ने से नहीं उतरता। ज्ञान ही **सूतक** को उतार सकता है।

गुरु नानकदेव जी महाराज किसी जाति की निन्दा नहीं करते। आप समझाते हैं कि किन चीजों का **सूतक** होता है और किस तरह नाम की कमाई से **सूतक** उतर जाता है।

मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकुकूड़ु ॥

आप कहते हैं, ''पराए धन पर निगाह रखनी, उसे अपना समझना, मन का **सूतक** है। किसी की निन्दा करनी, झूठ बोलना जीभ का **सूतक** है।''

अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥
कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥

पराई औरत को बुरी नज़र से देखना आँखों का **सूतक** है। बेविश्वासी बातें सुनकर उन्हें ग्रहण करना कानों का **सूतक** है।

नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥

ये जीव आत्माएँ पवित्र थी, हंस थीं। इनका चोगा अनहद शब्द था लेकिन दुनिया की मैलों में फंसे होने के कारण यम इन्हें यहाँ से बाँधकर ले जाते हैं। गले में जंजीर डालकर धर्मराज के सामने पेश करते हैं। उन कर्मों, करतूतों की वजह से हम चौरासी में चले जाते हैं; नरकों में दुःख भोगते हैं।

सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥
जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥

गुरु नानकदेव जी उस पंडित को समझाते हैं कि प्यारे आ!

ये सब तुम्हारे भ्रम हैं। जन्म-मरण उसके हुक्म में होता है। जीव परमात्मा के भाणे में आता है और उसके भाणे में ही चला जाता है।

खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि॥
नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ तिन्हा सूतकु नाहि॥

उस परमात्मा ने जीवों के लिए रोजी दी है जो उसके हुक्म में ही तैयार होती है। यह पवित्र है। जिन्होंने मालिक के प्यारे गुरुमुखों से 'नाम' प्राप्त कर लिया, परमात्मा के साथ मिलाप कर लिया, उन्हें **सूतक और पातक** कुछ नहीं लगता। वे लोगों को इन भ्रमों में नहीं डालते।

सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ॥

गुरु नानकदेव जी सतगुरु की महिमा बयान करते हुए पंडित से कहते हैं कि जिन गुरुओं ने हमें नाम दिया है, वे परमात्मा से मिल चुके हैं। हमें परमात्मा से मिलने का साधन बताते हैं और हमारी मदद भी करते हैं।

उनमें परमात्मा ने बहुत विशेषताएँ रखी होती हैं। उनकी विशेषता यह है कि वे दुनिया में रहते हुए दुनिया की मैलों में नहीं फँसते। सच्चाई तो यह है कि वे अपने सेवकों से भी कहते हैं कि आप सदा अपने ख्यालों को पवित्र रखो। आपके ख्याल जितने पवित्र होंगे, उतना ही आपका मन पवित्र होगा, जितना मन पवित्र होगा उतनी ही आत्मा पवित्र होगी। आत्मा पवित्र होगी तो परमात्मा अपना दरवाजा खोलेगा। शब्द हमें अंदर खींच लेगा और अपने में मिला लेगा।

सहि मेले ता नदरी आईआ॥
जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ॥

जब वह परमात्मा हम पर मेहर करता है तो हमारा मिलाप गुरुओं के साथ करवाता है। हम उनके दिए हुए 'नाम' की कमाई करते हैं। जब हम उनके प्यार के समुद्र की तह में डुबकी लगाते हैं तो 'नाम का मोती' निकाल लेते हैं। हम जैसे-जैसे तरक्की करते हैं हमें सतगुरु की विशेषताएँ नज़र आती हैं।

करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ॥
सहि तुठै नउ निधि पाईआ॥ सहि तुठै नउ निधि पाईआ॥

ऐसी पवित्र हस्ती जब खुश होकर हमारे सिर पर हाथ रखती है उस समय अगर हमारे अंदर श्रद्धा, प्यार है और हम उस हाथ की कदर जानते हैं तो हमारे अंदर नाम का खज़ाना प्रगट हो जाता है, शब्द चलना शुरु हो जाता है।

मैं अपने गुरु के बारे में बताया करता हूँ कि जब वे प्यार से मुझे अपने गले लगाते थे, उस समय बहुत से आदमी यह कहा करते थे :

बडभागी ओह जीव है, जिनको सतगुरु अंग लगाए।

सन्त सबसे प्यार करते हैं। सवाल हमारी श्रद्धा और प्यार का है कि हम उन्हें वजूद समझते हैं या उनके हाथ को कुल मालिक का हाथ समझते हैं।

महात्मा महान और पवित्र होते हैं। वे मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर उठे होते हैं। अगर हम भी मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर उठें तो 'शब्द' की जो ताकत सन्तों में काम करती है, उसके साथ जुड़ जाएँ, उसे प्रगट कर लें।

❁❁❁

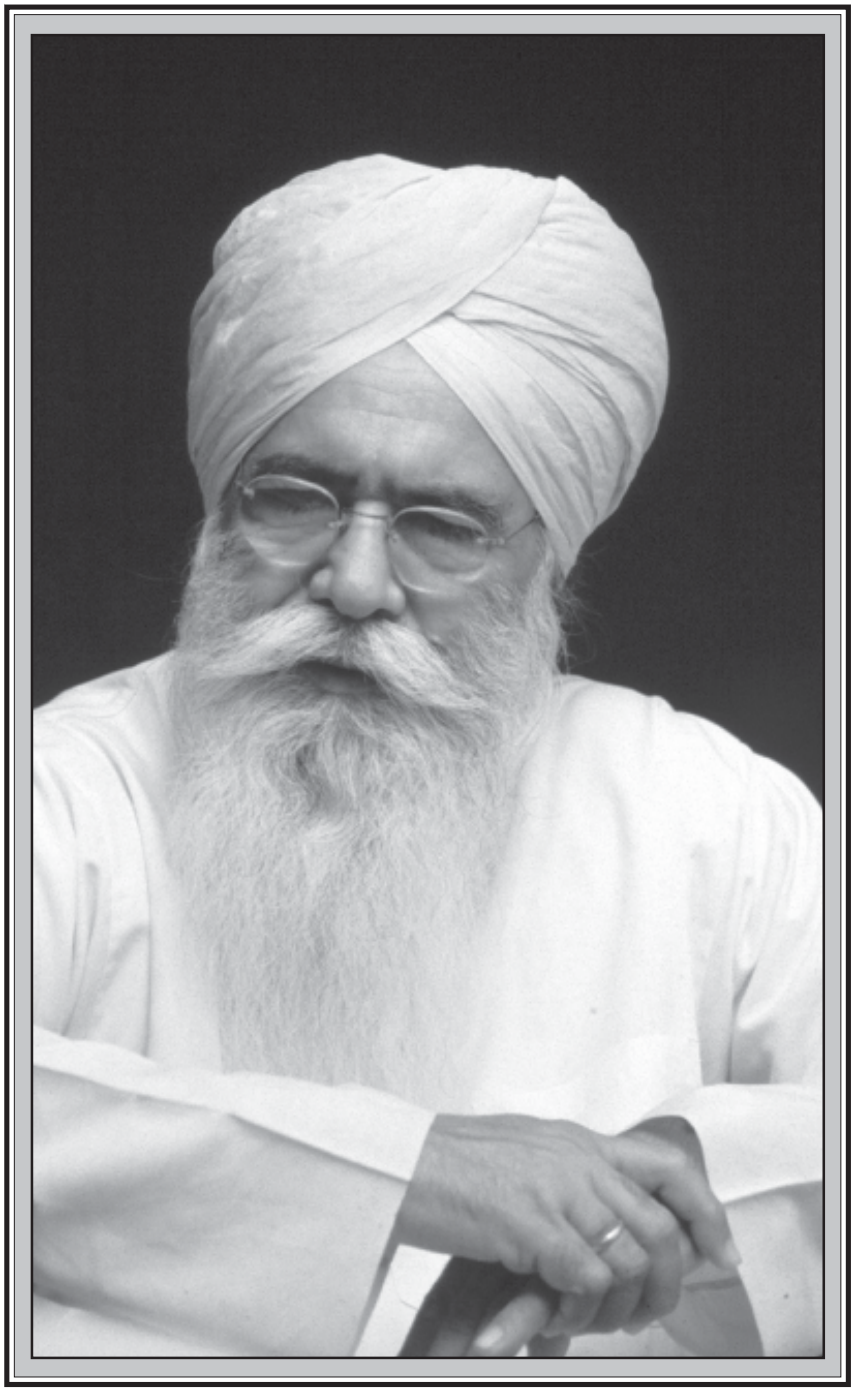

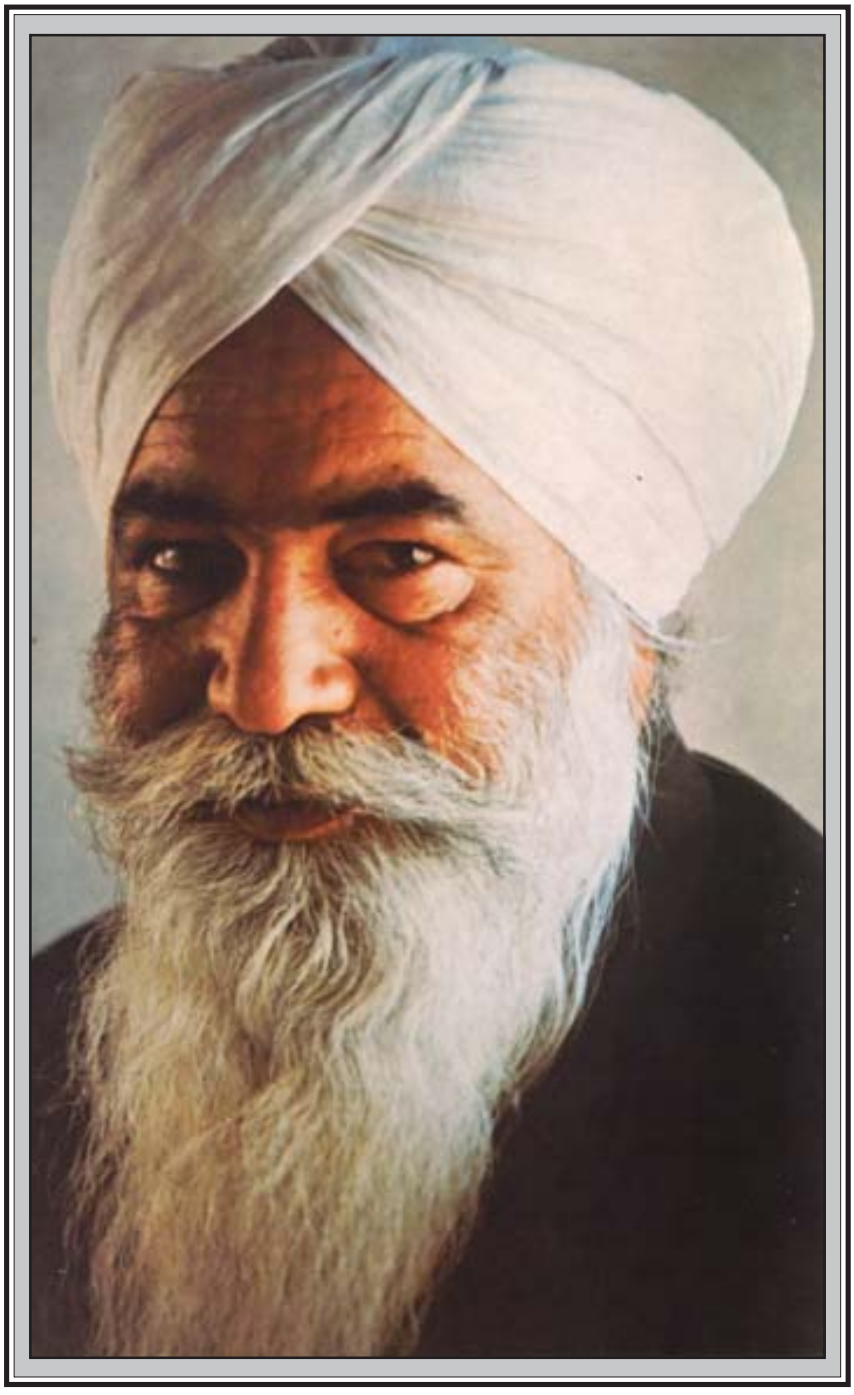

सतरह

सोहबत-संगत

शुरू से ही हिन्दुस्तान धार्मिक विचारों का रहा है। यहाँ की आत्माओं का झुकाव परमात्मा की तरफ रहा है। आमतौर पर हर गांव में, चाहे कोई किसी भी जाति का है, सबने अपनी-अपनी श्रद्धा के मुताबिक धर्मस्थान बनाए हुए हैं, जहाँ वे रोजाना अपने-अपने धार्मिक रीति-रिवाज करते हैं।

एक समय था, जिन आत्माओं को परमात्मा ने अपने चरणों में जगह देनी थी, उन्हें हिन्दुस्तान में ही जन्म दिया जाता था। ये आत्माएं थोड़े से इशारे से ही परमात्मा की भक्ति में लग जाती थीं। प्रभु की दया है कि अब पश्चिम के लोगों में भी प्रभु-भक्ति की जागृति आई है, बहुत सी आत्माएं जाग चुकी हैं।

मन पर **सोहबत** का असर बहुत जल्दी पड़ता है। जो आत्माएं हिन्दुस्तान में पैदा होती थी उन्हें शुरू से ही अच्छे विचार मिलते थे, महात्माओं का सतसंग मिलता था। इसलिए इन आत्माओं का झुकाव परमात्मा की तरफ रहा। हिन्दुस्तान को ऋषियों-मुनियों का देश कहा गया है क्योंकि यहाँ के लोग तप-अभ्यास, सुरत-शब्द, योग अपनाकर बहुत खुश होते थे और ज्यादा से ज्यादा भक्ति भाव में लगे रहते थे।

भागवत में आता है कि जप-तप, पूजा-पाठ से परमात्मा को नहीं पाया जा सकता है। कृष्ण भगवान ने कहा था, ''भक्त सतसंग और अच्छी **संगत** के द्वारा ही मुझे पा सकता है।''

एक बार नारद मुनि और शुकदेव मुनि में बहस हुई। शुकदेव मुनि सतसंग की महिमा को जानता था। शुकदेव मुनि की जिंदगी को पलटने वाला राजा जनक था। नारद ने साठ हजार वर्ष तप

किया था, उसे अहंकार था कि मेरे जितना तप किसने किया है! दोनों ने विष्णु भगवान के पास जाकर कहा कि हमारा न्याय करो कि सतसंग की महिमा ऊँची है या तप की महिमा ऊँची है?

विष्णु भगवान ने दोनों को शेषनाग के पास भेज दिया। दोनों ने शेषनाग के पास जाकर अपना सवाल किया। शेषनाग ने कहा, ''मेरे सिर पर धरती का वजन है अगर आप एक बार धरती का वजन उठा लो तो मैं आपका न्याय बहुत आसानी से कर सकता हूँ।''

नारद ने साठ हजार वर्ष का तप लगा दिया लेकिन धरती वैसी ही रही। शेषनाग न्याय करने के लिए आजाद नहीं हुआ। शुकदेव मुनि ने कहा, ''मैं **सोहबत संगत** की एक घड़ी देता हूँ।'' शेषनाग आजाद हो गया। नारद ने कहा, ''हम बहुत दूर से चलकर आए हैं। आप हमारा न्याय क्यों नहीं कर रहे?'' शेषनाग ने कहा, ''आपका न्याय तो हो गया है। अब आप सोचकर देख लो कि तप की महिमा भारी है या सतसंग की महिमा भारी है।''

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमारा मन विषय-विकारों में फँसकर सूख जाता है और शराबों-कबाबों की लज्जत लेकर खुष्क हो जाता है।'' आप उस परमात्मा का धन्यवाद करते हुए कहते हैं कि हे परमात्मा! तूने मुझ पर दया करके उस महान सतगुरु रामदास जी की **संगत** दी, जिनकी **संगत** में आकर हमारा सूखा मन फिर से हरा हो गया है। आप कहते हैंः

मेरे माधो जी सतसंगत मिले सो तरया।
गुरु प्रसाद परम पद पाया सूखे काष्ट हरया॥

सन्तों का जाति तजुर्बा है कि राक्षस बुद्धि वाले लोग भी महात्मा की संगत में आकर महात्मा ही बन जाते हैं। हमारा मन महात्मा की **सोहबत-संगत** में आकर ही पलटा खाता है।

महात्माओं ने हमें 'शब्द-नाम' की कमाई के बारे में समझाया, लेकिन हम इसे रीति-रिवाज बनाकर बैठ गए। महात्माओं ने हमें बताया कि शरीर की सफाई के लिए नहाना जरूरी है। खासतौर पर पंडित लोगों ने इसे ही मुक्ति का साधन बना लिया। यही कर्मकांड दूसरों से ईर्ष्या का कारण भी बनते हैं। एक दूसरे से रीति-रिवाज न मिलने के कारण ही हर कोई यह कहता है कि हमारे कर्मकांड करने का साधन ठीक है।

यहाँ आश्रम में तीन चार महीने पहले दो आदमी आए। उन्होंने महाराज जी और गुरु नानक जी की लेखनियों पर बहुत से सवाल किए। उनके सवाल इतने ज्यादा थे कि अगर कोई उन्हें पढ़े तो तीन चार दिन लग जाएं। वे देखने में अच्छे शरीफ आदमी लगते थे। उन्होंने अपना किस्सा कहानी मेरे सामने रखा और साथ में यह भी कह दिया, ''हम पूरे हैं हम अंदर जाते हैं।'' मैंने उन्हें बहुत ठंडे दिल से कहा कि मैं कभी भी किसी के साथ जिद्द करके खुश नहीं होता। मैं एक ही जवाब देता हूँ, ''अगर आप पूरे हो, अंदर जाते हो तो आपको किसी के साथ झगड़ा करने की क्या जरूरत है? आप आराम से अपने घर बैठो। लोग आपकी इज्जत करेंगे।''

उन्होंने हमारे एक सतसंगी से कहा कि हम तुम्हारे सन्तों के पास सवाल-जवाब करने के लिए गए थे। लेकिन तुम्हारे सन्तों के छोटे से जवाब से ही हमारी तसल्ली हो गई। अब हम अपने कानों को हाथ लगाते हैं, हम किसी के साथ बहस नहीं करेंगे।

आमतौर पर हम समाजों की निन्दा आलोचना करने से पहले विचार नहीं करते। कबीर साहब कहते हैं:

घट न किन्हे कहाया, सब कहते हैं पाया।

जिन्होंने पाया होता है, वे किसी के साथ बहस नहीं करते। उस समय ब्राह्मण मत का बहुत जोर था। आमतौर पर लोग पंडितों को अच्छा समझते थे। उनकी इज्जत करते थे और उन्हें घर लाकर खाना खिलाते थे। पंडित खाना खाने से पहले स्नान करते और कुछ श्लोक भी पढ़ते थे। लोग पंडितों की ऐसी क्रियाओं को रोज ही देखते थे।

जब गुरु नानक जी का इस संसार में आगमन हुआ, कुछ सेवकों ने आपसे पूछा, ''महाराज जी! लोग बहुत पवित्र भोजन बनाते हैं लेकिन अफसोस! यह अंदर जाकर गंद क्यों बन जाता है? खासकर पंडित लोग तो बहुत पवित्रता रखते हैं। इनके अंदर जाकर तो यह गंद पैदा होना ही नहीं चाहिए?''

गुरु नानकदेव जी महाराज का मकसद किसी का दिल दुखाना या निन्दा करना नहीं। आप हर समाज और हिन्दुओं के तीर्थों पर भी गए। आपने जो कुछ देखा उसे बानी में लिख दिया। मैं हर रोज आसाजी दी वार पर सतसंग कर रहा हूँ। सन्त समाज सुधारक भी होते हैं। आपने उस समय ये वारें इसलिए रची कि लोग अपने आपको दुनियावी तौर पर सुधारें, तभी रूहानियत में तरक्की कर सकते हैं।

पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ॥
सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि पहले जगह को लीप-पोतकर साफ किया जाता है फिर उस पर अच्छे वस्त्र बिछाए जाते हैं। पंडित स्नान करके सुच्चा अन्न तैयार करता है कि कोई आदमी इसे भ्रष्ट न कर दे। इस पर किसी की परछाई न पड़े। पंडित धार्मिक श्लोक पढ़ता है ताकि अन्न और भी पवित्र हो जाए।

सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥
कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥

अब गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि इतनी सुच्चम करके, श्लोक पढ़कर और अच्छे ख्यालों से खाने बनाकर इसे गन्दी जगह में फेंक दिया। इसमें से बदबू आनी शुरु हो गई। तो इसका दोष किसको लगा?

अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु ॥
पंजवा पाइआ घिरत ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥

अब आप कहते हैं, ''प्यारेओ! अन्न देवता है, अग्नि देवता है, पानी देवता है और नमक देवता है। पांचवा, घी डालने से यह भोजन पवित्र बन गया।''

पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥

आप कहते हैं कि पापी तन का साथ लेकर यह पवित्र अन्न भी पापी हो गया। इस अन्न को जहाँ फेंकते हैं वहाँ कोई बैठने के लिए तैयार नहीं होता और थूकते हैं। बेशक हम पाखाने में कितनी भी सफाई रखें, चाहे कितनी भी डी.डी.टी. छिड़कें, फिर भी हम वहाँ बैठने का कोई कार्यक्रम नहीं कर सकते।

जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥
नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥

आप कहते हैं कि 'नाम' के रस के बिना यह भोजन थूकने के काबिल हो गया। अगर हम नाम की कमाई करके नाम-रूप हो जाएं, तभी हमारा खाना-पीना पवित्र है।

परमात्मा ने हमारे शरीर की रचना बहुत अच्छे तरीके से की है। हाथ, कान, नाक, आँखें और अन्य इन्द्रियाँ बनाई हैं।

परमात्मा ने इस शरीर के अंदर अपनी चेतनशक्ति आत्मा रखकर इसे मन-बुद्धि के हवाले कर दिया। परमात्मा ने जिस काम के लिए ये इन्द्रियां लगाई हैं, अगर हम इनसे सही काम लें, तो हम कभी भी संसार में नहीं भटक सकते। लेकिन हम इन इन्द्रियों का गलत इस्तेमाल करते हैं। इसलिए आज हम परेशान हैं।

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु॥

स्त्री को भंड कहा गया है। गुरु नानकदेव जी महाराज जिस समय संसार में आए, उस समय स्त्री को बहुत धिक्कारा जाता था। पैर की जूती तक समझा जाता था। इसी कारण मुसलमानों में आज भी स्त्री को मस्जिद में जाने की इजाजत नहीं है। हिन्दू शास्त्रों में भी स्त्री को अपवित्र माना जाता है। मर्द योनि को ही पवित्र समझा जाता है।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि प्यारेओ! स्त्री को बुरा क्यों कहते हो? स्त्री के पेट के अंदर ही बच्चा फलता-फूलता और जन्म लेता है। बड़ा होने पर स्त्री के साथ ही सगाई और शादी करता है। स्त्री के कारण ही हम दुनिया में एक दूसरे से रिश्तेनाते और मित्रता बनाते हैं।

भंडहु ही भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान॥

गुरु नानकदेव जी उस समय के लोगों को जवाब देते हैं कि अगर पहली स्त्री मर जाती है, तो हम और ढूंढते हैं। उसके साथ भी वही रिश्ता कायम कर लेते हैं। स्त्री ने ही ऋषियों-मुनियों, अवतारों, राजाओं, महाराजाओं को जन्म दिया है। जहाँ से आप खुद पैदा हुए हो, आप उसी स्त्री को बुरा कहते हो।

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि ऐसा कोई आदमी नहीं जो स्त्री के बगैर पैदा हुआ हो। अगर स्त्री के बगैर कोई पैदा हुआ, स्वतः-सिद्ध प्रकाश हुआ तो वह एक परमात्मा ही है जो आदि-युगादि से चला आ रहा है।

जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि॥
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि॥

जो महात्मा परमात्मा-रूप हो चुका है, उसकी बड़ाई करने से ही हमारे भाग्य जागते हैं। हमारे ऊँचे भाग्य हों तभी हम उसकी बड़ाई कर सकते हैं। परमात्मा के दरबार में उनके मुख सुंदर हो जाते हैं और उनके चेहरे पर शब्द का नूर चमकता है।

सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ॥

परमात्मा सबको अपना बनाता है। जो उसकी भक्ति नहीं करता, बेशक वह बाहर से लोगों को कितना भी महात्मा बनकर दिखाए, परमात्मा के दरबार में उसको अलग करके निकाल दिया जाता है।

कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हमें लोगों की चिन्ता क्यों लगी हुई है? हमें अपनी चिन्ता करनी चाहिए क्योंकि हमें अपना किया हुआ खुद ही भुगतना है। जो कोई भी अच्छा या बुरा करता है अपने लिए ही करता है।

एक महात्मा हमेशा उतना ही अन्न माँगकर लाता था जितना वह खा सकता था। उसने एक गांव में जाकर यह आवाज लगाईः

कर भला, हो भला, अन्त भले का भला।
जिसने नहीं किया वो करके देखे।
पा माई रब के लेखे॥

जब उस महात्मा ने यह शब्द कहा तो एक माता ने व्यंग्य कसा कि इन लोगों ने माँगने के लिए कितने ढोंग बनाए हुए हैं! मैं इसे फुल्कों में जहर डालकर देती हूँ और देखती हूँ कि मेरा क्या होता है? हम आमतौर पर देखते हैं कि दान-पुण्य करने वाले और नाम जपने वाले भी दुःखी नज़र आते हैं। ऐसे लोग अपने कर्मों का भुगतान कर रहे होते हैं। कई बार बुरे कर्म करने वाले भी सुखी नज़र आते हैं लेकिन हम इस राज़ को नहीं समझते कि वे क्यों दुःखी हैं और ये क्यों सुखी हैं। बल्कि हम अभाव ले आते हैं।

माता ने महात्मा को चार फुल्कों में जहर डालकर दे दिया। महात्मा उस माता के दिए हुए चारों फुल्कों को कुटिया में रखकर नहाने चले गए। जब महात्मा नहाकर आए तो उनके पास चार आदमी आए जो उस बूढ़ी माता के ही बेटे थे। उन्होंने महात्मा से कहा, ''हम बहुत भूखे हैं। हमें कुछ खाने के लिए दो।'' महात्मा बहुत दयावान थे। उन्होंने कहा कि आप ये चारों फुल्के ले लो और एक एक खा लो। मैं अपने लिए कहीं और से माँग लाऊँगा। उन चारों ने एक एक फुल्का खा लिया। जब वे घर वापिस आने लगे तो जहर ने असर करना शुरू कर दिया।

वे घर आकर बेहोश हो गए। उनकी माता ने पूछा, ''तुमने क्या खाया था?'' वे बोले कि हमें बहुत भूख लगी थी। हम एक महात्मा के पास गए थे। उन्होंने हमें खाने के लिए चार फुल्के दिए। उन फुल्कों को खाने के बाद से ही हमें धरती काली पीली नजर आ रही है। यह सुनते ही वह माता रोने लगी कि उन फुल्कों में तो जहर मैंने ही मिलाया था। फिर उस माता को

समझ आई कि जो किसी के साथ बुराई करता है वही बुराई उसके सामने आती है।

जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''जब किसी को हमेशा इस संसार में रहना ही नहीं, तो हम किस चीज़ का अंहकार करते हैं? जो पैदा हुआ है उसे एक दिन जरूर संसार को छोड़ जाना है। हर किसी की मौत की बारी आती है।''

मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ॥
मूरखै नालि न लुझीऐ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ॥

आप कहते हैं कि सबके अंदर परमात्मा बसता है। किसी को बुरा क्यों कहें? परमात्मा ने सबको पैदा किया है। जो लोग शब्द-नाम का अभ्यास नहीं करते, परमात्मा की भक्ति नहीं करते; हमें भूल से भी उनके साथ झगड़ा नहीं करना चाहिए। हम उनके साथ झगड़ा करने में जो समय बरबाद करते हैं, हमें उस समय को 'शब्द-नाम' की कमाई में लगाना चाहिए।

❁❁❁

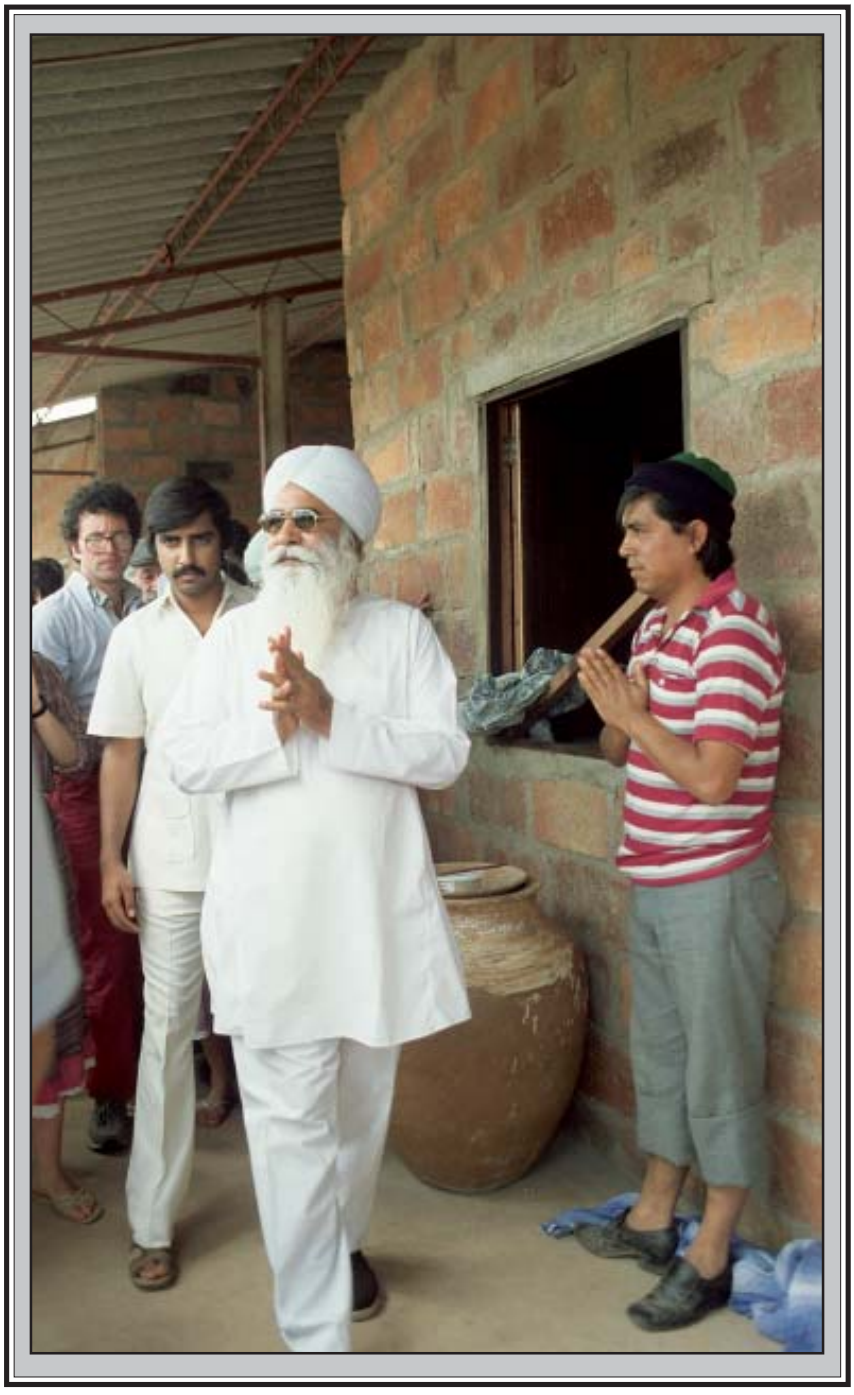

अठारह

धरती पर स्वर्ग

एक बार गुरु नानकदेव जी कहीं जा रहे थे। उन्होंने देखा, एक आदमी किसी के साथ फीका बर्ताव कर रहा था। गुरु नानकदेव जी महाराज उसे प्यार से समझाते हैं कि देख प्यारे आ! फीका बोलने से फीके हो जाते हैं। फीका बोलने से अपना दिल दुखता है, जिसके लिए फीका बोलते हैं उसका दिल भी दुखता है।

एक बाप-बेटा बाजार में गए, वहाँ एक आदमी किसी को गालियाँ निकाल रहा था। बाप समझदार था, उसने गालियाँ निकालने वाले की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। लेकिन बच्चा छोटा था। उसका ध्यान उस तरफ चला गया और उसने अपने पिता से कहा, ''पिताजी! वह आदमी बिना किसी बात के ही गालियाँ निकाल रहा है।'' पिता ने कहा, ''बेटा! हर व्यक्ति दुनिया के इस बाजार में अपना-अपना सौदा बेचने के लिए आता है। तुझे इससे क्या लेना है?'' रूखा बोलने वाले व्यक्ति की तरफ कोई भी ध्यान नहीं दे रहा था, क्योंकि उसके वचन कड़वे और फीके थे। कबीर साहब कहते हैं:

बोली ता अनमोल है जे बोलन जाणें कोए।

बोली में बहुत खिंचाव होता है। अगर हम मीठा बोलते हैं तो दुश्मन को भी मित्र बना लेते हैं। अगर कड़वा बोलते हैं तो मित्र को भी दुश्मन बना लेते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं:

फीका बोल बगूचना सुन, मूर्ख मन अंजान।
जिस बोलया दरगाह पत्त पवे, सो बोलया परवान॥

मन को कहते हैं कि तू मूर्ख है! फीका बोलकर दुखी होता है। परमात्मा को वही भाता है जिसे बोलने से दरगाह में आबरू बने।

यह ठंडे दिल से सोचने वाली बात है कि हमारे घरों में जो मसले खड़े होते हैं, ये ज्यादातर समझकर न बोलने की वजह से ही होते हैं। फीका बोलने से पति-पत्नी की आपस में नहीं बनती, बाप-बेटे की नहीं बनती।

एक पति-पत्नी रोज आपस में लड़ते-झगड़ते थे। पति को यह अहंकार था कि मैं भक्ति करता हूँ। पत्नी को अहंकार था कि मैं भक्ति करती हूँ। पत्नी ने कहा, ''तेरे पास बहुत से लोग भक्ति भाव की बातें सुनने के लिए आते हैं, तू उन्हें रोज वही बातें सुनाता है कि नाम जपो, भजन करो और बुरे कर्म छोड़ो। क्या किसी पर तेरी बातों का असर हुआ?''

पत्नी ने कहा, ''जो भक्ति मैं करती हूँ तू देखना! उसका असर कितनी जल्दी होता है।'' पति बाहर कारोबार करने चला गया कि मैं वापिस आकर प्रेमियों को भजन भाव के बारे में समझाऊंगा। प्रेमियों ने उसके घर आकर पूछा कि भगत जी कहाँ हैं? पत्नी ने मौके का फायदा उठाते हुए उनसे कहा, ''मैं तुम्हें क्या बताऊं? उनके दिमाग में नुख्स पड़ गया है। जो कोई आता है, उसे रस्सी से बाँधकर छड़ी से पीटते हैं। अगर आप उनके आने से पहले ही चले जायें तो आपके लिए यही अच्छा होगा।'' यह सुनकर प्रेमी बेचारे डर की वजह से भाग गए।

थोड़ी देर बाद भगत जी घर आए। उन्होंने अपनी पत्नी से पूछा, ''प्रेमी नहीं आए?'' पत्नी ने जवाब दिया, ''आए तो थे लेकिन नाराज होकर चले गए।'' पति ने पूछा, ''क्यों?'' पत्नी ने कहा, ''वे मुझसे रस्सी और छड़ी माँग रहे थे।'' पति ने

कहा, ''तू उन्हें दे देती।'' पत्नी ने कहा, ''मैं आपकी आज्ञा के बिना एक कदम भी नहीं रखती। अगर आप मुझे कह जाते तो मैं दे देती।'' भगत जी रस्सी और छड़ी पकड़कर कहने लगे, ''जल्दी से बता वे किस तरफ गए हैं?'' पत्नी ने हाथ उस तरफ करके बताया कि प्रेमी उस तरफ गए हैं।

भगत जी रस्सी और छड़ी लेकर उसी तरफ भागे। जब प्रेमियों ने भगत जी के हाथ में रस्सी और छड़ी देखी, तो वे और तेजी से भागने लगे। भगत जी बहुत तगड़े थे। उन्होंने प्रेमियों के पास पहुँचकर कहा, ''आप रुककर मेरी बात तो सुनो!'' प्रेमियों ने कहा भ्रावा! आपकी बात न सुननी ही अच्छी हैं, आखिर वे रुक गए। भगत जी ने उनसे पूछा, ''आप लोग भाग क्यों रहे हो? मैं तो आप लोगों का आदर-सत्कार करता हूँ। आप जितने पैर चलकर मेरे घर की तरफ आए हो मैं उन्हें अपने सिर पर रखता हूँ। आपको ये रस्सी और छड़ी चाहिए? ये ले लो।'' प्रेमियों ने कहा, कि आपकी पत्नी ने बताया कि आपके दिमाग में नुख्स हो गया है। जो भी आपके पास आता है, आप उसे रस्सी से बाँधकर छड़ी से पीटते हैं। इसलिए हम डर के मारे आपके घर से भागे थे।

सन्त कहते हैं, अगर पति-पत्नी मिलकर चलें तो उनका घर तरक्की करता है और वे परमार्थ में भी तरक्की करते हैं। अलग-अलग विचारों के पति पत्नी कामयाब नहीं हो सकते। नहीं तो इसी तरह होता है जैसा कौतुक उस पत्नी ने दिखाया।

सन्त-महात्मा हमें बहुत प्यार से बताते हैं कि घर के अंदर शान्ति बनाओ। गृहस्थ में हम तभी शान्ति बना सकते हैं, जब हम एक-दूसरे की गलतियों को माफ करें, भूल जाएं। अगर हम मामूली बातों से एक दूसरे में नुक्ता-चीनी करते हैं तो

खटपट हो जाती है। जिस घर में खटपट है, वहाँ शान्ति कैसे हो सकती है। फिर न तो उनकी दुनियादारी होती है और न ही वे भजन-अभ्यास में तरक्की कर सकते हैं।

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ॥
फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''फीका बोलने से तन और मन फीका हो जाता है। फीका बोलने से हमारी शोभा भी फीकी पड़ जाती है। सारी दुनिया कहती है कि यह बड़बोला है।''

फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ॥

आप कहते हैं कि फीका बोलने वाले को परमात्मा दरगाह में मंजूर नहीं करता। वहाँ यमदूत उसे लानतें देते हैं और उसके मुँह पर थूकते हैं। फीका बोलने वाला संसार में किसी जगह भी शोभा नहीं पाता। लोग कहते हैं कि इसकी किसी के साथ नहीं बनती।

बाबा बिशन दास जी अपनी आँखों देखा एक वाकया बताया करते थे। आप कहीं जा रहे थे। आपने किसी घर से एक आदमी को निकलते हुए देखा, जो तेजी से चला जा रहा था। उसके पल्ले में जो वस्तु थी, उसमें से पानी बह रहा था। आपने उससे पूछा कि तेरे कपड़े में से क्या बह रहा है? उसने जवाब दिया, ''मैं आपको क्या बताऊँ! इसमें मेरी जुबान का रस है।''

मैं व्यापार करने आया था। आटा मेरे पास था। (उन दिनों हिन्दुस्तान में ज्यादा होटलों वगैरह का इंतजाम नहीं था) मैं एक औरत के घर गया और उससे कहा कि मेरे आटे से खाना तैयार कर दे। उस औरत ने कहा, ''भाई! तू बैठ। मैं खाना तैयार कर देती हूँ।'' वह मेरा खाना तैयार करने लगी। मन कोई न कोई शरारत करता है। मैंने देखा कि इस घर का दरवाजा

बहुत छोटा है; भैंस अंदर तो आ जाती है अगर ये भैंस मर जाए तो बाहर कैसे निकलेगी? मैंने पूछा माता! तेरे घर का दरवाजा बहुत छोटा है अगर तेरी भैंस मर जाए तो ये बाहर कैसे निकलेगी? उस औरत ने सोचा कि यह आदमी तो बहुत बुरा है। मैं जल्दी से इसे खाना बनाकर दूँ ताकि यह यहाँ से चला जाए।

मेरे दिल में ख्याल आया, मैंने उससे पूछा, ''माता! तेरे कितने लड़के हैं?'' माता ने कहा, ''एक लड़का है।'' मैंने पूछा, ''वह लड़का कहाँ है?'' माता ने कहा, ''वह लड़का नौकरी पर गया है।'' मैंने कहा, ''अगर वह वहाँ मर जाए, फिर तू क्या करेगी?'' माता ने कहा, ''भाई! तू अच्छी बात बोल। कहीं तू पागल तो नहीं?'' माता ने सोचा कि मैं इसका खाना बनाने के लिए हाँ कर चुकी हूँ। जल्दी से इसे खाना देकर यहाँ से भेजूँ।

फिर मैंने माता से पूछा, ''तेरा पति कहाँ है?'' माता ने कहा, ''वह नौकरी करने गया है।'' मैंने कहा, ''अगर वह भी मर जाए तो तू क्या करेगी?'' मेरे इतना कहने पर उस माता ने आधे गुँथे आटे को, जिसमें पानी डाल रखा था, वैसे ही मेरे पल्ले में बाँधकर, मुझे थप्पड़ मारकर अपने घर से निकाल दिया।

जो आदमी अपने घर से व्यापार करने निकला हो, वह समझदार ही होगा, लेकिन जुबान में रस न होने के कारण उसने माता का और अपना भी दिल दुखाया।

फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाए॥

आप कहते हैं कि फीका बोलने वाले को लोग मूर्ख कहते हैं। ऐसा इन्सान कभी-कभी जूतों की मार भी खा लेता है।

अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु॥

अब गुरु नानकदेव जी महाराज उन लोगों का जिक्र करते

हैं जो अंदर से झूठे हैं लेकिन बाहर लोगों को भला बनकर दिखाते हैं। पार्टियों के जरिए अपनी शोभा बनाए हुए हैं। लेकिन गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हम अपने आपको धोखा दे सकते हैं। दुनिया को भी धोखा दे सकते हैं, लेकिन अंदर बैठा परमात्मा किसी के धोखे में नहीं आता। वह अंदर बैठा सब कुछ देख रहा है। जो जैसी चाकरी करता है, वह उसे वैसी ही मजदूरी देता है।''

अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु॥

हिन्दुस्तान में अढ़सठ तीर्थों की बहुत महानता है। आमतौर पर जब लोगों के पास थोड़ा बहुत पैसा जमा हो जाता है तो वे तीर्थों पर स्नान करने के लिए जाते हैं। वे सोचते हैं कि तीर्थों पर नहाने से हमारे पाप उतर जाएंगे।

जब गुरु नानक साहब ने यह आवाज उठाई कि पानी सिर्फ बदन की मैल उतार सकता है। आत्मा की मैल तो 'नाम' से उतरती है। उस समय लोगों ने आपका विरोध किया। आपको कुराहिया कहा। एक बार लोगों ने आपके आगे तीर्थों की महिमा गाई और आपसे कहा कि आपको भी तीर्थों पर ले चलते हैं।

सन्तों की हर बात में राज़ होता है। आप उनके साथ नहीं गए, आपने अपने खेत में से एक कड़वी तुम्बी तोड़कर उन्हें दे दी। उनसे कहा, ''मेरे पास समय नहीं है आप मेरी इस तुम्बी को स्नान करवा लाना।'' जब वे लोग वापिस आए तो आपने उसी तुम्बी की सब्जी बनाकर उन्हें खिलाई। उस सब्जी को खाकर सबने थूक दिया कि यह बहुत कड़वी है।

आपने उन लोगों से पूछा, ''क्या आपने इस तुम्बी को स्नान नहीं करवाया?'' उन लोगों ने कहा कि हम पहले इस तुम्बी को स्नान करवाते थे फिर खुद स्नान करते थे। आपने उन्हें समझाया कि इस तुम्बी के अंदर गुद्दे और बीजों का जहर

है। जिस तरह बाहर से धोने से इसकी कड़वाहट नहीं गई, उसी तरह यह देह भी एक तुम्बड़ी है, जिसके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की जहर है। यह नहाने से कैसे जा सकती है? इसलिए आप कहते हैं अगर आपको पापों की मैल उतारनी है और आत्मा को निर्मल करना है तो 'नाम' की कमाई करो, अंदर जाओ।

न्हावंण चले तीर्थी, मन खोटे तन चोर।
इक भौं लत्थी न्हात्यां, दो भा चढ़ियस होर॥
बाहरो धोती तुम्बड़ी, अंदर विष नकोर।
साध भले अणन्हात्यां, चोर से चोरा चोर॥

कबीर साहब कहते हैं कि तीर्थों पर नहाने से मुक्ति नहीं होती। चाहे आप तीर्थों पर अपना घर बना लो, रोज वहाँ का पानी पीना शुरू कर दो, तब भी नाम के बिना मुक्ति नहीं। आप कहते हैं:

गंगा तीर्थ जे घर करे, पीवे निर्मल नीर।
बिन हर भक्त न मुक्त होय, एयो कथ रहे कबीर॥

कबीर साहब तो यह भी कहते हैं कि उस पानी के ऊपर कितने छोटे-बड़े जीव हैं जो वहीं खाते-पीते हैं! जब वे मुक्त नहीं हुए तो इन्सान कैसे मुक्त हो सकता है?

तीर्थ न्हात्यां जे गत होवे नित नित मेंढक न्हावे।
जैसे मेढ़क तैसे ओ नर फिर फिर योनि आवे॥

जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि॥

संसार में और परमात्मा के दरबार में वही शोभा पाते हैं जिनका दिल अंदर से साफ है चाहे वे दुनिया में कम ही बोलते हैं।

तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि॥

ऐसे मालिक के प्यारों का परमात्मा के साथ मिलाप हो चुका होता है। वे दिखावे की भक्ति और दिखावे का आडम्बर नहीं रचते। कबीर साहब कहते हैं:

सोइ अजान कहे मैं जाना जानणहार न छाना रे।

वह अनजान है जो यह कहता है कि मैंने परमात्मा को पा लिया है। जो परमात्मा को पा लेता है वह दुनिया में छिपा नहीं रहता।

रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि॥

आप कहते हैं, ''ऐसा महात्मा, मालिक की मौज में हँसता है, मालिक की मौज में रोता है और मालिक की मौज में ही चुप करके बैठ जाता है।''

परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह॥

ऐसा महात्मा परमात्मा को पाकर दुनिया का सेवक नहीं रहता। उसके अंदर 'नाम' प्रगट हो जाता है। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से नहीं डरता।

दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि॥

ऐसा महात्मा मालिक के दरवाजे पर जाकर दुनिया का सामान, धन दौलत या मान-बड़ाई नहीं माँगता। वह भक्ति रूपी खर्च माँगता है। परमात्मा का दीदार माँगता है।

दीबानु एको कलम ऐका हमा तुम्हा मेलु॥
दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु॥

ऐसा महात्मा जानता है कि परमात्मा के दरबार में परमात्मा का ही हुक्म चलता है। लेकिन हम दुनियादार लोग परमात्मा को छोड़कर दुनिया और बाल-बच्चों के साथ मोहब्बत करते हैं।

वह खुद लेखा लेता है। हम जैसा कर्म कमाकर जाते हैं हमें उन कर्मों के अनुसार इस तरह की पीड़ा होती है जिस तरह कोल्हू में से तेल निकालते हुए तिलों को पीड़ा होती है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

कर्म करीम न जानो करता, तिल पीड़े ज्यों घाणियां।

आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ॥

महात्मा, परमात्मा की महिमा गाते हैं कि यह संसार तूने खुद ही रचा है। तू खुद ही अपनी शक्ति से इस संसार को चला रहा है।

देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ॥

अब गुरु नानकदेव जी महाराज परमात्मा से कहते हैं, ''तू खुद देखता है कि कौन सी फसल तैयार है और कौन सी नहीं। किसे कब ले जाना है और कब भेजना है।''

जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ॥

अब आप कहते हैं, ''हे परमात्मा! इस संसार में सदा किसी ने नहीं रहना। हम बारी आने पर संसार में आते हैं और बारी आने पर ही वापिस चले जाते हैं।''

जो उपज्या सो बिनस है, परयो आज के काल।
नानक हर गुण गायले, छाड़ सगल जंजाल॥
राम गयो रावण गयो, जाको बहु परिवार।
कहो नानक थिर कुछ नहीं, सुपने ज्यों संसार॥

फरीद साहब ने कहा थाः

खिन्थड़ मेखा अगलियां, जिन्द न काई मेख।
वारी आपो आपणी, चले मसायक शेख॥

आप कहते हैं कि दुनिया की चीजें टूट जाती हैं , कपड़े फट जाते हैं तो हम उनकी मरम्मत कर लेते हैं । लेकिन जिंदगी की कोई मरम्मत नहीं कर सकता। बेशक कोई कितना ही ऊँचा फकीर या साधु था, जति या सिद्ध पुरुष था, वह भी अपनी बारी आने पर चला जाता है ।

जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥

जिस परमात्मा ने हमें आत्मा, शरीर और अच्छा खाने को दिया है । हम आलसी होकर उस परमात्मा की भक्ति नहीं करते । उसे मन से क्यों बिसार रहे हैं ?

आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥

अब आप कहते हैं कि आज का काम कल पर मत छोड़ो । बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे कि सतसंगी की भी कुछ जिम्मेवारी होती है। भजन करना, तीसरे तिल तक पहुँचना, सतसंगी का काम है । आगे सतगुरु की ड्यूटी है; वह अपनी ड्यूटी जरूर पूरी करता है ।

हमें अपने जीवनकाल में ही अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों परदे उतारकर अंदर शब्द गुरु को प्रगट करना है । गुरु अपनी ड्यूटी में कभी कोताही नहीं बरतता, अपने वचन को निभाता है ।

❁❁❁

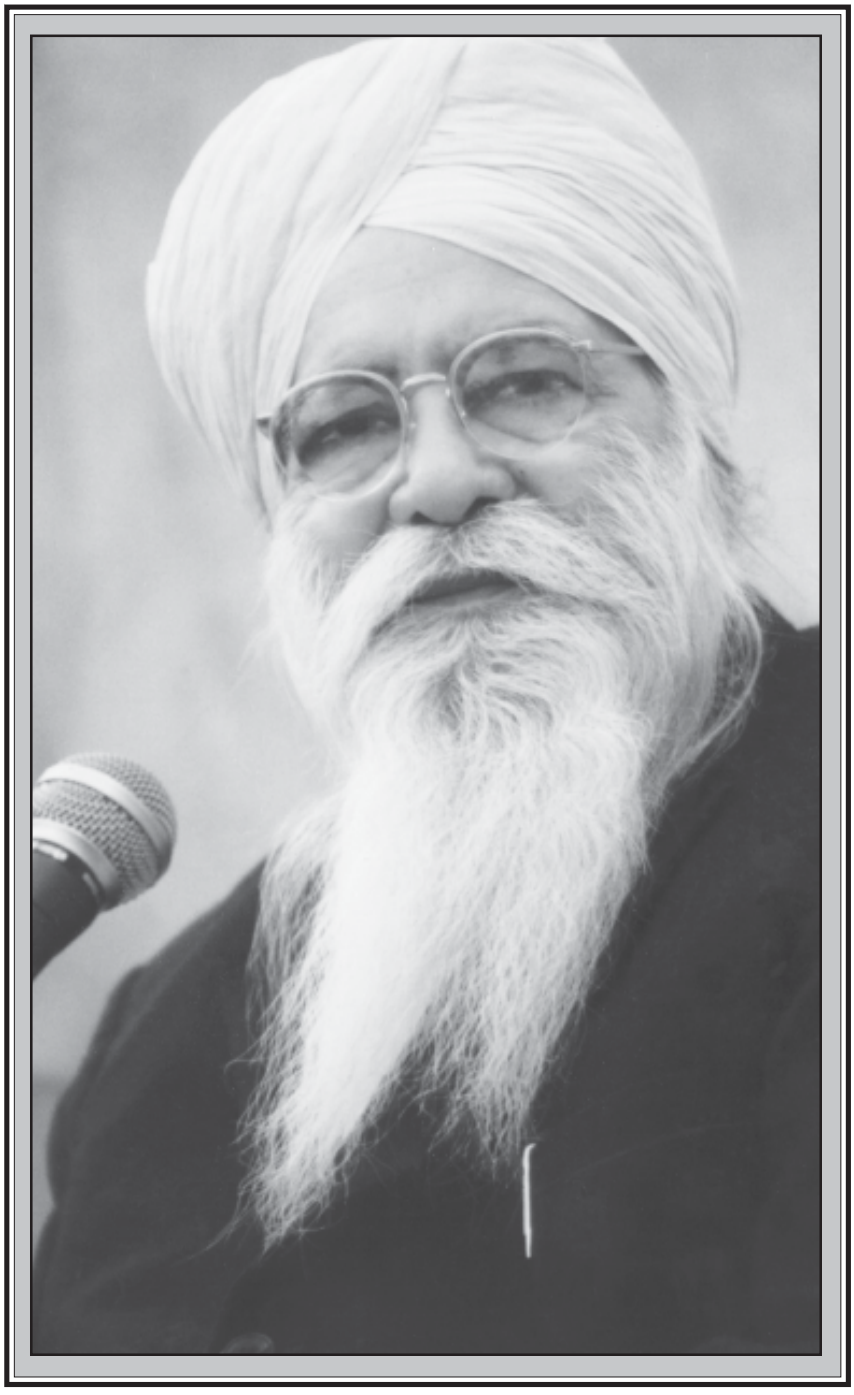

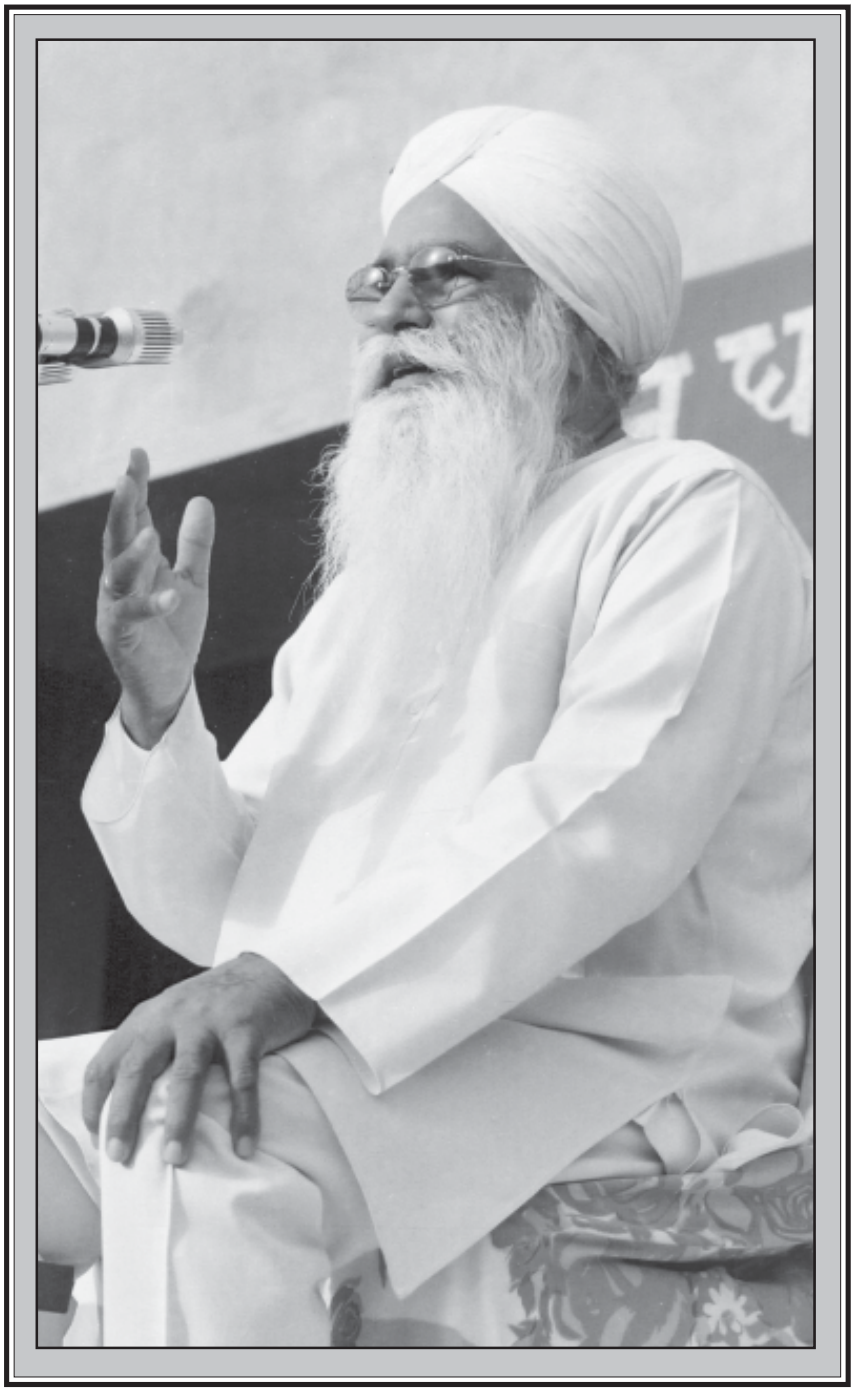

उन्नीस

सच्चे आशिक

सन्त सदा ही प्यार से समझाते हैं कि प्यारेओ! अपना जीवन कुदरत के नियमों के मुताबिक ढालो। अगर 'नाम' मिल गया है, कमाई करते हैं और अंदर कुछ तरक्की हो जाती है तो दुनिया में उसका दिखावा मत करो कि 'मैं कुछ हूँ।' क्योंकि 'मैं कुछ हूँ' कहने वाले सदा ही दुनिया से पछताते हुए गए।

प्यार के महल में खामोश रहकर ही वक्त गुजारना पड़ता है। पता नहीं हमसे कितनी अच्छी सखी-सहेलियां उस परमात्मा की निगाह में बैठी हैं। शायद हम उनकी गिनती में ही न आ सकते हों! अगर हम भी वैसा ही दिल बनाएं, तभी उन सहेलियों की गिनती में आ सकते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैंः

ईक दू ईक चढ़ें दियां कोण जाणें मेरा नाओ जिओ।

वे सतसंगी नहीं, प्रेमी नहीं, **सच्चे आशिक** नहीं, जो शब्द-गुरु परमात्मा के साथ लेखा-जोखा करते हैं। अगर जिंदगी में कोई सुख का समय आया तो हम उसकी वाह-वाह करने लगे। दुःख का समय आया तो हम उसे दोष देने लगे। इसका नाम प्रेम नहीं। यह मतलब का प्यार है।

आशिक पूरी होश में रहते हैं। ये भंग या शराब पीने वालों की तरह बेकार की बातें नहीं करते। **सच्चे आशिक** नाम के रंग में रंगे होते हैं। उन्हें 'नाम' की मस्ती में सब कुछ पता होता है कि किस तरह अपने प्यारे के हुक्म में रहना है।

गुरु को चाहने वाला, परमात्मा को चाहने वाला शब्द-गुरु

का आशिक राज्य नहीं चाहता, मुक्ति नहीं चाहता। सिर्फ अपने प्रीतम प्यारे गुरु का दीदार ही चाहता है।

उसकी जिंदगी की वही दुःखदायी घड़ी होती है जब उसका गुरु शारीरिक रूप से उसकी आँखों से ओझल हो जाता है। उससे यह दुःख झेला नहीं जाता। शिष्य की हालत उस चकवी जैसी होती है जो सूरज निकलते ही सूरज की तरफ टकटकी लगाकर बैठ जाती है, आँख नहीं झपकती। सूरज छिप जाने पर वह सारी रात परेशान रहती है। शिष्य कहता हैः

जिस प्यारे स्यों नेह, तिस अग्गे मर चलिए।
धिग जीवन संसार, ताके पाछे जीवणां॥

अच्छा होता कि मैं गुरु के जाने से पहले ही यह संसार छोड़ देता। गुरु के बाद के श्वास हराम हैं।

जो लोग भजन-सिमरन या आशिकी सिर्फ दुनियावी मतलब के लिए करते हैं, वे **सच्चे आशिक** नहीं कहलवा सकते। वे आशिक नहीं, चमचे होते हैं। गुरु नानकदेव जी ने कहा थाः

बिन तुध होर जे मंगणा, सिर दुःखा दे दुःख।

हम नहीं जानते कि 'नाम' के बिना हम दुनिया के जो सामान माँगते हैं, उनसे हमें कितना दुःख मिलेगा और हम कितने परेशान होंगे?

मेरी जिंदगी तजुर्बे से गुजरी है। जो सन्त, पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड में गए जिन्होंने मालिक के साथ मिलाप किया उनकी जिंदगी के अच्छे तजुर्बे होते हैं। मैं बाबा बिशनदास जी के दिए हुए 'दो शब्द' के मुताबिक काफी समय निचले मंडलों का अभ्यास करता रहा हूँ। उन्होंने दया करके मुझे प्रेक्टिकल करवाया हुआ था। निचले मंडलों में हम ऋद्धियों-सिद्धियों से काम लेते हैं।

मान-बड़ाई में होते हैं कि लोग हमारी वाह-वाह करें। लेकिन इससे हमारी आत्मा को कोई फायदा नहीं होता।

सच्चाई तो यह है कि यह एक किस्म की पूँजी होती है। जिस तरह पिता अपने बेटे को थोड़ी सी पूँजी देकर व्यापार करने के लिए कहता है। अगर बेटा उस पूँजी को जुए में हार दे तो फिर पिता की मर्जी है कि उसे और पूँजी दे या न दे! इसी तरह हम दुनिया की मान-बड़ाई में उस थोड़ी सी पूँजी को खत्म कर बैठते हैं। फिर पछताते हैं कि हमारी ताकत खत्म हो गई।

मैं कई सालों से मुम्बई जा रहा हूँ। वहाँ एक आदमी अपनी साधना के मुताबिक थोड़ी बहुत ऋद्धि-सिद्धि रखता था। मेरा एक सतसंगी मुझे उसकी ऋद्धि-सिद्धि के बारे में बताता। मैं उसकी बात सुनकर हँस देता और कहता, ''वक्त आने पर तुझे भी और उसे भी पता चल जाएगा।''

जब मैं इस बार मुम्बई गया, वह आदमी अपना सारा कारोबार छोड़कर मुझसे मिलने आया। उसने एक जुआरी की तरह अपने दोनों हाथ झाड़कर कहा, ''अब मेरे पल्ले कुछ नहीं है। मैं जिन लोगों के लिए थोड़ा बहुत करता था, वे अब मुझसे नाराज हो गए हैं और कहते हैं कि मैं लालची हो गया हूँ।'' मैंने उसे समझाया प्यारेआ! मैंने तेरी बहुत करामातें सुनी थीं। तू खुद सोच सकता है कि जब तेरे पास इतनी ही पूँजी थी तो तू किसी महात्मा से 'नाम' लेता और तरक्की करता।

उसने मुझे बताया कि मैं आपके गुरुदेव बाबा कृपाल सिंह जी के पास गया था। उन्होंने मुझसे कहा था, ''तू तो पूरा बर्तन है।'' यह सुनकर मैं हँस पड़ा। मैंने कहा कि बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त बड़े समझदार होते हैं। उनके पास जिस मर्ज का मरीज आता है, वह उसे उसी मर्ज की पुड़िया दे

देते हैं।'' तू उनके पास मान-बड़ाई लेकर गया था। उन्होंने तुझे मान-बड़ाई देकर तेरी भूख दूर कर दी।

जब गुरु अंगददेव जी गोईन्दवाल में रह रहे थे, उनके नजदीक इसी तरह का एक ऋद्धियों-सिद्धियों वाला रहता था। वह लोगों को अपनी ऋद्धियां-सिद्धियां दिखाता था। लोग उसे परमात्मा का आशिक मानते थे। हम लोगों में विवेक-बुद्धि नहीं होती। हम सच और झूठ का निर्णय नहीं कर सकते। सन्त और असन्त को भी नहीं पहचान सकते। जब वह आदमी गुरु अंगददेव जी के पास गया तो आपने उससे कहा, ''यह कौन सी आशिकी है कि तू रब को छोड़कर ऋद्धियों-सिद्धिओं में लगा हुआ है?''

एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ॥
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ॥

गुरु साहब कहते हैं, ''**सच्चे आशिक** वही हैं जो सोते-जागते, उठते-बैठते सदा ही 'शब्द-गुरु' में समाए रहते हैं।''

चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ॥
आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ॥

अब गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं, ''अगर हमें अच्छे कर्मों की वजह से सुख मिलता है तो हम गुरु परमात्मा से प्यार करते हैं। अगर हमारे बुरे कर्मों की वजह से कोई कष्ट आता है तो हम परमात्मा में नुख्स निकालते हैं। उसे दोष देते हैं।''

जो लोग भक्ति मार्ग में आकर नाम की कमाई करते हुए ऐसा लेखा-जोखा करते हैं वे **सच्चे आशिक** नहीं कहलवा सकते।

सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ॥

जो सेवक कुछ अच्छा होने पर गुरु को नमस्कार करता है। कुछ बुरा होने पर गुरु में नुख्स निकालता है, मालिक के दरबार में उसके नमस्कार और उसके नुख्स परवान नहीं होते।

गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं, ''ऐसे सेवक मुढ* से ही भूले हुए हैं; वे **सच्चे आशिक** नहीं हैं।''

जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ॥

गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा की भक्ति करने से सुख-शान्ति मिलती है। वापिस अपने घर सच्चखंड जाने का मौका मिलता है। हमें उस परमात्मा की भक्ति सदा ही दिल लगाकर प्यार से करनी चाहिए।

जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ॥

जब हमें अपना किया हुआ खुद ही भुगतना है तो हमें बुरे कर्म नहीं करने चाहिए। अच्छी कमाई करनी चाहिए।

मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ॥

आप कहते हैं कि बुरे कर्म करते समय आप दूर तक नजर मारकर देखो! कि यह कर्म हमने खुद ही भुगतने हैं।

जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ॥
किछु लाहे उपरि घालिए॥ किछु लाहे उपरि घालीऐ॥

हमें जिंदगी में वही काम करना चाहिए जिससे परमात्मा के दरबार में हमारी इज्ज़त हो।

❁❁❁

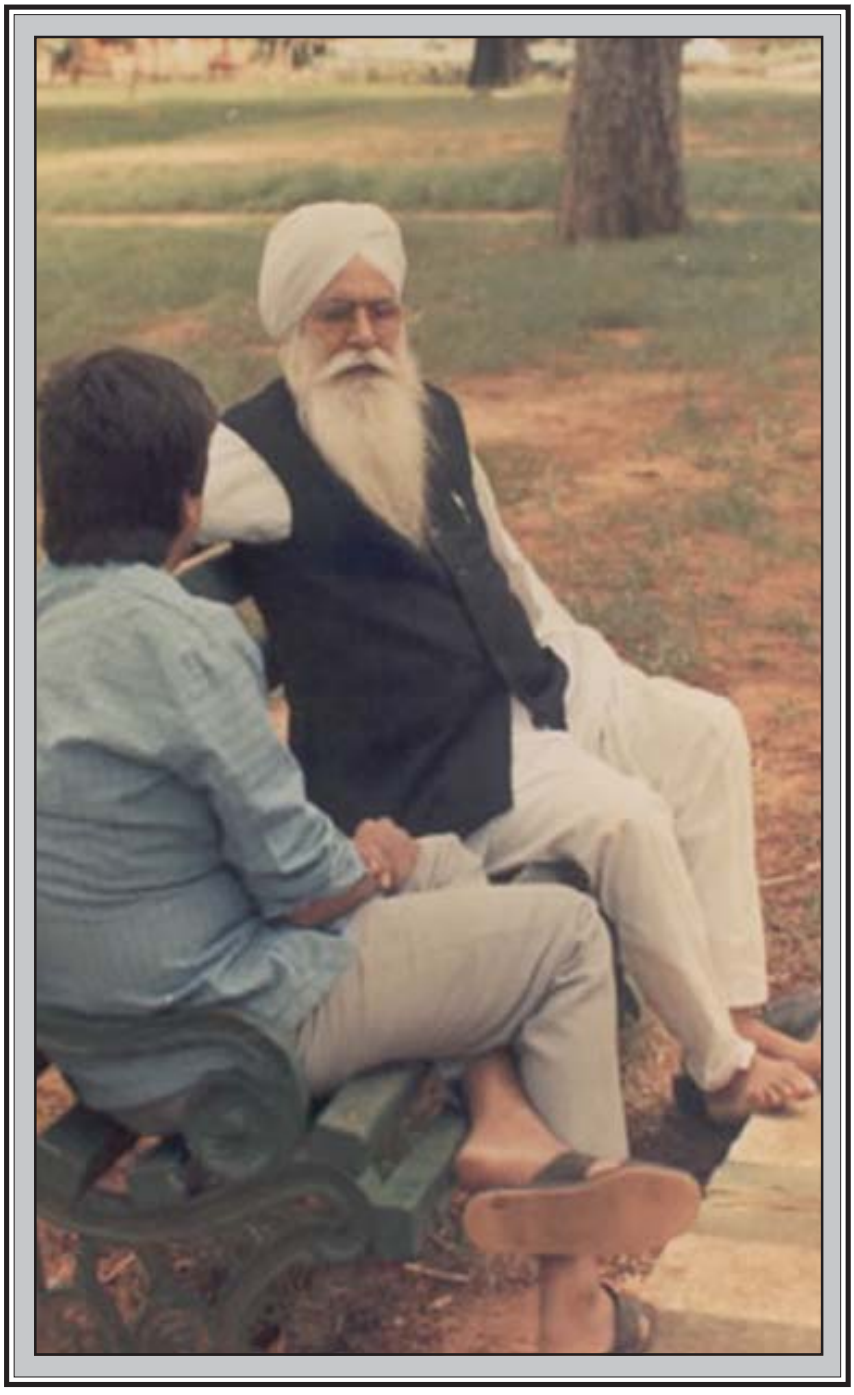

बीस

गुरुमत की समझ

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु॥

यह बानी श्री आसा जी दी वार में गुरु अंगददेव जी महाराज की है। गुरु अंगददेव जी के पास एक गुरुमुख प्रेमी ने आकर कहा कि क्या कोई ऐसा शिष्य है जो परमात्मा के भाणे को सही अर्थों में मानता हो? सब कुछ जानता हो कि क्या हो रहा है और क्या होने वाला है?

गुरु अंगददेव जी ने कहा कि गुजरात में हमारा एक सेवक भाई बुखारी है; तू उसके पास चला जा। गुरुमुख प्रेमी भाई बुखारी का पता पूछकर उसके घर पहुँचा। उस समय भाई बुखारी टाट का तप्पड़ सिल रहा था। प्रेमी उससे राम-राम बोलकर वहीं बैठ गया। भाई बुखारी तप्पड़ की सिलाई में मस्त रहा। जब उसने तप्पड़ सिल लिया तो प्रेमी से पूछा, ''हाँ भाई! कैसे आना हुआ? इस गरीब की कुटिया में आने का धन्यवाद!''

गुरुमुख प्रेमी ने कहा, ''मैं आपके दर्शनों के लिए आया हूँ।'' भाई बुखारी ने बताया कि मेरे लड़के की शादी है। ये मिठाइयां और शादी के कपड़े हैं। ये गहने हैं जो आने वाली लड़की को पहनाने हैं। सब कुछ दिखाने के बाद भाई बुखारी ने लकड़ी का फट्टा और सफेद कपड़ा दिखाकर कहा कि मेरा लड़का बहुत जल्दी गुजर जाएगा। उसे इस फट्टे पर डालकर ले जाना है।

गुरुमुख प्रेमी ने सोचा कि जब इसे सब कुछ मालूम है तो यह लड़के की शादी ही क्यों कर रहा है? इस राज़ को देखा

जाए कि कहाँ तक सच है! क्योंकि जो खुद बेविश्वासे होते हैं, वे दूसरों पर भी विश्वास नहीं करते।

समय आने पर बारात गई। लड़की वालों ने लड़की विदा की। हिन्दुस्तान में शादी का जो रिवाज है वह सब हुआ। जब घर आए तो एक दो दिन के बाद लड़के ने शरीर छोड़ दिया। लकड़ी का फट्टा और कफन तो पहले से ही तैयार था। उस लड़के का संस्कार कर दिया। हिन्दुस्तान में रिवाज है कि संस्कार के बाद घर आकर कपड़ा बिछाकर बैठते हैं; उसने जो टाट का तप्पड़ तैयार किया हुआ था, उसे बिछाकर बैठ गए।

किसी ने कहा, बहुत बुरा हुआ। अभी लड़के की शादी की थी। शादी पर बहुत खर्च हुआ। जवान लड़का था। अगर मालिक ने ले जाना था तो पहले ही ले जाता। सबने अपनी अपनी हमदर्दी की बोलियां बोली, लेकिन भाई बुखारी चुप रहा। गुरुमुख प्रेमी ने भाई बुखारी को एकांत में ले जाकर कहा, ''यह क्या कौतुक है? जब तुझे सब कुछ मालूम था, तूने कफन और नीचे बैठने के लिए तप्पड़ तक तैयार किया हुआ था, फिर यह आडम्बर रचने की क्या जरूरत थी? तू अंदर जाता है। तूने इस वक्त को क्यों नहीं टाला। अगर तू खुद इस वक्त को नहीं टाल सकता था तो अपने गुरु अंगददेव के आगे विनती करता, वह इस वक्त को टाल देते।''

भाई बुखारी ने हँसकर कहा, ''वह शिष्य नहीं, सतसंगी नहीं जो रूहानी कमाई को इन कामों के लिए इस्तेमाल करे या अपने गुरु से कहे कि मेरे इस दुःख को दूर कर। यह सिक्खी नहीं मतलब-परस्ती है। मतलब पूरा होते ही प्यार खत्म हो जाता है।''

आप इस शब्द में बहुत प्यार से समझाते हैं कि वही सेवक है, वही नौकर है, वही चाकर है। जो मालिक का हुक्म मानता

है। अगर वह अहंकार करता है कि मेरे जैसा कौन है? तो वह मालिक की खुशी प्राप्त नहीं कर सकता। यह बातों का मजबून नहीं। हम बातों से परमात्मा को खुश नहीं कर सकते।

सन्त-महात्मा संसार में कुदरत के नियमों के मुताबिक ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। अपने शिष्यों को भी यही हिदायत करते हैं कि अगर आप भक्ति मार्ग में पैर रखना चाहते हैं, तरक्की करना चाहते हैं तो कुदरत के कानूनों के खिलाफ मत चलो।

महाराज सावन सिंह जी सदा ही चेतावनी देते रहे, ''जो लोग सतगुरु से कहते हैं कि हमारा मुकद्दमा फतह कर, हमारे बीमार बच्चे को राजी कर, हमारा यह दुःख दूर कर; ऐसे लोग रुहानियत से क्या फायदा उठाएंगे? उन्हें रुहानियत और **गुरुमत की समझ** ही नहीं। ऐसे लोग अपने घरों में ही बैठे रहें। हम गरीबी-अमीरी, दुःख-सुख, बीमारी-तंदुरुस्ती, ये छह चीज़े किस्मत में लिखवाकर लाए हैं। प्रालब्ध, शरीर की रचना से पहले ही लिखी गई थी।'' तुलसी साहब कहते हैः

पहले बनी प्रालब्ध पाछे बना शरीर।
तुलसी दासा खेल अचरज है पर मन नहीं बंधता धीर॥

बाबा जयमलसिंह जी कहा करते थे, ''बहुत से प्रेमियों को पहले तो गुरु के दर्शन होते रहते हैं। लेकिन बीमारी के दिनों में वे तड़पते हैं, फरियाद करते हैं, उन्हें गुरु के दर्शन नहीं होते। जिसकी वजह यह होती है कि कहीं सेवक गुरु से यह अर्ज न कर दे कि मेरी बीमारी काट दो। कहीं उसका कोई प्रालब्ध कर्म न रह जाए? सन्त नहीं चाहते कि हमारे सेवक को दोबारा इस संसार में हाजिरी लगानी पड़े।''

दुनियावी माता-पिता भी अपने बच्चे को दुःखी नहीं देख सकते। सन्तों के अंदर तो हजारों माता-पिता जैसी हमदर्दी होती

है। सन्त मुनासिब मदद करते रहते हैं। लेकिन हम जीव यह नहीं जानते कि हमें सन्तों से क्या माँगना है?

हमारी जिंदगी में ऐसे वाकयात होते रहते हैं। सेवक अपनी आँखों से भी देखता है कि गुरु ने मेरी मदद की। मेरे पास प्रेमियों के पत्र और तार आते रहते हैं लेकिन सन्त यही कहते हैं, ''मैं अपने गुरु का धन्यवाद करता हूँ यह मदद उसी ने की है।''

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु॥

आप कहते हैं, ''अगर हम अपना आप भूलकर नाम जपें, भजन-सिमरन करें और सेवा करें तो ही परमात्मा की दरगाह में मान मिलता है।''

नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु॥

गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं कि गुरु चाहे हमसे घास खुदवाए, टोकरी उठवाए, लंगर के लिए जल भरवाए, भजन-सिमरन करवाए, वह हमें जो भी सेवा देता है। हमें अपने ऊँचे भाग्य समझकर वह सेवा कर लेनी चाहिए। आप कहते हैंः

सा सेवा कीती सफल है जित सतगुरु का मन मन्ने।

हमारी वही सेवा परवान है जिससे सतगुरु खुश होता है।

जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ॥
बीजे बिखु मंगै अंम्रितु वेखहु एहु निआउ॥

आप प्यार से कहते हैं कि जो मन में होता है वही उगता है। मुँह से निकला हुआ किसी काम नहीं आता। हम कह देते हैं कि हम भजन-सिमरन करते हैं। लेकिन हमने कभी यह लेखा-जोखा किया कि हम जो अभ्यास में एक घंटा बैठे, उस एक घंटे

में हमारे मन ने हमें कितनी बार खुष्क किया? कितनी बार किसी को गालियाँ निकालता रहा या किसी की निन्दा-चुगली करता रहा? अभ्यास से उठकर हम डायरी में लिख देते हैं कि हमने एक घंटा अभ्यास किया। क्या हमने कभी अपने मन की चौकीदारी की?

मैं अपनी जीवनगाथा बताया करता हूँ कि मुझे बचपन से ही आदत थी कि मैं आठ घंटे किसी न किसी लफ्ज़ का जाप किया करता था। मैं जब बाबा बिशनदास जी के पास गया तो उन्होंने कहा, ''क्या कभी अंदर ठहरे?'' मैंने कहा, ''नहीं!'' मैं जब जाप शुरू करता हूँ उस समय का पता है और जब उठता हूँ उस समय दो मिनट पता लगता है। बाकी के समय का पता ही नहीं लगता। लेकिन मुझमें अंहकार था कि मैं इतना जाप करता हूँ।

जो लोग भजन-अभ्यास नहीं करते, वे ही शिकायत करते हैं कि हमारी तरक्की नहीं हुई। जब उनकी बात सुनते हैं तो वे अपनी सब कमजोरियां बता देते हैं। तब उन्हें समझाया जाता है कि प्यारे आ! क्या तू भजन-अभ्यास करता है?

इसलिए आप कहते हैं, ''मुँह का कहा काम नहीं आता। सन्तमत करनी का मजबून है, बातों का नहीं।''

गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं, ''देखो! इसका कैसा न्याय है? यह जहर बीजता है और अमृत माँगता है।'' शेख फरीद कहते हैं कि जाट घर में भेड़ों की ऊन कतवाता है और रेशम का कपड़ा चाहता है। कीकर के बीज बीजता है और बिजौर देश के अंगूर चाहता है। यह सब कैसे हो सकता है?

नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि॥
जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि॥

अब आप कहते हैं कि बच्चे के साथ की हुई दोस्ती रास नहीं आती क्योंकि बच्चे को जितनी समझ है वह हमारे साथ उतना ही चल सकता है।

हमारा मन परमार्थ में एक छोटे बच्चे की तरह है। इस मन के साथ दोस्ती रखने वाला कभी भी कामयाब नहीं हो सकता। अगर मन हमें एक आध अच्छा काम करके दिखा देता है तो पहले के किए हुए अच्छे कामों को भी खराब कर देता है।

वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि॥
साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि॥

शेख चिल्ली जंगल में भजन-अभ्यास किया करता था। एक बार उधर से एक साहूकार निकला। उसने देखा कि एक महात्मा सर्दी में बाहर बैठा अभ्यास कर रहा है। अगर इसे मकान बनवाकर दिया जाए तो पुण्य लगेगा। साहूकार ने कहा, ''महात्मा जी! आपके लिए मकान बनवा देते हैं। आप आराम से भजन-सिमरन करना।'' शेख चिल्ली ने कहा, ''जैसी तेरी मर्जी।'' साहूकार ने उसके लिए मकान बनवा दिया।

शेख चिल्ली रोजाना जंगल में जाया करता था। उसने सोचा कि मकान को मजबूत कर दें। वह रोज एक बहुत भारी लकड़ी उठाकर ले आता और उसे मकान में रख देता। लकड़ियां रखते-रखते सारा मकान लकड़ियों से भर गया। एक बार सर्दी के दिन थे, बारिश हो रही थी। शेख चिल्ली बाहर बारिश में भीग रहा था। किसी ने कहा, ''महात्मा जी! आप मकान के अंदर हो जाओ।'' शेख चिल्ली ने कहा, ''अगर मकान के अंदर जगह होती तो मैं एक और लकड़ी लाकर मकान में न रख देता।''

गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं, ''परमात्मा आपके अंदर तभी निवास करेगा जब आपके अंदर खाली जगह होगी।''

अगर हम किसी की नौकरी करते हैं तो हम उस मालिक के आगे विनती करके ही कामयाब हो सकते हैं। इसी तरह वह परमात्मा हमारा मालिक है। उसके आगे विनती करनी ही अच्छी है। उस पर हुक्म चलाने वाला कामयाब नहीं हो सकता।

कूड़ि कमाणै कुड़ो होवै नानक सिफति विगासि॥

आप कहते हैं कि कूड़ के साथ प्यार करने से कूड़ ही होना पड़ता है। अगर हम उस परमात्मा की सच्ची सिफत करें तो हमें खुशी प्राप्त होती है।

नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु॥
पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु॥

आप कहते हैं, ''अमीर आदमी गरीब की दोस्ती को समझ ही नहीं सकता कि यह मेरे साथ प्यार करता है। यह इस तरह है जैसे पानी में खींची हुई लकीर उसी समय खत्म हो जाती है।''

हमारा मन एक बच्चे की तरह है, यह रूहानियत में बहुत ही अनजान है। मर्द को औरत का प्यार और औरत को मर्द का प्यार, ये विषय-विकार हमारे अंदर इस तरह की आग पैदा कर देते हैं जो कभी भी समाप्त नहीं होती। यह पानी में खींची हुई लकीर की तरह है जो उसी समय खत्म हो जाती है। आप किसी भी विषय का स्वाद लेकर देखो! एक सेकिंड बाद ही भटकन लग जाती है। महात्मा हमें बताते हैं:

पंजे विषय भगेन्दियां, उम्र गवाई यार।
ऐ मन न रजया ते, हुण कद रजसी यार॥

होइ इआणा करे कंमु आणि न सकै रासि॥
जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि॥
चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ॥

गुरु साहब हमें प्यार से बताते हैं कि वही नौकर मान प्राप्त करता है जो अपने मालिक का हुक्म मानता है। सन्त-सतगुरु हमें बार-बार समझाते हैं कि आपका जानी दुश्मन मन है यह आपको वकील की तरह प्रेरित करके विषय-विकारों में लगाकर ऐसी अग्नि पैदा करता है जिससे आप कभी भी तृप्त नहीं हो सकते।

सन्त कहते हैं, ''आप वह काम करो जो परमात्मा और गुरु को अच्छा लगे।'' वह है भजन-सिमरन और नाम की कमाई।

हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ॥

आप कहते हैं, ''उसे तनख्वाह तो मिलनी ही है। मालिक खुश होकर इनाम भी दे देता है।''

मैं सदा ही उस परमात्मा कृपाल का धन्यवाद करता रहा हूँ कि मेरे बहुत ऊँचे भाग्य थे कि मैं उनका हुक्म मान सका। जब मानव एकता सम्मेलन होने वाला था, उस समय कुछ आदमी अपनी वाह-वाह के लिए मुझे अपने साथ ले जाना चाहते थे। उन्होंने मुझसे कहा कि वहाँ बहुत से लोग बाहर से आ रहे हैं आप हमारे साथ चलो। लेकिन मेरे गुरुदेव ने मुझे बहुत प्यार से कहा था, ''तेरा काम भजन-सिमरन करना है। मैं तुझे जहाँ बिठा गया हूँ वहाँ बैठे रहना है।''

मैंने उन लोगों से पूछा, ''क्या तुम्हें मेरे गुरुदेव ने कहा है?'' उन्होंने कहा, ''नहीं। हम ही आपको लेने के लिए आए हैं। वहाँ आपके लिए अच्छा इंतजाम करेंगे। आपकी सेवा करेंगे।'' मैंने कहा, ''मैं अपने गुरु को ऊँचा समझता हूँ, आपके साथ नहीं जा सकता।''

लालाजी (सरदार रतन सिंह) कहने लगे, ''अगर आप

अकेले नहीं जाना चाहते, तो अजीत सिंह को आपके साथ भेज देते हैं।'' मैंने कहा, ''मैं बिल्कुल नहीं जाऊंगा। चाहे कितने भी लोग लेने आ जाएं। गुरु का हुक्म अटल है। उसने जो कहा है, वह करना मेरा पहला धर्म है।''

अगर हम गुरु का कहना मान लें! गुरु के कहे मुताबिक चल पड़ें तो वह दयालु अपनी सारी बरकतें लेकर हमारे अंदर बैठ जाता है। सतसंगी को अपने हिस्से का तो मिलना ही है, लेकिन वह अपना कमाया हुआ धन भी हमें दे जाता है।

मुंशीराम, हुजूर का पुराना सतसंगी था। उससे 23 पी.एस. के बचन सिंह ने पूछा कि महाराज कृपाल गंगानगर कब आएंगे? उसने हँसकर कहा, ''महाराज कृपाल तो अजायब सिंह के बस में हैं।''

मैं लोगों की तरह हुजूर के आगे पीछे नहीं भागा, दिल्ली नहीं गया। उन्होंने मुझे जहाँ बिठाया, मैं वहीं बैठा रहा।

लेकिन प्यार की चर्चा लोगों की जुबान पर इस तरह थी कि वह परमात्मा कृपाल इसके प्यार में फँस चुका है। मेरे परिवार के लोग कहते थे कि कृपाल ने इसके सिर में जादू कर दिया है। अगर शिष्य के अंदर सच्चा प्यार, सच्ची मोहब्बत है तो वह गुरु की कमाई भी प्राप्त कर लेता है। गुरु उसे देते हुए झिझकता नहीं। वह जानता है कि यह मेरी कमाई को संभालकर रखेगा।

खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ॥
वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ॥

आप कहते हैं, ''मालिक की बराबरी करने वाला नौकर कभी भी शोभा प्राप्त नहीं कर सकता। वह कभी-कभी जूतियों की सजा भी प्राप्त कर लेता है।''

जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि॥
नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदास॥

अब आप प्यार से कहते हैं कि परमात्मा ने हमें खाने के लिए कितने मेवे दिए हैं। मुफ्त में आँख, कान, नाक, मुँह और हाथ-पैर दिए हैं। ऐसी कौन सी चीज़ है जो परमात्मा ने हमें नहीं दी? लेकिन हम नाशुक्रे हैं! हमने कभी भी परमात्मा का धन्यवाद नहीं किया कि तू हमें इतना कुछ दे रहा है!

आप कहते हैं कि परमात्मा पर हुक्म शोभा नहीं देता। उसके आगे की हुई अरदास ही रास आती है। हमारा भी फर्ज बनता है कि हम उस परमात्मा के शुक्रगुजार हों जिसने हमपर बड़ी भारी दया करके हमें अपना 'नाम' दिया है।

उस गुरु का भी धन्यवाद करें, जिसने मातलोक के विषय-विकारों को लात मारकर 'शब्द-नाम' की कमाई की। आप तर गया, हमें तारने के लिए शब्द-नाम के साथ जोड़ दिया और हमारी जिम्मेवारी उठा ली।

❁❁❁

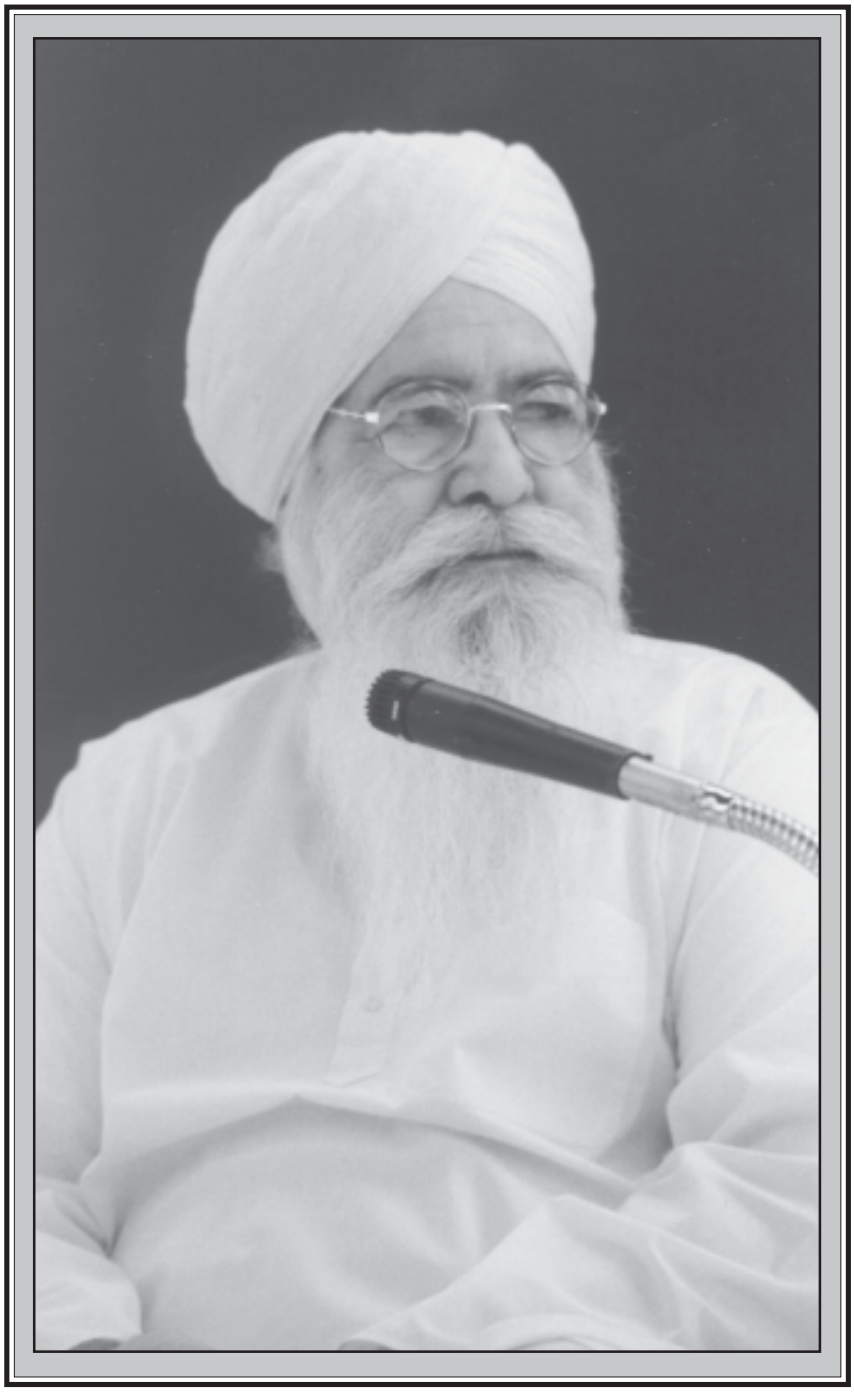

इक्कीस

परमात्मा के रंग

एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ॥
नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै॥

कुछ सेवकों ने गुरु अंगददेव जी के पास आकर एक योगी के बारे में बात की कि वह बहुत ऋद्धियां-सिद्धियां रखता है। भूत-प्रेत उसके बस में हैं। गुरु अंगददेव जी महाराज उन सेवकों को प्यार से समझाते हैं, ''प्यारेओ! ये ऋद्धियां-सिद्धियां थोड़ी सी मेहनत से ही प्राप्त हो जाती है। अगर हम मन को थोड़ा सा एकाग्र करें तो ये ऋद्धियां-सिद्धियां जाग पड़ती हैं।''

मैं बताया करता हूँ कि इनसे मुक्ति नहीं। नाम वाले के आगे ये ऋद्धियां-सिद्धियां हाथ बाँधकर खड़ी रहती हैं। नाम वाला तो इस तरफ झाँकता भी नहीं।

ऋद्धि सिद्धि नामें की दासी।

गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं, ''असली करामात तो यह है जिस पर परमात्मा अपनी दया-मेहर करे, वह इस दुनिया में भोला-भाला बनकर कुदरत के नियमों के मुताबिक अपना जीवन व्यतीत करे।''

मैं बताया करता हूँ कि ऐसी महान आत्माएं धुरधाम से बनी बनाई आती है। इनके मन में बचपन से ही एकाग्रता होती है, सुरत में शुरु से ही टिकाव होता है। संसार में ऐसी आत्माएं लोगों को डिमोंस्ट्रेशन देने के लिए कड़ी मेहनत करती हैं, ताकि हमें पता चले कि कमाई किस तरह करनी है?

भाई गुरुदास जी गुरु नानकदेव जी के बारे में बताते हैं कि उन्होंने किस तरह कठिन तपस्या की।

पहले पाई बख्श दर पिछो दे गुरु घाल कमाई।
रेत अक्क आहार कर रोड़ा दी गुरु करी बिछाई॥

जब हुजूर महाराज को बचपन में ही ऋद्धियां-सिद्धियां प्रेरित करने लगी तो आपने विनती की, ''तुम दूर ही रहो।'' आप बचपन से ही गुरु की तलाश में थे। आपने परमात्मा से कहा, ''मैं ये ऋद्धियां-सिद्धियां नहीं माँगता, मैं तेरा मिलाप माँगता हूँ।''

एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ॥
नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ॥

आप कहते हैं, ''यह कैसी नौकरी है कि हमें उस मालिक का डर ही नहीं। हममें से डर तभी जा सकता है अगर हम उस मालिक में समा जाएँ, एक हो जाएँ।''

सतगुरु अपनी आत्मा को अपने आप ही पहचान कर उसे अलग निकाल लेता है।

हम सब हैरान होते हैं कि हम कहाँ-कहाँ पैदा हुए! कोई एक-दूसरे का वाकिफ नहीं था। सन्त-सतगुरु कहाँ-कहाँ जाकर अपनी आत्माओं की खोज करते हैं। उन्हें अपने पास खींचते हैं या उनके पास चलकर जाते हैं। क्या यह किसी करामात से कम है?

सन्त-सतगुरु बताते हैं कि ऐसी महान हस्तियों में प्यार और डर दोनों बराबर-बराबर होते हैं। अगर हम गुरु से डरते हैं तो हम उसकी इज्जत करेंगे, उससे डरते हुए कोई बुरा काम नहीं करेंगे। जिससे उसकी बदनामी हो या उसे हमारी खातिर शर्मिन्दगी उठानी पड़े। जहाँ प्यार है वहाँ डर भी है।

माड़ा कुत्ता खसमें गाली।

अगर हमें सतगुरु से प्यार है तो हम उसके सौंपे हुए काम को बोझ नहीं समझेंगे। उस काम को प्यार और मोहब्बत से पूजा समझकर करेंगे।

नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''उस परिपूर्ण परमात्मा का अन्त नहीं जाना जा सकता। उसकी महिमा बेअंत है। उसके न इस किनारे का पता है न उस किनारे का पता है।''

सहजो बाई ने कहा, ''अगर मैं सारे समुद्रों की स्याही बना लूं, सारी धरती का कागज बना लूं, सारी वनस्पति की कलम बना लूं, तब भी परमात्मा की महिमा नहीं लिख सकती।''

आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार॥

आप कहते हैं कि उसने यह काम किसी दूसरे के हाथ में नहीं दिया। वह खुद ही हमारे कर्मों के मुताबिक सख्ती करवाता है, मार पड़वाता है। हमारे जैसे कर्म हैं वह हमें वैसी सजा और इनाम देता है।

इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर॥

आप कहते है, ''जिन्होंने बुरे कर्म किए होते हैं उनके गले में जंजीरे डाली जाती हैं। जिन्होंने अच्छे कर्म किए होते हैं, वे अच्छी-अच्छी घोड़ियों और कारों पर चढ़ते हैं।''

आपि कराए करे आति हउ कै सिउ करी पुकार॥

आप कहते हैं कि जीव **परमात्मा के रंग** में हँसता, रोता है। और उसके रंग में ही दुःखी, सुखी है। उसकी मौज में ही जन्मता और मरता है। हमारे कर्मों के मुताबिक ही हमें शरीर मिलता

है, हमारी बुद्धि बनती है। आप कहते हैं, ''हम किसके आगे पुकार करें! क्योंकि वह खुद ही सब जीवों का लेखा-जोखा करता है।''

नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार॥

आप कहते हैं कि जिस परमात्मा ने सब कुछ बनाया है वह सब कुछ आप ही परदे के पीछे बैठकर कर रहा है। वह जिन जीवों को अपने साथ मिलाना चाहता है, उन्हें अपना भेद देता है।

आपे भांडे साजिअनु आपे पुरणु देइ॥

आप कहते हैं, ''वह खुद ही जीव-रूपी बर्तन बनाता है। खुद ही इसमें चेतनशक्ति शब्द की किरण आत्मा डालता है।

मैं बताया करता हूँ कि जिस तरह हम इंजन की बॉडी तैयार करके उसमें कलपुर्जे लगा देते हैं, अगर इंजन को हरकत देने वाला करंट न छोड़ें तो वह इंजन कोई काम नहीं कर सकता।

इसी तरह परमात्मा ने हमारे शरीर के अंदर अपनी शक्ति आत्मा रखी हुई है। उसी शक्ति की वजह से हमारी आँख खुलती और बंद होती है। सांस आता है और जाता है, हाथ पैर हरकत करते हैं और हम बोलते-चालते हैं। जब परमात्मा उस शक्ति को अपने में मिला लेता है तो यह शरीर भी उस इंजन की बॉडी की तरह बेकार हो जाता है।

इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े॥

अब आप कहते हैं कि जिस तरह कुम्हार बर्तन बनाता है उनमें से कुछ बर्तनों में दूध या घी डाला जाता है, वे बर्तन आराम से रखे जाते हैं और कुछ बर्तन चूल्हों पर ही सड़ते रहते हैं। गुरु नानकदेव जी यह एक दुनियावी मिसाल देकर समझा रहे हैं।

इसी तरह कुछ शान्तिमय बर्तन हैं जिनमें गुरु 'शब्द' टिका देता है। वे कमाई करते हैं। हमेशा शान्त रहते हैं। तो कुछ

बेचारे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के चूल्हे पर चढ़े सारा दिन ईर्ष्या की पाँचों अग्नियों में सड़ते रहते हैं।

इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥

अब आप प्यार से कहते हैं कि जिस तरह राजा-महाराजा महलों में आराम से अच्छे बिस्तरों पर सोते हैं और उनके पहरेदार सन्तरी बाहर खड़े हुए सर्दी झेलते हैं। अगर महल में कोई चिड़ियां भी फटक जाए तो उन पहरेदारों की जान पर आ बनती है। ये दोनों ही इन्सान हैं लेकिन अपने-अपने कर्मों के मुताबिक उनकी ड्यूटियां अलग-अलग हो जाती है।

एक इस तरह के हैं जो जिंदगी में अच्छे खाने खाते हैं और दिन छिपते ही सो जाते हैं। उन्हें रात में काम की लहर जगा देती है और वे भोग भोग लेते हैं। लेकिन एक इस तरह के हैं जो रातों को जागते हैं, मेहनत करते हैं। उन्होंने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन पाँचों डाकुओं को अपने वश में किया हुआ है। अगर मन किसी चीज़ की इच्छा पैदा करता है तो वे फौरन ही अभ्यास में बैठ जाते हैं। अगर मन एक घंटे बाद अभ्यास से उठने के लिए कहता है तो वे अभ्यास में डेढ़ घन्टा लगा देते हैं। वे हमेशा ही मन को सीधा करके रखते हैं। मन के साथ संघर्ष करते हैं। प्यारेओ! मन के साथ संघर्ष करना ही अभ्यास है।

तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥

आप कहते है, ''जिस पर वह अपनी दया मेहर की नज़र करता है, उसे 'शब्द-नाम' की कमाई में लगा देता है।''

जब परमात्मा ने शाह बुल्ख बुखारा पर नज़र की तो उसने बारह साल कबीर साहब का ताना बुना। उसे जो रूखा-सूखा खाने के लिए मिला, उसने वह खाकर भजन-सिमरन किया और अपना जीवन सफल बना लिया।

जब परमात्मा ने राजा पीपा पर नजर की तो राजा पीपा और उसकी पत्नी ने रविदास जी से 'शब्द-नाम' प्राप्त किया। अपना जीवन पवित्र बनाया और परम पद प्राप्त किया।

हर सन्त के जीवनकाल में ऐसा होता है कि बहुत से आदमी 'शब्द-नाम' की कमाई में लग जाते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि हम भोग या मीट-शराब नहीं छोड़ सकते वे भी 'नाम' जपने लग जाते हैं। जिन लोगों ने उस शक्ति को अपने अंदर प्रगट कर लिया वे लोग उसके आगे झुकते हैं और उसे बेअंत कहते हैं। गुरु नानक जी कहते हैं, ''वह माँस खाने वाले को घास खिला सकता है और घास खाने वाले को माँस खाने में लगा सकता है।''

आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि॥
तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि॥

आप कहते हैं कि वह आप ही धरती, सूरज, चन्द्रमा, सितारे पैदा करता है। खुद ही इन्हें इनके ठिकाने पर टिकाकर रखता है और इनसे काम लेता है, वह सब कुछ आप ही है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

दूजा होय सो अवरो कहिए।

उसका कोई भाई-बंधु नहीं, शरीक नहीं। किसी माता ने उसे पैदा नहीं किया। वह स्वतः-सिद्ध ही प्रकाश है। वह कुल मालिक है।

किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि॥

किसके पास जाकर उसकी शिकायत करें! किससे फरियाद करें! आप कहते हैं कि वह सब कुछ आप ही आप है। ताणे में भी वह है पेटे में भी वह है। उसके आगे अरदास ही करनी पड़ती है।

वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि अगर हम उस परमात्मा गुरु की बड़ाई करना चाहें तो कर ही नहीं सकते। अगर हम यह कहें कि वह हम पर दया-मेहर कर रहा है! पता नहीं हम जैसे कितनों पर वह अपनी दया-मेहर कर रहा है!

जब इस गरीब आत्मा 'अजायब' को समझ आई तो इसने यही कहा, ''मुझे तेरे जैसा एक भी नहीं मिलना। मेरे जैसी तुझे लाखों ही मिल जाएंगी और लाखों ही तेरे दरवाजे पर हाथ जोड़कर खड़ी हैं।''

जब मैंने सच्चे दिल से उस परमात्मा कृपाल के आगे फरियाद की, ''मेरी बेड़ी घुम्मण-घेरियों में फँसी हुई है। तेरे जैसा कोई मल्लाह नहीं मिलता, तू रहमत का समुद्र है, तू मेहर करे तो इस गरीब आत्मा को घुम्मण-घेरियों में से निकालकर ले जा सकता है। मुझमें ताकत नहीं कि मैं तेरे सहारे के बिना पार हो जाऊँ।'' गुरु मल्लाह है। वह ले जाने के लिए हमेशा तैयार रहता है।

मैंने कल भी सतसंग में यही कहा था। जो मन में होता है, वही उगता है। मुँह का कहा हवा की तरह होता है।

दुनिया को दुनिया के सामान के नशे हैं कि मैं आलम-फाजल हूँ, मेरी इतनी जायदाद है; मैं बाहुबल में इतना तगड़ा हूँ। मेरे जैसा कौन है? अगर परमात्मा ने आपको सब कुछ दिया है, आप फिर भी आज़ज़ी नम्रता दिखाएं तो वह परवान हैं।

कोई महान आत्मा ही दुनिया की सब सहूलियतें छोड़कर गुरु के सहारे हो सकती है। यह कह लेना तो आसान है लेकिन इस पर चलना बहुत मुश्किल है; गुरुमत में शिष्य को चालीस दिन के बच्चे जैसा बनना पड़ता है।

सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि॥

वह करता है, कादर है जीवों को पैदा करता और पालता है। चाहे कोई कहीं भी बैठा है वह सबको रिज़क पहुँचाता है। पत्थर में, जल में जिसकी जैसी खुराक है उसे देता है।

हम देखते ही हैं कि इन्सान कितना सामान इकट्ठा करता है लेकिन फिर भी भूखा है। अगर इसके पास पचास रुपये हैं तो इसे सौ रुपये की लालसा लग जाती है। अगर घोड़ी है तो कार की लालसा लग जाती है। अगर छोटा व्यापार है तो बड़े व्यापार की लालसा लग जाती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''भूखे की भूख खत्म नहीं होती। उसे चाहे सारी दुनिया का धन-दौलत मिल जाए, वह फिर भी और मांगेगा।''

कभी पक्षियों की तरफ देखो! लोग उन्हें चोगा डालते हैं वे जरूरत के मुताबिक खाकर उड़ जाते हैं, अगले दिन की चिन्ता नहीं करते। वे परमात्मा को अपनी-अपनी बोली में याद करते हैं। फरीद साहब कहते हैं:

हौं बलिहारी पंखियां, जंगल जिन्ना वास।
कंकर चुगन थल वसन, ते रब न छड्डन पास॥

गुरु अमरदेव जी के जीवन काल में ऐसा होता था कि जो कोई लंगर के समय आए, वह पहले लंगर खाए, बाद में दर्शन करे। उस परमात्मा के आसरे शाम को बर्तन उल्टे करके रख दिए जाते थे कि जिस परमात्मा ने आज दिया है, वह कल भी देगा।

साई कार कमावणी धुरि छोडी तिंनै पाइ॥

जीव वही कारोबार करता है जो परमात्मा ने उसकी किस्मत में लिख दिया है। नाम जपने वाले को नाम जपना है और बुरी तरफ लगने वाले को बुरी तरफ ही लगना है। परमात्मा की

किसी के साथ दुश्मनी नहीं। हमारी बुद्धि पिछले कर्मों के अनुसार ही बनती है।

अच्छे कर्म करने से अच्छी और बुरे कर्म करने से बुरी बुद्धि बनती है; उसके मुताबिक ही हम आगे जन्म लेकर कर्म करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

ना को मूर्ख, ना को स्याना, वरते सब कुछ तेरा भाणां।

इसका मतलब यह नहीं कि हम हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएं, कि जब परमात्मा हमें अच्छी तरफ लगने के लिए कहेगा हम तभी लगेंगे। प्यारेओ! परमात्मा आपको बुरी तरफ प्रेरित नहीं करता। लेकिन जो हमारे बस में है हमें वह करना चाहिए।

एक दिन मोहम्मद साहब ने सतसंग मे कहा, ''सब कुछ अल्लाह ताला ही करता है।'' उनके ऊँटो की सेवा करने वाले सेवक ने इस बात को पकड़ लिया और कहा, ''जब अल्लाह ताला ही सब कुछ करता है तो हमें परेशान होने की क्या जरूरत है?'' मोहम्मद साहब ने कहा, ''तू इन ऊँटो की सेवा और रखवाली कर अगर फिर कोई इन्हें ले जाता है तो अल्लाह ताला का भाणां।''

जे उद्यम करेन्दया आवे हार ते जाणिंए भाणां करतार।

सेवक का काम अपने आपको सुधारना और अभ्यास में लगना है। दया करना गुरु का काम है।

शब्द खुलेगा गुरु मेहर से खेंचे सुरत गुरु बलवान।

गुरु अपनी ड्यूटी से पीछे नहीं हटता। अगर हम रोज अभ्यास करते हैं तो वह हमारी सुरत को ऊपर के मंडलों में ले जाता है।

नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ॥
सो करे जि तिसै रजाइ॥ सो करे जि तिसै रजाइ॥

आप कहते हैं कि वह परमात्मा एक है। आत्मा परमात्मा की अंश है। ये उसी से बिछड़ी है और उसी में समाकर शान्ति प्राप्त कर सकती है। परमात्मा वही करता है जो उसकी रज़ा में है। हम उसकी रज़ा तभी प्राप्त कर सकते हैं अगर हम अपना जीवन उसके साँचे में ढालें, शब्द-नाम की कमाई करें।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने इसमें किसी समाज की निन्दा नहीं की। महात्मा न खुद निन्दा करते हैं और न ही अपने सेवकों को निन्दा करने की इजाजत देते हैं। आपने उस समय के समाज वालों को जो रीति-रिवाज और कर्मकांड करते हुए देखा वही इसमें बयान किया है।

सन्त-महात्मा हमें समाजों से बाँधने के लिए नहीं बल्कि आजाद करने के लिए आते हैं। महात्मा बताते हैं कि परमात्मा ने कोई समाज नहीं बनाया। उन्होंने यही बात मुख्य रखी है कि 'शब्द-नाम' की कमाई के बिना परमात्मा से कोई नहीं मिल सकता। सुरत-शब्द का अभ्यासी संसार में इस तरह रहता है जैसे कमल पानी के अंदर रहता है लेकिन उस पर पानी का कोई असर नहीं होता।

सतगुरु अपने स्टाफ को साथ ही लेकर आता है कि किससे क्या काम लेना है, किस वक्त लेना है? वह सब जानता है। भाग्यशाली आत्माएं ही उस महान सतगुरु को पहचान सकती हैं।

जिस आशा से ये सतसंग किए गए हैं सतसंगी उसी भावना को लेकर इन सतसंगों से फायदा उठाएँगे।

❁❁❁